॥ श्रीहरिः ॥

पूज्यपादआचार्यरत्नगोस्वामिकुलकौस्तुभ

श्री १०८ श्रीगोकुलनाथजीमहाराजश्री

की आज्ञासूं

बसंत के कीर्तन

प्रथम भाग.

हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकनसूं संग्रह करके जगायवेसूं लेके पोढायवे तकके अलग अलग, ताल सहित.

—सुदामापुरीस्थ—

परमभगवदीय कीर्तनियाजी ठा. नारायणदास लक्ष्मीदास

की अपूर्व हार्दिक सहायतासूं

—: खंभालीआस्थ :—

ठा० त्रीकमदास चकुभाई ने प्रकट कीनो है.

२७-२९ कोलभाट लेन बम्बई नं. २

न्योछावर रु. १-०-०

यह पुस्तक श्री अच्युत मुद्रणालय, २३३ कालबादेवी रोड, बम्बई में छपी.

पं० कृष्णकुमार शर्मा
पो० रतनगढ़
ज़ि० बिजनौर (यू० पी०)

पुस्तक मिलने के पते—

(१) पं० कृष्णकुमार शर्मा, पो० रतनगढ़, जि० बिजनौर (यू.पी.)
(२) हिन्दी भवन, अनारकली, लाहौर
(३) मेहरचन्द लक्ष्मणदास, सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर

मुद्रक—
श्री देवचन्द्र विशारद
हिन्दी भवन प्रेस
लाहौर

श्रीहरिःशरणम् ।

प्रस्तावना.

पुष्टिमार्गनां भाषा-साहित्यमां प्राचीन व्रजभाषानां कीर्तनो अति श्रेष्ठ छे. कारण के ते कीर्तन-कारोने साक्षात् प्रभुनी लीलानां जे दर्शन थतां तेने तेओ कीर्तनमां वर्णवता हता. अतएव कीर्तनोमां जे आनन्दनी नदी वहे छे ते अन्यत्र नथी वहेती. मन्दिरोनी अंदर समय समयनां अने ते पण ऋतु अनुसार कीर्तनो गवाय छे. यदि आपणे तेने ध्यानपूर्वक सांभळीशुं तो प्रभुनी लीलानां झांखी थया विना नहि रहे. सम्प्रदायमां एवी प्रणाली छे के प्रभुनी सन्निधिमां " अष्ट छाप " नांज कीर्तनो थई शके. अन्यनां नहि. तेनुं कारण ए छे के कीर्तनोमां कपोल कल्पनाने स्थान नथी पण प्रभुनी साक्षात् लीला-ओनुं तादृश वर्णनज छे. अतः जे महानुभावोने प्रभुनो साक्षात्कार हतो अने साक्षात् लीलानां दर्शन करता हता, ते महानुभावोनांज रचित कीर्तनो प्रभुनां दर्शन वेळा गाई शकाय. तेथी प्रभुनी सन्निधिमां अष्टसखाओथी इतर पण केटलाक महानुभावोनां कीर्तनो गवाय छे. भ० त्रिकमदास चकुभाई, भ० नारा-यणदास लक्ष्मीदास कीर्तनीयाजीनां संग्रहमांथी 'अंग सहित अष्टसखा' नी नोंध उतारी मने देखाडी. तेनुं अवलोकन करतां तेनां प्रमाणत्वनो अभाव मने प्रतीत थाय छे. कारण के तेवो उल्लेख अन्यत्र क्यांए जोवामां नथी आव्यो. 'अष्ट छाप' परत्वे (मिश्रबंधु विनोद) नां प्रथमभागनां संक्षिप्त इतिहास प्रकरणमां उल्लेख छे के.

" श्रीसूरदासजी महाप्रभुवल्लभाचार्यके शिष्य थे। इनके अतिरिक्त परमा-नन्ददास कुंभनदासजी महाप्रभुजी के शिष्योंमें नामी कवि हुए हैं। चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, नन्ददास और गोविन्दस्वामी महाप्रभुजीके पुत्र गोस्वामी श्रीविठ्ठल-नाथजीके शिष्योंमें मुख्य थे। इन्हीं आठोंको मिलाकर गोस्वामीजीने 'अष्टछाप' स्थापित की, जिसपर सूरदासजी प्रसन्न होकर कहने लगे 'थापि गोसांई करी मेरी आठ मध्यें छाप'

[पृ. ११०]

'वसन्त के कीर्तन' शीर्षकनी आ पुस्तकमां वसन्त ऋतु सम्बन्धनां प्रायः सर्व कीर्तनोनो संग्रह करी तेने भिन्न भिन्न मुद्रित कर्या छे. भ० त्रिकमदासे आ पुस्तकमां केटलाक अप्राप्य; अप्रकट कीर्त-नोने पण शोध खोळ करी प्रकट कर्या छे. एकन्दरे २३५ कीर्तनोनो आ संग्रह थयो छे. तेना रचयिता मुख्यत्वे श्री 'रसिक श्रीसूरदासजी अनुमानतः रचनाकाळ (वि. सं. १५६० थी १६२०) श्रीचतुर्भुजदासजी (अनुमानतः र. का. वि. सं. १६२५) कुंभनदासजी (अनुमानतः र. का. वि. सं. १६०६) छीतस्वामी (अनुमानतः र. का. वि. सं. १६१३) नन्ददासजी (अनुमानतः र. का. वि. सं. १६२३) परमानन्ददासजी (अनुमानतः र. का. वि. सं. १६०६) आदि छे. तेमज ऋषिकेश नामना कोई

कविना पण कीर्तनो छे. आ ऋषिकेश कोण ? तेनुं ऐतिह्य स्पष्ट मळतुं नथी. मिश्रबन्धुओए 'हरिकेश' नामना कविनो उल्लेख करी तेनो कविता-रचनाकाळ वि. सं. १७८८ बताव्यो छे. कदाच हरिकेशनो अपभ्रंश ऋषिकेश थई गयो होय तो ते बनवा जोग छे. तेवी रीते माधोदासनांए कीर्तनो छे. ते कया माधोदास ? ते पण संदिग्ध छे. मिश्रबंधुओ तेने माधवदास कायस्थ नागोरवाला तरीके उल्लेख करी तेनो कविता-रचना काळ वि. सं. १८३७ कहे छे, ते कदाचित माधोदास होय एम अनुमान करी शकाय छे. तेम कल्याण (अ. र. का. वि. सं. १८४५) [1]ब्रजपति (अ. र. का. वि. सं. १७३२) जगतराय (अ. र. का. वि. सं. १७२१) जगन्नाथ (अनुमानतः र. का. वि. सं. १७००) [2]मुरलीदास भट्ट (अ. र. का. वि. सं. १८३७) धोंधी कलावत—जे एक मुसलमान भक्त हता—राजा आसकरण प्रभृतिनां वसन्तने लगतां प्रभुनी वासन्तिक लीलानुं वर्णन करता कीर्तनो समय समय पर बोलवाना घणीज सुंदर शैलीथी आमां गुंथ्या छे. पुष्टिमार्गीय वैष्णवोने माटे आ कीर्तन-पुस्तक बहु आशीर्वादात्मक छे. केटलाए वर्षोथी वैष्णवो वसन्तना कीर्तनोना पुस्तक माटे तलसता हता. भ० त्रिकमदासे आ पुस्तकने आवा नयनाभिराम स्वरूपमां प्रकट कर्युं तेथी तेओ अनेक धन्यवादने पात्र छे. बेशक, तेमणे कीर्तन-साहित्यमां आ पुस्तक छपावी खूंचती खोट पूर्ण करी छे. वसन्तना खण्डितानुं कीर्तन 'सूर' केवुं सरस गाय छे ?

सांची कहौ मनमोहन मोसो तौं खेलौं तुम सँग होरी ।
आजकी रेनि कहाँ रहे मोहन ! कहाँ करी बर जोरी ॥
मुखपें पीक पीठि पै कंकन, हिये हार बिनु डोरी ।
जियमें औरु उपर कछु औरे चाल चलत कछु ओरी ॥
मोहि बतावति मोहन नागर काह मोहि जानति भोरी ।
भोर भये आये हो मोहन ! बात कहति कछु जोरी ॥
सूरदास प्रभु एसी न कीजे, आइ मिलो काह चोरी ।
मन मानें त्यों करति नन्दसुत, अब आइ है होरी ॥

[मंगलाके पद पृ. ८-९]

---

१ कीर्तनोमां 'व्रजपति' छाप छे. पण मिश्रबन्धु विनोदमां **व्रजनाथ ब्राह्मण** एम एक स्थळे उल्लेख छे. तथा तेना रचनाकाळने ध्यानमां लेतां कदाच व्रजकीर्तनोमां 'व्रजपति छाप मूकी होय ते संभवी शके छे.

२ मुरलीदास नामना कविनुं एकज कीर्तन आमां संग्रहित छे. तेनुं ऐतिह्य तपासतां मिश्रबन्धु विनोदना द्वितीय विभागमां 'मुरलीधर भट्ट' ना नामनो तथा रचना-काळ वि० नो उल्लेख छे. कदाच तेओए कीर्तनमां 'मुरलीदास' छाप मूकी होय तो कही न शकाय.

चित्रकार अत्युत्तम चित्र त्यारेज बनावी शकेछे के ज्यारे ते कोई दिव्य-दृश्य जोतो होय. तेवीज रीते कवि छे. कवि पण वर्णन त्यारेज सुन्दर करी शके छे के ज्यारे तेनां नयनोमां कोई सुन्दर पदार्थ आवे. सूर-प्रज्ञाचक्षु हता तथापि तेओ प्रभुनां सर्वांगनुं दर्शन करी शकता हता. तेमनां चर्म-चक्षु न्होता पण दिव्य-चक्षु हता. दिव्य चक्षुओथी तेओ जे दर्शन करता तेने कीर्तनमां व्यक्त करता हता. अतएव तेवा स्वरुपानुभव करनारा कीर्तनकारोना कीर्तनमां माधुर्यनी शी न्यून्यता होय ? रसगंगाधरकार माधुर्यनुं लक्षण लखतां कहे छे के—'संयोगपरहस्वातिरिक्तवर्णघटितत्वे सति पृथक् पदत्वं माधुर्यम ।' भावार्थ एटलो छे के कोमल सरस पदमां माधुर्य रहे छे. उक्तपद तेवुंज छे. अष्टसखाओनी वाणीमा वस्तुतः आवुंज माधुर्य निर्झरी रह्युं छे. तेनो रसास्वाद एकाग्रताथी प्रभुना दर्शनवेळा तेनुं गान करवामांज आवे छे. प्रभुने अन्य संगीत प्रिय नथी. प्रभुने तो व्रजभाषाना कीर्तनोज मुख्यत्वे बहु प्रिय छे. एटलेज दर्शन-वखते संस्कृत अष्टपदी आदि कीर्तनोनी अपेक्षा व्रजभाषानांज कीर्तनो अधिक गवायछे. कीर्तनो ए प्रभुनुं कथामृत छे. भक्तो प्रभु-परोक्षमां आवा कीर्तनो करी कथामृतनुं पान करी जीवी रह्या छे. श्रीसुबोधिनीकार 'तवकथामृतं तप्तजीवनम' ए श्लोकनी सुबोधिनीजीमां लखे छे के—

नेदं जीवनमस्मत्कृतिसाध्यम् । किन्तुतवकथा विरहेण प्राणानां गमने प्रतिबन्धं करोति । कथायाः पुनः यथा तव सामर्थ्यं तथा । सापि षड्गुणात्मिका मोक्षदायिनी परमानन्दरूपात्............। तव कथा अमृतमिव । अमृतं भगवद्रसात्मकम् । सर्वेषां मरणादिनिवर्तकं यद्रूपं तदमृतशब्देनोच्यते ।

(द. पृ. ता. फ. प्र. अ. २८ श्लो. ९ पं. ७-१० पृ. ९४)

अर्थात् आ जीवन अमाराथी कृतिसाध्य नथी परन्तु तारी कथा, विरहमां प्राणोने जवा नथी देती. कथा तारा जेवीज सामर्थ्य सम्पन्न छे. जेम तुं षड्गुण युक्त छे. तेम तारी कथा पण तेवीज छे. मोक्षदात्री परमानन्द रूपा छे. वस्तुतः तारी कथा पीयूष रूपा छे. अमृत भगवद्रसात्मक छे. सर्वनुं मरणादि निवर्तक जे रूप ते अमृत शब्दथी कहेवाय छे. भक्तो प्रभुनो विरह एक क्षण पण सही नथी शकता. पण प्रभुना कथामृतना पानथीज विरहने सहीने जीवी रह्या छे. कीर्तनोने लीधेज उत्कृष्ट भक्तो जीवन टकावी शके छे. माटे वैष्णवजनो आ पुस्तकमां संकलित कीर्तनोने शुद्ध रीते ताल स्वरथी प्रभु-सन्निधिमां गाई तेना अर्थनुं ए अनुसंधान करी भजनानन्दनो दिव्य-प्रमोद लूटशे. एवी आशा छे. इत्यलम ॥

प्रतिपदा
व्रज माघ कृष्ण सं. १९९०

गो० व्र० वि० महाराज.

टीपः—आ लेखमां कीर्तनकारोनां रचनाकाळ-संवतो 'मिश्रबन्धु-विनोद' प्रथम भाग अने द्वितीय भागमांथी उतार्या छे. लेखक.

श्रीहरिः ।

विजयते श्रीबालकृष्णः प्रभुः ।

प्रकाशकनुं निवेदन

सेवा भावीओने मोटा अक्षरना मजबूत कागळना कीर्तनोनां पुस्तकोनां अभावे पडती मुश्केली मारे काने आवी, के तरत ते अपूर्णता पूर्ण करवा पूज्यपाद गोस्वामी कुलकौस्तुभ श्रीमद् गोकुलनाथजी महाराजश्रीए आज्ञा आपी तेमज ते विभागवार प्रकट करवा आदेश थयो, तदनुसार आ पुस्तक प्रकट करी तेओश्रीनांज करकमलोमां अर्पण करी कृतार्थ थाउं छुं.

द्रव्यसहायताः–सम्प्रदायना साहित्यना प्रकाशनना माटे गोलोकवासी शेठ काराभाई मुलजीए खास अणुभाष्यना गुर्जर भाषान्तर माटे रु.१०००) एकहजार आपेल, उक्त पुस्तकना वेचाणपैकी बचेली रु.४५०) साडाचारसोनी रकम, तेओना वील अने कोडीसीलना पावरनी अरज सामे केवीअट नोंधावतां जेनी मांडवाल थता मळेली रकममांथी खरच बाद करतां प्रकाशकने फाळे आवेली आशरे रु.२६००) बेहजार छसोनी रकम, रु.३५०) त्रणसो पचास गो. वा. श्रीमती टमुबाईना वीलनी रुए ट्रस्टीओ, शेठो विठ्ठलदास दामोदर गोवींदजी, जगजीवनदास गोरधनदास ठाकरसी, मथुरादास हरिभाई, जमनादास धरमसी आसु, सुन्दरदास धरमसी दलाल अने प्रकाशके प्रकाशन माटे धीरेली रकम रु. २५) पचीस, खांडवाळा शेठ छगनलाल रतनजीए आपेल छे. उक्त सहायतामांथी आ ग्रन्थ प्रकट करवामां आव्यो छे अने बीजा प्रकट थशे. तेमज हस्तलिखित पुस्तको अने छापेला पुस्तको आपनारा जुदा जुदा मन्दिराधीशो, गोस्वामी बालको अने वैष्णवोनो पुस्तको आप्या बदल तेमज बीजी सहायता आप्याबद्दल आभार मानुं छुं.

हस्तलिखित पुस्तक आपनाराओ, श्रीगोकुलाधीशजीनुं मन्दिर, १ पुस्तक. श्रीलालजीनुं मन्दिर, ३ पु. श्रीलालबावानुं मन्दिर, १ पु. श्री मोटुं मन्दिर ४ पु. जेमां शेठ भगवानदास दुल्लभदास स्टेशनरनी विधवा तरफथी भेट आवेला बे पुस्तकोनो समावेश थाय छे.

छुटकगीआ केशवजी हरजी, भट्ट सामजी वंदरावन, मानाबाई, रामकुंवरबाई, कीर्तनिया ना. ल. नुं साहित्य, कीर्तनिया जेठाभाईनु ठ. सुन्दरदास वालजी चीखलीने कबजेथी, शीगारवाळा वगुलाल, केसवजीभाइए गोधरानी श्रीआचार्यचरणनी बेठकने भेट करेलु पुस्तक, गो. वा. कीर्तनिया नारणदास गोवींदजीनु विष्णुदासने कबजेथी मळेलुं साहित्य, श्रीनाथजीना सिगार साथे, वि. स. १९८७ ना वर्षमां अंगीकार करेला कीर्तनो कीर्तनिया हरनाथे लखेल, शेठ रणछोडदास वरजीवनदास पासेथी प्राप्त थएलुं.

पुस्तक, लेख वगेरे लखवामां प्रुफ वांचवामां सहायता आपनाराओः—कच्छ मांडवीवाळा कीरतनिआ रणछोडदास लाधाभाई, अधिकारीजी देवराम जीणाभाई–वेरावळ, पुरुषोत्तमदास सुरदास–जामनगर, द्वारकादास जेराम मुंबई, पोपटभाई–मासीक गोकुलाधीशजीना सद्दनकीर्तनीआ, देवकीनन्दनजी, श्रीलालजीना किरतनिआ कनैयालाल, गिरिधरदास ज. शाह बुकसेलर कुम्भारटुकडानी हवेलीना मुख्याजी अने श्री अच्युत प्रेसना मालिकनो किफायत भावे पुस्तक छापी आप्याबद्दल अने पुस्तक अने कीर्तन संशोधननुं कार्य मथुरावासी पण्डित जवाहिरलाले जूज रकम लई करी आप्या बद्दल आभार मानुं छुं.

दासानुदास–

त्रीकमदास चकुभाई ना

भगवद्स्मरण.

पोष कृष्ण पंचमी रवीवार वि. सं. १९९०
बम्बई.

श्रीहरिः

बसंत-अनुक्रमणिका अरु विषय-सूचि.

बीरीके पद ९

मान.

अष्टपदी ५

मान.

चालु.

बसंत पंचमी के पद १९

पाग चन्द्रिका

बधाई के पद ७

कुलह भोजन के पद २

क्रमांक ताल—पृष्ठ.

टिपारे के पद ३

निरत के पद २६

क्रमांक ताल—पृष्ठ.

पाग के पद ३.

पाग चंद्रिका २.

फूल के सिंगार १

मुकुट १

रास १

सहेरा २

मान १

दो, तीन तुकके पद संपूर्ण.

आड चोताल १

चौताल या ध्रुपद ३

धीरी १

तिताल २

निरत १

क्रमांक		ताल–पृष्ठ.

धमार ३४

निरत १

बीरी १

क्रमांक		ताल–पृष्ठ.

मान १

निरत २

निरत ३

भोग सरै मुकुट १

मान आड चोताल ५

पीत बस्त्र मान १

मान तिताल २

मान चोताल ४

धमार १४ अष्टपदी १

पोढायबे के ७ ताल धमार.

आश्रय के १

असीस के १

छापसूचि.

कोन सी छाप के कितने पद अरु वे कहां है ?
प्रथम अंक संख्या सूचक अरु शेष क्रमांक है.

बसंतके कीर्तन

खे. साखी, जगायवेके पद (राग—बसंत)

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥साखी॥ आई ऋतु-बसंत की गोपीन किये सिंगार॥ कुमकुम बरनी राधिका सो निरखति नंदकुमार ॥ १ ॥ आई ऋतु-बसंत की मौरे सब बनराइ ॥ एकु न फूलै केतकी औ फूली बनजाइ ॥ २ ॥ श्री गिरि-राजधरनधीर लाड़िलौ ललन-बर गाइए ॥ श्री नव-नीत प्रिय लाडिलौ ललन-बर गाइए श्री मदन-मोहन पिय लाडिलौ ललन-बर गाइए ॥३॥ कुंज कुंज क्रीड़ा करैं, राजत रुप-नरेस ॥ रसिक, रसीलौ, रसभर्‍यौ, राजत श्रीमथुरेस ॥ ४ ॥ श्रीगिरीराज-धरनधीर लाडिलौ ललन बर गाइए ॥ 卐 ॥ अथ जगायवेके पद॥ खेलत बसंत निस पियसँग जागी॥ सखी-वृंद गोकुल की सीमा गिरिधर पिय पद-रज अनुरागी ॥ १ ॥ नवल-निकुंज में गुंजत मधुप,

कीर, पिक, विविध सुगंध छींट तन लागी ॥ "कृष्ण-दास" स्वामिनी जुवति-जूथ चूरामनि रिझवत प्रान पति राधा बड-भागी ॥ २ ॥ १ ॥ 卐 ॥ जागि हो लाल, गुपाल, गिरिबरधरन, सरस ऋतुराज बसंत आयौ ॥ फुले द्रुमवेली, फल, फूल, बौरे, अंब, मधुप, कोकिला कीर सैन लायौ ॥१॥ जावौ खेलन, सबै ग्वाल टेरत द्वार, खाऊ भोजन मधु, घृत, मिलायौ ॥ सखी-जूथन लीयैं आई है राधिका मच्यौ गहगड-राग रंग छायौ ॥२॥ सुनति मृदु-बचन, उठे चौंक नंदलाल, कर लीयैं पिचकाई सुबल बुलायौ ॥ निरखि मुख, हरखि हियैं, वारि तन मन प्रान, सूर येहि मिसहि गिरिधर जगायौ ॥ ३ ॥ २ ॥ 卐 ॥ प्रात समैं गिरिधरनलाल कौं करति प्रबोध जसोदा मैया ॥ जागौ लाल, चिरैयाँ बोलीं, सुंदर मेरे कुँवर कन्हैया ॥ १ ॥ हलधर सँग लैहौ मनमोहन, खेलन जाउ

ब्रिंदाबन धाम ॥ ऋतु बसंत प्रफुलित अति देखियत सुंदर हे कालिंदी ठाम ॥२॥ जननि-बचन सुनति मनमोहन, आनँद उर न समाइ ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु बेगि उठे जब, जननि-जसोदा कंठ लगाइ ॥ ३ ॥ ॥ ३ 卐 ॥ कलेऊके पद ॥ करौ कलेऊ कहति जसौदा, सुंदर मेरे गिरिधरलाल ॥ दूध, दही, पकवान, मिठाई, माखन, मिसिरी, परम-रसाल ॥१॥ पाछैं खेलनि जाऊ लड़ैते, संग लेहु सब ब्रज के बाल ॥ चोवा, चंदन, अगर, कुंमकुमा, फैंटन भरौ अबीर गुलाल ॥२॥ कीयौ कलेऊ मन कौ भायौ, हलधर संग सकल मिलि ग्वाल ॥ कीयौ बिचार फागु-खेलनि कौ, 'परमानँद' प्रभु नैन-बिसाल ॥३॥ १ ।卐। करौ कलेऊ मदन-गुपाल ॥ मधु, मेवा, पकवान, मिठाई, भरि-भरि राखे कंचनथाल ॥१॥ माँखन, मिसिरी, सद्य-जम्यौ-दधि, औंट्यौ दूध, अरु सरस

मलाई ॥ आप हु खाऔ ग्वालन सँग लैकैं, पाछैं खेलौ सघन-बन जाई ॥२॥ करत कलेऊ रामकृष्ण दोउ, औरहु संग लये सब ग्वाल ॥ करहि बात फागु-खेलनि की, 'कृष्ण दास' मनमोहन लाल॥३॥ ॥ २ ॥ 卐 ॥ मंगला के पद ॥ ताल ध्रुपद ॥ आज कछू देखियत ओर ही वानिक प्यारी तिलक आधे मोती मरगजी मंग ॥ रसिक कुँवर संग अखारे जागी सजनी अधरसुख निसि बजावति उपंग ॥१॥ नव निकुंज रंग मंडप में नृत्य भूमि साजि सेज सुरंग ॥ तापै बिबिध कल कूजित सखी सुनाति स्रवन बन थकित कुरंग ॥ २ ॥ 'कृष्ण दास प्रभु नटवर' नागर रचति नयन रति पति ब्रत भंग ॥ मोहन लाल गोवरधन धारी मोहि मिलन चलि नृत्यक अनंग ॥ ३ ॥ १ ॥ 卐 ॥ ताल तिताल ॥ ऐसे रीऊे भीऊे आए री लाल गावत हे धमारि ॥ होंजु गई री

भोर व्रिंदाबन भरि लिए अकवारि ॥ १ ॥ गुथरी अलक बदनपर बिथुरी निज करसों अली आप सकोरी ॥ हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी मिली हे विरह हिरदैरी ॥ २ ॥ २ ॥ 卐 ॥ ताल धमार ॥ खेलति सरस बसंत स्याम बृषभानु कें आँए देखैं री ॥ चलौं सिरावन नैन सखी री जनम सुफल करि लेखैं री ॥ १ ॥ सौंधे भीने केस साँवरो मदन मनोहर भेखैं री ॥ कृपावंत रस नैन चूहचूहे कछुक उठत मुख रेखैं री ॥ २ ॥ व्रज बनिता बनि बनि आँई सब स्यामसुँदर मुख पेखैं री ॥ कहि भगवान हित राम राई प्यारी राधाकौ भाग बिसेखैं री ॥ ३ ॥ ३ ॥ 卐 ॥ गोबरधन की सिखर चारु पै फूली नव माधवी जाई ॥ मुकलित फल, दल, सघन मंजरी, सुमन सु सोभा बहुत हि भाइ ॥ १ ॥ कुस-मित कुंज पुंज द्रुमबेली निरझर झरति अनेक ठाइ ॥

'छीत स्वामि' ब्रज जुवति जूथ में बिहरत हैं गोकुल के राइ ॥ २ ॥ ४ ॥ 卐 ॥ तेरे नैन उनीदे तीन पहर जागे काहे कौं सोबत अब पाछली निसा ॥ कछु अलसत बीच स्रम लागत श्रीपति न जाइ अधिक रिसा ॥१॥ गिरिधर पिय के वदन सुधा रस पान करति नाहि जात तृसा ॥ एते कहति होइ जिनि प्रगटित रति रस रिपु रबि इंद्र दिसा ॥२॥ तुब मुख जोति निरखति उडपति मगन होत निरखि जलद खिसा ॥ 'कृष्ण दास' बलि बलि बैभब की नब निकुंज ग्रह मिलत निसा ॥ ३ ॥ ५ ॥ देखियतु (लखियतु) लाल लाल दृग डोरे ॥ काके सँग खेले बसंत करि निहोरे ॥ १ ॥ सजलताई प्रगट मनौं कुँकुम रसबोरे ॥ अरुनताई भई गुलाल, बंदन सित छोरे ॥ २ ॥ अंजन छबि लागत मनौं चौवा छबि चोरे ॥ बरुनी मानौ नूतन पल्लव अघर भये सिधोरे ॥ ३ ॥ कबहू रस

मत्त नाचति दोउ कटाच्छ कोरे ॥ गान सुरति भई मानौं बिबिध तान तोरे ॥४॥ देखियतु अति सिथ-लताई मांऊ ऊक ऊरे ॥ काहे कौं कहति कछू जानै मन मोरे ॥ ५ ॥ सनमुख व्है कबहू मुख फेरि जात लजोरे॥ "रसिक पीतम" मेरैं तुम आए काके भोरे ॥ ६ ॥ ६ ॥ 卐 ॥ फूली फूली डोलति कोन भाइ ॥ आँन भाँति बचन रचन आँन भाँति भूमि धरत पाइ ॥ १ ॥ जानत हों तेरे मन की सजनी, उर आनंद और हियैं चाँई ॥ सुनि 'कृष्ण दास' अँग अंग फूली मानौं मिले गिरिधरनि राइ ॥ २ ॥ ७ ॥ 卐 ॥ सखी ब्रज फूले विविध बसंत॥ फूले मोर, कमुद, सरसी अरु, फूले अलि, जल जंत ॥ १ ॥ फूले द्रूम बेली फूले द्विज गावत गुन-वंत ॥ 'ब्रजाधीस' जन फुले लखि अति सुख फूले मिलि हरि कंत ॥ २ ॥ ८ ॥ 卐 ॥ सहज-प्रीति

गोपाले भावै॥ मुख देखैं, सुख होइ सखीरी, पीतम नैन सौं नैन मिलावै ॥१॥ सहज प्रीति कमल अरु भानैं सहज-प्रीति कमोदिनि चंदे ॥ सहज-प्रीति कोकिला बसंते, सहज-प्रीति राधा नँदनंदे ॥२॥ सहज-प्रीति चातक अरु स्वांते, सहज-प्रीति धरनी-जलधारे॥ मन, क्रम, बचन, दास 'परमानँद' सहज प्रीति कृष्ण अवतारे ॥३॥९॥卐॥ साँची कहौ मनमोहन मोसौं तो खेलौं तुम सँग होरी॥ आजकी रेनि कहाँ रहे मोहन, कहाँ करी बरजोरी ॥१॥ मुखपैं पीक, पीठिपैं, कंकन हियें हार बिनु डोरी॥ जिय में औरु उपर कछु औरै चाल चलति कछु ओरी ॥२॥ मोहि बतावति मोहन नागर काह मोहि जानति भोरी ॥ भोर भयें आये हों मोहन बात कहति कछु जोरी॥३॥ 'सूरदास' प्रभु एसी न कीजे आइ मिलो काह चोरी ॥ मन मानैं त्यों करति

नंद सुत अब आई हैं होरी ॥ ४ ॥ १० ॥ 卐 ॥
आगमके पद ॥ ताल चरचरि ॥ देखिरी देखि
ऋतुराज आगम सखी सकल बन फूल आनंद
छायो ॥ ताल कदली धुजा उमगि अति फरहरे
संग सब आपुनी फौज लायो ॥ १ ॥ कोकिला
कीर गुनगान आगें करें भ्रंग भेरी लीए संग
आयो ॥ घुरत निसान घनघोर मोरन कीयो करत
पेक सब्द गज अति सुहायो ॥ २ ॥ फिरत तहां
हंस पद्चर चकोरन बहु सैल रथ चमक चढि
धमक धायो ॥ उडत वारन बहु कुंमकुमा केसरि
तियनके कुचन तकि तमकरायो ॥३॥ पंच ले बान
चहुँ ओर छाए प्रथम चांपले आपु हाथन चलायो ॥
दोर कर सोर धप धाय लरति अति घेरि चहूं ओर
गढमान ढायो ॥४॥ परी खलबली सब नारि उर
मदनकी मिलन मन स्याम अंचल फिरायो ॥ जीति

सब सुभट 'कृष्णदास' ब्रिंदा विपिन आय गिरि-
धरनकौं सीस नायो ॥५॥१॥卐॥ ताल धमार ॥
नवबसंत आगम नव नागरि, नव नागर-गिरिधर
सँग खेलति ॥ चोवा, चंदन, अगर, कुंमकुमा,
ताकि ताकि पिय-सनमुख मेलति ॥१॥ पुहुपाँजलि
जब भरति मनोहर, बदन-ढाँपि अंचल गति
पेलति ॥ चत्रभुज प्रभु रसरास रसिक कौं, रीझि
रीझि सुख-सागर झेलति ॥२॥ ताल धमार ॥ साजि
सैन पलानो मदनराई ॥ अबलन पर कोप्यो हे
रिस्याइ ॥ कुंजर द्रुम मदगज पलास भेभीत भयो
नेक अति उदास ॥ मोर महाबित चढे हे धाय ॥
ललित लाल पाखर बनाइ ॥३॥ अंब सुभट पेहेरें
सुनाइ बट वेरीया अंजानदाइ ॥ त्रिविधि पवन
चंचल तुरंग ॥ उडि रजपत झुकि अति उतंग ॥४॥
कदली दल बेरख फरहरात ॥ सहेचरीयां चाटगधर

पिपात ॥ कमल नैन कोकिला अति अनूप ॥ तृप-
कदार सुक कपटरूप ॥५॥ बाजे गाजे निर्झर
निसान ॥ भमर भेरि मिलि करत गान ॥ रुपिकेस
प्रभु बिन गुपाल ॥ केसें विहाय इह कठिन काल
॥६॥२॥ 卐 ॥ ग्वालके पद ॥ ताल धमार ॥ खेलत
हैं हरि आनंद होरी ॥ करतल ताल बजावत गावत
राम कृष्णकी जोरी ॥१॥ ऋतु कुसुमाकर कामदेव
पिय माखन दूध दहीकी चोरी ॥ जाके भवन कछु
नहि पावत ताके चले उठि भाजन फोरी ॥२॥
देखत गोपी सुंदर लीला घूंघट और हसि मुख
मोरी ॥ 'परमानंद' स्वामी बहु रंगी सब यों सुख
देखि कर पौंरी ॥३॥१॥卐॥ पलनाके पद ॥ ताल
धमार ॥ अति सुंदर मनि जटित पालनों झूलत
लाल बिहारी ॥ खेलति फागु सखा सँग लीनें नाचति
दै कर तारी ॥१॥ घर घर तें आई बनि बनिकैं

पहिरैं नौतन सारी ॥ तनक गुलाल अबीरन लैकैं छिरकति राधा प्यारी ॥२॥ गावति गारि आइ आंगनमें प्रमुदित मन सुकुमारी ॥ चौवा चंदन अगर कुंमकुमा देति सीस तैं ढारी ॥३॥ लपटि रहे तन बसन रंग में लागत हैं सुखकारी ॥ देखति बिवस भये मनमोहन भरि लीनें अँकवारी ॥४॥ मिसहीं मिस ढिग आइ पालनों झुलवत हैं ब्रजनारी ॥ अबीर गुलाल लगाइ कपोलन हँसति दै दै कर तारी ॥५॥ तन मन मिली प्रान प्यारे तैं, नौतन छवि बाढी अति भारी ॥ सिथिलित बसन मुकुलित कबरी मनो प्रेम सिधु तैं टारी ॥६॥ इह सुख ऋतु बसंत लीलामें बाल केलि सुखकारी ॥ सरवसु बारि देति प्यारे पै जन गोविंद बलिहारी ॥७॥१॥ 卐

ताल धमार ॥ जसोदा नहिं बरजै अपनौं बाल ॥ अपनौं बाल रसिया गुपाल ॥ध्रु०॥ स्नान करन गई

जमुना तीर ॥ कर कंकन अभरन धरे चीर ॥ मेरी जल प्रवाह तन गई है दीठि ॥ पाछै तैं कान्ह मेरी मलति पीठ ॥१॥ यह अन्न न खाइ मुख पीवत खीर ॥ यह केतीक बार गयों जमुना तीर ॥ हौं बारेंरी ग्वालिन तेरो ग्यान ॥ यह पलनाँ झूलै मेरों बारों कान्ह ॥२॥ ब्रिंदावन दीखैं में तरुन कान्ह ॥ घर आइ बैठै व्हे सयान ॥ उठि चलीरी ग्वालिन जिय उपजी लाज 'सूरदास' ए प्रभुके काज ॥३॥२॥卐॥ ताल धमार ॥ जसोदा नहीं बरजे अपनौ कान्ह ॥ अपनो कान्ह सुंदर सुजान ॥१॥ जल भरन गई जमुनाके घाट ॥ नहीं जान देति घर रोके बाट ॥२॥ कबहुं झगरि कहे लावो दान ॥ झपट चीर करे खैंचतान ॥३॥ पय पीवत घुटुरुन चलत लाल ॥ कालिंदी तट गयो कौन चाल ॥४॥ तेरी बात सुनति मोय हास्य आत ॥

यह पलना झुलत कछु नाहि खात ॥५॥ गौ चारत निरखे तरुन स्याम ॥ सब छलत फिरै करै ऐसे काम ॥६॥ सकुचाय ग्वालि रही मुख निहारि॥ 'सूर' स्याम की लीला अपार ॥ ७ ॥ ३ ॥ 卐 ॥

ताल चरचरि ॥ राग रामकली ॥ प्रेंख पर्यंक शयनम् ॥ चिरविरहतापहरमति रुचिरमीक्षणं-प्रकटय प्रेमायनम् ॥ ध्रु० ॥ तनुतर द्विजपंक्तिमन्ति ललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायिकानाम् ॥ इयदवधिपरमेतदाशयासमभवज्जीवितंतावकीनाम् ॥ १ ॥ तोकता वपुषि तव राजते दर्शितु मदमा-निनीमानहरणम् ॥ अग्रिमे वयसि किमु भावि कामेऽपि निज गोपिका भाव करणम् ॥ २ ॥ व्रज युवती हृद्य कनकाचला नारोढुमुत्सुकं तव चरण-युगलम् ॥ तेन मुहुरुन्नमनमभ्यासमिव नाथ सपदि कुरुते मृदुल मृदुलम् ॥३॥ अधिगोरोचनातिलक-

मलकोद्ग्रथितविविधमणिमुक्ताफल विरचितम् ॥
भूषणं राजते मुग्धतामृतभरस्यंदि वदनेंदु रसितम्
॥४॥ भ्रूतटेमातृरचितांजनबिंदुरतिशयितशोभया-
दृग्दोषमपनयन् ॥ स्मरधनुषि मधुपिबन्नलिराज-
इव राजते प्रणयिसुखमुपनयन् ॥ ५ ॥ वचनरच-
नोदारहाससहजस्मितामृतचयैरार्तिभरमपनयन् ॥
पालय सदास्मानस्मदीयश्रीविठ्ठलेनिजदास्यमुप-
नयन् ॥६॥४॥ 卐 ॥ ताल धमार ॥ रतन खचित
को पलना सुंदर फूलत नँदके लाला ॥ नवसत
साजि सिंगार सुंदरी फुलवत है गोपाला ॥१॥ को-
ऊ गावत कोऊ झांझ बजावत ढफ लै कोऊ बजावैं॥
धिधिकिट धिधिकिट मृदंग करत है गति मै गति
उपजावैं॥२॥ चोवा चंदन छिरकि छिरकि कैं लालन
रगमगो कीनौं ॥ अबीर गुलाल उडाइ खिलावत
पिचकाई रंग भरि लीनौं ॥ ३ ॥ लाल लाल बादर

भये नभमें देखतहीं बनी आवै॥ चुचकारत मुख-
मांडत सब मिलि मनहि मन मुसक्यावै ॥ ४ ॥
निरखि निरखि मुख कमल मनोहर प्रेम विवस
भई गोपी ॥ मगन भई तनकी सुधि भूली कुल
मरजादा लोपी॥ ५ ॥ केसरि कलस सीस पै ढोरत
हो हो कहि बोलैं॥ ग्वाल बाल उनमत व्हे नाचत
गारी गावत डोलैं ॥ ६ ॥ प्रफुलित मन यह फागु
खेलि मैं चहुं दिसि आनँद छायौ॥ 'कुँभनदास'
लाल गिरिधरनकौं यह विधि लाड लडायौं॥७॥
॥ ५॥ 卐॥ तितालके आड चोताल ॥ ललित त्रि-
भंगि लाडिलो ललना ॥ व्रिंदाबन गहवर निकुं-
जमें जुवतिन भुज झुलत है पलना ॥ १ ॥ भा-
मिनि सुरत राधा सुखसागर चितवनी चारु विरह
दुःख दलना ॥ जमुना तट असोक बिथिनमें कंध
बाहुधरि चलना ॥ २॥ नूपुर क्वणित चरण अंबुज

पै मुखरित किंकिणी सोभित चलना ॥ 'कृष्णदास' प्रभु नखशिख मोहन गिरिधरलाल प्रेमरस खिलना ॥ ३ ॥ ६ ॥ 卐 ॥ राग काफी ताल दीपचंदी ॥ बरजो जसुदाजी कान्हा ॥ टेक ॥ मैं जमुनाजल भरन जातही मारग निकस्यौ आना ॥ बरजतही मेरी गागर फोरी लै अबीर मुखसाना ॥ सखी सब देति है ताना ॥ १ ॥ मेरो लाल पलनामें झूलै बालक है नादाना ॥ ए का जानैं रसकी बतियाँ का जानैं खेल जहांना ॥ कहां तूम भूली ग्याना ॥२॥ तुम सांची, तमरों सुत सांचो हमहीं करत बहाना ॥ 'सूरदास' ब्रजवासिन त्यागै ब्रजसौं अंत न जाना ॥ करो अपनौ मनमाना ॥ ३ ॥ ७ ॥ 卐 ॥ बीरीके पद ॥ ताल धमार ॥ एकु बोल बोलो नँद नँदन तौं खेलौं तुम संग ॥ परसौ जिन काहुकौं प्यारे आन अँगना अंग ॥ १ ॥ बरजति हौं बीरी

काहू की जसुमति सुत जिनि लेहु ॥ परिरंभन आलिंगन चुंबन नैन सैन जिनि देहु ॥२॥ मेरे खेल बीच कोऊ भामिनि आइ लाल कौं भरि है ॥ प्रान-नाथ हौं कहे देति हौं मो पै सही न परि है ॥३॥ प्रभु मोहि भरौ भरौं हौं प्रभु कौं खेलो कुंज बिहारि ॥ अग्र स्वामी सौं कहति स्वामिनी रँग उपजैंगो भारी ॥ ४ ॥ १ ॥ 卐 ॥ ताल तिताल ॥ गावति बसंत चली बने बीर बागे ॥ वल्लभ रिझाईवे कौं मिली अनुरागे ॥१॥ इक तौं पहिरावै बागो इक सौंधों लावै ॥ इक तौं बदन छिरकै इक अबीर उडावे ॥ २ ॥ इक तौं पान खवावै इक दरपन दिखावै ॥ इक तो पंखा करै इक लै चमर ढुरावै ॥३॥ आरति करि कैं सब किये मन भाये ॥ ब्रिंदावन चंद बहु भाँति रिझाये ॥४॥ २॥ 卐 ॥ ताल धमार ॥ देखो रसिक लाल बागो रसाल ॥ खेलति बसंत पिय

रसिक बाल ॥ ध्रु० ॥ घोष घोपकी सुघर नारि ॥ रूप रंग सब, इक सारि ॥ गावति जुरि मिलि मीठी गारि ॥ हँसति कुंमकुमा सीस डारि ॥ १ ॥ नव बसंत आभरन अमोल ॥ सारीमें झलमल झकोल ॥ द्रग अंजन भरि मुख तँबोल ॥ हुलसति बिलसति भई लोल ॥ २ ॥ इक कृष्णागर लै रही हाथ ॥ लपति उरसि भुज प्रिया साथ ॥ सौंधेमें बोरे गिरिधरन नाथ ॥ चोवा बहि चल्यो कच पाग माथ ॥ ३ ॥ इक कंज पराग लगावै गाल ॥ इक गूंथि कुसम पहरावै माल ॥ गहि रही कटि तट जटित लाल ॥ मनौं निकरि नील तरु कर मृनाल ॥४॥ उडति हैं बंदन और अबीर ॥ अरुन पीत भयो स्याम चीर ॥ सुबल बगरमें बहुत भीर ॥ बरखति पिचकारिन रंग धीर ॥५॥ कौस्तुभ मनि कौंधति भिंज गात ॥ बंदन भीतर सगबगात ॥ पान खाति

मुसिकाति जात ॥ किलकि किलकि सखी करति बात ॥६॥ बाजति तोल मृदंग चंग ॥ सारंगी सुर बीन संग ॥ भरति भरावति नैन रंग ॥ निरखति बनि आवै भौंह भ्रंग ॥ ७ ॥ सिंघ पौरि ओर ब्रज अवास ॥ चंदन बादर कियो निवास ॥ फैलि रह्यो सौरभ सुबास ॥ रसमें रसमय पिय बिलास ॥८॥ इक स्रवननि कहति चोखि ॥ स्याम लाल अँग अंग पोखि ॥ हसति श्रीदामा सखा तोक ॥ फागुनकी हमें कछू न धोख ॥ ९ ॥ रति नाइक छबि अति अनूप ॥ नव पल्लव अभिनव ब्रज सरुप ॥ श्री भट परमानंद जूप ॥ आनंदित श्री नंदराइ भूप ॥१०॥३॥卐॥ ताल धमार ॥ दोऊ नवललाल खेलति बसंत ॥ आनंदकंद गिरिधरनचंद ॥ ध्रु० ॥ नवल कुंज द्रुम नवल मोर ॥ नवल कुसुम सम मधुप सोर ॥१॥ नव लीलाँबर नवल पीतपट नवल

अधर मुख बीरी दंत॥ नवरस केसरि नवल अरगजा नवल गुलाल अबीर उडंत॥२॥ नवल गुपाल नवल ब्रज जुवती नवल परस्पर सुख अनंत॥ 'चत्रभुजदास' दरस दृगलोभी नवल रुप गिरिधरनचंद ॥३॥४॥ 卐 ॥ ताल ध्रुपद ॥ नवल बसंत खेलत गोबरधनधारी ॥ मोहनके संग बनी प्रमुदित ब्रजनारी ॥१॥ तरनि तनया तट कुजित सुकुमारी ॥ मधुर बंदी गावत जे ब्रिंदाबन चारी ॥ २ ॥ कुसुमित द्रुम राजें बन भामिनि सुखकारी ॥ कुंकुम मृगमद कपूर धूरि रस बिहारी॥३॥ बिबिधि सुमन बरखत पिय कामिनि सुखकारी ॥ मलय पवन कुमुद कंज दल पराग देति हारी ॥४॥ चरबित तांबूल मुख जुवतिन देति किलकारी ॥ 'कृष्णदास' प्रभु श्रीमुख निरखत बलि बलिहारी ॥५॥ ॥५॥卐॥ ताल धमार ॥ लालन सँग खेलन फागु

चली ॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा छिरकत घोष गली ॥ १ ॥ ऋतु बसंत आगम नवनागरि जोबन भार भरी ॥ देखन चली लाल गिरिधरिनकौं नँदजू के द्वार खरी ॥ २ ॥ राती पियरी चोली पहेरें नौतन झूमकि सारी ॥ मुखहि तँबोल नैंनमें काजर, देति भामती गारी ॥ ३ ॥ बाजति ताल मृदंग, बाँसुरी, गावत गीत सुहाऐ ॥ नवल गुपाल, नवल ब्रजवनिता, निकसि चोहटैं आऐ ॥४॥ देखों आइ कृष्ण जु की लीला बिहरत गोकुल माहीं ॥ कहत न बनै दास 'परमानँद' यह सुख अनत जु नाहीं ॥५॥६॥卐॥ अष्टपदी ताल धमार ॥ अवलोकयसखि मंजुल कुंजे ॥ रमयतिगोकुलरमणीरिहगोकुलपतिरलिकोकिलपुंजे ॥ ध्रु० ॥ माधविकालतिकारतिकारिणीरागिणीरुचिरवसंतेत्रिविधपवनकृतविरहवधूजनमदननृपतिसामंते ॥ १ ॥ किंशु-

ककुसुमसमीकृत दयिताधररसपानविनोदे ॥ मधुपसमीहितबकुलमुकुलमधुविकसित सरसिमोदे ॥ २ ॥ नवनवमंजुरसालमंजरीबोधितयुवजनमदने ॥ दयितारदनसमद्युतिमुकुलितकुंदचिरस्मितवदने ॥ ३ ॥ युवतीजन मानसगतिमानमहागजमदमृगराजे ॥ कोकिलकलकूजितविरहानलतापितपथिकसमाजे ॥४॥ विततपरागकुसुमसंबंधिसदागतिवासितगहने ॥ कुसुमितकिंशुककैतवविस्तृतविरहिदहनवनदहने॥५॥ पल्लवकुसुमसमेतविपिनविस्मारितयुवगणगेहे ॥ मदनदहनदीपनविद्रावितविरहिदीनजनदेहे ॥ ६ ॥ जगतिसमानशीततदितरविरचितनिजरुचिराकारे ॥ वनिताजनसंयोगसेविजनजनितानंदसुभारे ॥ ७ ॥ इतिहितकारिवचनमतिमानिनिमानयगोकुलवासे ॥ कुरुरतिमतिशयकरुणारसवतिवितरमतिहरिदासे ॥

॥ ८ ॥ १ ॥ 卐 ॥ ताल धमार ॥ ललितलवङ्गलता-परिशीलनकोमलमलयसमीरे ॥ मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकूजितकुञ्जकुटीरे ॥ १ ॥ विहरति हरिरिह सरस वसंते नृत्यति युवतिजने न समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते ॥ ध्रु० ॥ २ ॥ उन्मद-मदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे ॥ अलि-कुलसंकुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे ॥ ३ ॥ मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले ॥ युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले ॥ ४ ॥ मदनमहीपतिकनकदंडरुचिकेशरकुसुम-विकासे ॥ मिलितशिलीमुखपाटलपटलकृतस्मरतूणविलासे ॥ ५ ॥ विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे ॥ विरहिनिकृंतनकुंतमुखाकृति-केतकीदंतुरिताशे ॥ ६ ॥ माधविकापरिमलललिते नवमालतिजातिसुगंधौ ॥ मुनिमनसामपि मोहन-

कारिणि तरुणाकारणबन्धौ ॥ ७ ॥ स्फुरदतिमुक्त-
लतापरिरम्भणमुकुलितपुलकितचूते ॥ वृन्दावनवि-
पिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ॥ ८ ॥ श्रीजय-
देवभणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारम् ॥ स-
रसवसन्तसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारम् ॥९॥
॥ २ ॥ 卐 ॥ ताल तिताल ॥ विरचितचाटुवचन-
रचनं चरणे रचितप्रणिपातम् ॥ संप्रति मंजुलवंजु-
लसीमनि केलिशयनमनुयातम् ॥ १ ॥ मुग्धे मधु-
मथनमनुगतमनुसर राधिके ॥ ध्रु० ॥ घनजघन-
स्तनभारभरे दरमन्थरचरणविहारम् ॥ मुखरितम-
णिमंजीरमुपैहि विधेहि मरालनिकारम् ॥ २ ॥
शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुरिपुरावम् ॥
कुसुमशरासनशासनबन्दिनि पिकनिकरे भज
भावम् ॥ ३ ॥ अनिलतरलकिसलयनिकरेण करेण
लतानिकुरम्बम् ॥ प्रेरणमिव करभोरु करोति गतिं

प्रति मुंच विलम्बम् ॥ ४ ॥ स्फुरितमनंगतरंगव-
शादिव सूचितहरिपरिरम्भम् ॥ पृच्छ मनोहरहार-
विमलजलधारममुं कुचकुम्भम् ॥ ५ ॥ अधिगत-
मखिलसखीभिरिदं तव वपुरपि रतिरणसज्जम् ॥
चण्डि रणितरशनारवडिण्डिममभिसर सरसमल-
ज्जम् ॥ ६ ॥ स्मरशरसुभगनखेन करेण सखीम-
वलम्ब्य सलीलम् ॥ चल वलयक्कणितैरवबोधय
हरिमपि निजगतिशीलम् ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभणि-
तमधरीकृतहारमुदासितरामम् ॥ हरिविनिहित-
मनसामधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरामम् ॥ ८ ॥ ३ ॥卐॥
ताल तिताल ॥ स्मरसमरोचितविरचितवेशा ॥ ग-
लितकुसुमभरविलुलितकेशा ॥ कापि मधुरिपुणा
विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ हरि-
परिरम्भणवलितविकारा ॥ कुचकलशोपरि तरलि-
तहारा ॥ २ ॥ विचलदलकललिताननचन्द्रा ॥

तदधरपानरभसकृततन्द्रा ॥ ३ ॥ चंचलकुंडलद-लितकपोला ॥ मुखरितरसनजघनगतिलोला ॥४॥ दयितविलोकितलज्जितहसिता ॥ बहुविधकुजित-रतिरसरसिता ॥ ५ ॥ विपुलपुलकपृथुवेपथुभंगा ॥ श्वसितनिमीलितविकसदनंगा ॥ ६ ॥ श्रमजलक-णभरसुभगशरीरी ॥ परिपतितोरसि रतिरणधीरा ॥७॥ श्रीजयदेवभणितहरिरमितम् ॥ कलिकलुपं जनयतु परिशमितम् ॥८॥४॥ 卐 ॥ ताल धमार ॥ हरिरिह व्रजयुवतीशतसङ्गे ॥ विलसति करिणीग-णावृतवारणवर इव रतिपतिमानभङ्गे ॥ ध्रु० ॥ १ ॥ विभ्रमसम्भ्रलोलविलोचनसूचितसञ्चितभावम् ॥ कापि दृगंचलकुवलयनिकरैरंचति तं कलरावम् ॥२॥ स्मितरुचिरुचिरतराननकमलमुदीक्ष्य हरेरतिक-न्दम् ॥ चुम्बति कापि नितम्बवती करतलधृत-चिबुकममन्दम् ॥ ३ ॥ उद्भटभावविभावित-

चापलमोहननिधुवनशाली ॥ रमयति कामपि पीनघनस्तनविलुलितनववनमाली ॥ ४ ॥ निज-परिरम्भकृतेनुद्रुतमभिवीक्ष्य हरिं सविलासम् ॥ कामपि कापि बलादकरोदग्रे कुतुकेन सहासम् ॥ ॥५॥ कामपि नीवीबन्ध विमोकससम्भ्रमलज्जि-तनयनाम् ॥ रमयति सम्प्रति सुमुखि बलादपि करतलधृतनिजवसनाम् ॥ ६ ॥ प्रियपरिरम्भविपुल पुलकावलिद्विगुणितसुभगशरीरा ॥ उद्गायति सखि कापि समं हरिणा रतिरसरणधीरा ॥७॥ विभ्रम-सम्भ्रमगलदंचलमलयाञ्चित मंगमुदारम् ॥ प-श्यति सस्मितमपि विस्मितमनसा सुदृशः सवि-कारम् ॥ ८ ॥ चलति कयापि समं सकरग्रहमल-सतरं सविलासम् ॥ राधे तव पूरयतु मनोरथ-मुदितमिदं हरिरासम् ॥९॥५॥ 卐 ॥ पंचमीके पद ॥ ताल धमार ॥ श्री पंचमी परम मंगल दिन मदन-

महोच्छव आज ॥ बसंत बनाइ चली ब्रज बनिता, करि पूजा कौं साज ॥ १ ॥ कनिक कलस जल पूरि पढति रति, काम मंत्र रस मूल ॥ ता पै धरी रसाल मंजुरी ढांपि सु पीत दुकूल ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुंमकुमा नव केसरि घनसार ॥ नाना धूप दीप नीराँजन बिबिधि भाँति उपहार ॥ ३ ॥ बाजति ताल मृदंग मुरलिका बीना पटह उपंग ॥ सरस बसंत मधुर सुर गावति उपजत तान तरंग ॥ ४ ॥ छिरकति अति अनुराग मुदित गोपीजन मदनगुपाल ॥ मानौं सुभग कनक कदली मंडल मधि राजति मानौ तरून तमाल ॥५॥ इह बिधि चली ऋतुराज बधावन सकल घोप आनंद ॥ 'हरिजीबन' प्रभु गोबरधनधर जय जय गोकुलचंद ॥ ६ ॥ १ ॥ 卐 ॥ ताल धमार ॥ आइ हम नंदके द्वारै ॥ खेलत फागु बसंत पंचमी

सुख समाज बिचारै ॥ १ ॥ कोऊ लिए अगर कुमकुमा केसरि काहू के मुख पर डारै ॥ कोऊ अबीर गुलाल उडावै आनंद तन न सह्मारै ॥२॥ मोहन कौं निरखति गोपी सब मिलिके वदन निहारे ॥ चितबनिमें सब ही बस कीनी नागरी नंद दुलारे ॥ ३ ॥ ताल मृदंग मुरली ढफ बाजैं झांझिनकी झनकारैं ॥ 'सूरदास' प्रभु रीझि मगन भये गोप वधू तन वारैं ॥ ४ ॥ २ ॥ 卐 ॥

ताल धमार ॥ आई हे आज बसंत पंचमी खेलन चलो गुपाल ॥ संग सखा लै हो मनमोहन हम लै है ब्रज बाल ॥ १ ॥ चोवा चंदन अगर अरगजा, केसरि माट भराई ॥ अबीर गुलाल की झोरी भरि भरि, लै हो हाथ पिचकाइ ॥ २ ॥ छिरकति हँसति चलति त्रिंदाबन करति कुलाहल देति हैं गारी ॥ ग्वालन संग लिये नंदनंदन सखियन सँग राधिका

प्यारी ॥ ३ ॥ इक नाचत इक धाइ मिलावत ढफ मृदंग बजावत तारी ॥ यह सुख देखि सुरलोक अनंदित "स्याम दास" बलिहारी ॥ ४ ॥ ३ ॥ 卐 ॥

ताल ध्रुपद ॥ आज चलोरी ब्रिंदाबन बिहरति वसंत पंचमी पंचम गावति ॥ साजि लेहु गडवा भरि चंदन वंदन निरखि आनंद बढावति ॥ १ ॥ कुसमित द्रुमवेली अली छबि कूंजित कोकिल मानो हम ही बुलावत ॥ 'कल्यानके' प्रभु गिरिधर हि परस करि ये अखियां अति ही सुख पावत ॥ २ ॥ ४ ॥ 卐 ॥

ताल धमार ॥ आज पंचमी शुभदिन नीको काम जनम दिन आयो ॥ रुक्मनि कौंखि चंद्रमा प्रगट्यौं सब जादौं मन भायौं ॥ १ ॥ बाजत ताल परवावज आवज उडति अबीर गुलाल ॥ फूले दान देति जादौं पति मागन भए निहाल ॥ २ ॥ हरखि देवता कुसमन बरखति फूलि सब बन राइ ॥ 'पर-

मानंद' मोद अति बाढ्यौं जग सबके सुखदाइ ॥ ३ ॥ ५ ॥ 卐 ॥ आज बसंत सबै मिलि सजनी पूजौं मोहन मीत ॥ हरद दूब दधि अक्षत लै कै गावो सौभग गीत ॥ १ ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा पोहुप सेत अरु पीत ॥ घर घर तैं बानिक बनि आए आप आपुनी रीति ॥ २ ॥ मोहन कौं मुख निरखि निरखि कैं करि हौ व्रजकी जीत ॥ खेलति हँसति परम सुख उपज्यौं गयौं हे द्यौस निस बीति ॥ ३ ॥ खेल परस्पर बढ्यौं अति रंगसौं रीझे मोहन मीत ॥ 'कृष्ण जीवन' प्रभु सुख सागर मैं छाँडौं नही पसीत ॥ ४ ॥ ६ ॥ 卐 ॥ आजु मदन महोच्छव राधे ॥ मदन गुपाल बसंत खेलति है नागरि बोध अगाधे ॥ १ ॥ निधि बुधवार बसंत पंचमी ऋतु कुसमाकर आई ॥ जगत बिमोहन मकरध्वज की दुहुं दिस फिरी दुँहाई ॥ २ ॥ रतिपति राज सिंगासन बैठे

तिलक पितामह दीनौं ॥ छत्र चंवर तुनीर संख धुनि बिकट चाप कर लीनौं ॥ ३ ॥ चलो सखी तहां देखन जैये हरि उपजावति प्रीति ॥ 'परमानंद' दासकौ ठाकुर जानत हैं सब रीति ॥ ४ ॥ ७ ॥卐॥

आज सुभग दिन बसंत पंचमी जसुमति करति बधाई ॥ बिबिधि सुगंधन करौ उबटिनो ताते नीर न्हवाई ॥१॥ बांधी पाग बनाइ सेत रंग आभूषन पहराई ॥ तनक सीस पै मोरचंद्रिका दिस दाहिनी ढरिकाई ॥२॥ ग्रह ग्रह तै ब्रज सुंदरि सब मिलि नंद ग्रह पौरि पैं आई ॥ अंब मोर केसू पुहुप मंजुरी कनक कलस बनाई ॥३॥ चोवा चंदन अगर कुंमकुमा केसरि सूरंग मिलाई ॥ प्रमुदित छिरकति प्रान पिया कौं अबीर गुलाल उडाई ॥ ४ ॥ बाजति ताल मृदंग झांझ ढफ गावति गीत सुहाई ॥ तन मन धन नोछावरि कीनौ आनंद उर न समाई

॥ ५ ॥ श्रीगिरिवरधर तुम चिरजीयो भक्तन के सुखदाई ॥ श्रीवल्लभ पदरज प्रताप तै 'हरिदास' बलि जाई ॥ ६ ॥ ८ ॥ 卐 ॥ ताल ध्रुपद ॥

आयो ऋतुराज साजि पंचमी बसंत आज मोरे द्रुम अति अनूप अंव रहे फूली ॥ बेली लपटी तमाल सेत पीत कुसुम लाल उडवति सब स्याम भाम भँवर रहे फूली ॥ १ ॥ रजनी अति भई स्वच्छ सरिता सब विमल पच्छ उडगन पति अति अकास बरखति रसमूली ॥ जती सती सिद्ध साधि जित तित उठि भजे सब विमलि जटित तपसी भई मुनि मन गति भूली ॥ २ ॥ जुबती जूथ करति केलि स्याम सुखद सिंधु झेलि लाज लीक दई पैलि परसि पगन भूली ॥ बाजति आवज उपंग बांसुरी मृदंग चंग इहि सुख सब 'छीतु' निरखि इच्छा भई लुली ॥ ३ ॥ ९ ॥ 卐 ॥

ताल धमार ॥ आवो बसंत बधावो चलो ब्रजकी नारि ॥ सखी सिंघपौरि ठाडे मुरारि ॥ ध्रु० ॥ नौतन सारी कसूंभी पहरै नव सत अभग्न संजियै ॥ नव नव सुख मोहन संग विलसत नवलसुख कान्ह पिय भाजियै ॥ १ ॥ राधा चँद्रभगा चँद्राबलि ललिता भाम सुसीलै ॥ संजाबलि कनक घट सिर पै अँब मोर जव लीलै ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा उडति गुलाल अबीरै खेलति फाग भाग बड गोपी छिरकत स्याम सरीरै ॥ ३ ॥ बीना बैन झांझ ढफ वाजे मृदंग उपंगन ताल ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु गिरिधर नागर रसिक कुंवर गुपाल ॥ ४ ॥ १० ॥ 卐 ॥ गावत चली बसंत बधावन नंदराइ दरबार ॥ बानिक बनि ठनि चोखमाख सौं ब्रजजन सब इक सार ॥ १ ॥ अंगिया लाल लसत तन सारी झूमक

नव उर हार ॥ बैनी ग्रथित रुरति नितंब पै कहां कहूं बडडेवार ॥२॥ मृगमद आडि बडेरी अखियाँ आँजी अंजन पूरि ॥ प्रफुलित वदन हँसति दुलरावति मोहन जीवन मूरि ॥ ३ ॥ पग जेहरि केहरि कटि किंकिनि, रह्यों विथकि सुनि मार ॥ घोष घोष प्रति गालिन गालिन प्रति विछुवनकी ऊनकार ॥ ४ ॥ कंचन कुंभ सीस पै लीने मदन सिंधुतैं भरिकैं ॥ ढाँपे पीत वसन जतनन रचि मोर मंजुरी धरिकैं ॥ ५ ॥ अबीर, गुलाल, अरगजा, सौंधों बिधि न जात बिस्तारी ॥ मैनसैन ज्योनार दैनकौं कमलन कमलनि थारी ॥ ६ ॥ पोंहोंची जाई सिंघपोरि जब विपुल जुवति समुदाई ॥ निज मंदिरतैं निकसि जशोदा, सन्मुख आगैं आई ॥ ७ ॥ भई भीर भीतर भवनन में जहाँ व्रजराज किशोर ॥ भरत भाँवतैं प्रान पिया

कौं घेरि फेरि चहुँओर ॥ ८ ॥ ब्रजरानी जब मुरि मुसिकानी, पकरन भई जब करकी ॥ लै सँग सखी लखी कछु बतियाँ मिसही मिस उत सरकी ॥९॥ कुमकुम रँग सौं भरि पिचकारी छिरकैं जे सुकुमारी ॥ बरजत छींटैं जात द्रगनमें धनि वे पौंछन हारी ॥ १० ॥ चंदन बंदन चोवा मथिकैं नील कंज लपटावै ॥ अलक सिथल और पाग सिथल अति, पुनि वे बाँधि बनावैं ॥११॥ भरत निसंक भरे अँकवारी भुजन बीच भुज मेलैं ॥ उनमद ग्वाल वदत नही काहू झेल खेल रस रेलैं ॥ १२ ॥ कियों रगमगों ललित त्रिभंगी भयो ग्वालिनि मन भायों ॥ टकझक में झुकि एकहि विरियाँ, लालन कंठ लगायों ॥ १३ ॥ ताल मृदंग लीऐं सीदामा पहुँचे आई सहाई ॥ हलधर सुबल तोक मधुमंगल अपनी भीर बुलाई ॥ १४ ॥ खेल

मच्यों मनिखचित चोकमें कवि पें कहा कहि आवे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल छबि देखेंही बनि आवे ॥ १५ ॥ ११ ॥卐॥ नीकी आजु बसंत पंचमी खेलति कुंजविहारी ॥ संग सखी रंग भीनी लीनी श्रीव्रषभानु दुलारी ॥ १ ॥ बूका बंदन केसर चंदन छिरकति पियकौं प्यारी ॥ अरस परस दोउ भरति भरावति रंग बढ्यौं अति भारी ॥ २ ॥ बाजत ताल मृदंग मुरज ढफ बिच बिच बेनु उचारी ॥ कुंज कुंजमें केलि करौ मिलि ललिता-दिक बलिहारी ॥ ३ ॥ १२ ॥ 卐 ॥ प्रथम बसंत पंचमी पूजन कनक कलस कामिनी उर फूले ॥ आयो मदन महीप सैन लै अंबडार पै कोइल झूलै ॥ १ ॥ ठोर ठोर द्रुमबेली फूली कालिंदी के कूलै ॥ 'चत्रभुज' प्रभु गिरिधरन सँग विहरति स्यामा स्याम समतुलै ॥ २ ॥ १३ ॥ 卐 ॥ प्रथम

समाज आज ब्रिंदावन विरहति लाल विहारी ॥ पाँचैं नवल बसंत ब्रिंदावन उमगि चली व्रजनारी ॥ १ ॥ मंगल कलस लिये व्रजसुंदरि मधि वृप-भानु दुलारी ॥ फलदल, जुरि नव नूत मँजरी कनक कलस सोभा री ॥ २ ॥ गावति गीत बजा-वति बाजै मैन सैन अनुहारी ॥ दरसि परसि मन मोद बढावति राजति छबि भर भारी ॥ ३ ॥ उडति गुलाल अबीर कुँमकुमा भरि केसरि पिच-कारी ॥ छिरकति फिरति छबीले गातन रूप अनूप अपारी ॥ ४ ॥ विविध बिलास हास रसभीने इत प्रीतम उत प्यारी ॥ 'हित हरिवंस' निरखि मुख सोभा अखियाँ टरत न टारी ॥ ५ ॥ १४ ॥ 卐 ॥

परम पुनीत बसंत पंचमी मुरत सुभदिन साजे हो गोपी ग्वाल मुदित मनमाही खेलति बन बृज-राजे हो ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक नारद सुर

विमान चढ आये हो ॥ अष्टसिधि नवनिधि द्वारें ठाढी लेकर कुसुम बधाये हो ॥ २ ॥ फुल्यौं श्री त्रिंद्रावन, फूल्यौं श्रीगोबरधन, फूल्यौ जमुनाजीको तीर 'रामदास' प्रभु श्रीगिरिवरधर फूलै नखसिख फूलै सोभा सरीर ॥३॥१५॥卐॥ बनि ठनि आई सकल ब्रज ललना खेलनिकौ जु बसंत ॥ श्री पंचमी परम महोच्छब परम मनोहर गोकुलकंत ॥१॥ सुभदिन सुभग सरोज प्रफुल्लित कूंजत भँवर सुवास ॥ खेलि मच्यों नँद आँगन अद्भुत ब्रज-जन नँद कुँवर सुखरास ॥२॥ केसर कीच मची मनि चोकमें केसू कुसुम सुरंग ॥ अबीर गुलाल उडावति गावति प्रगट्यो अंग अनंग ॥३॥ निज करसौं कर देति पियन कौं सोभा कहा कहि आवै ॥ 'सूरदास' प्रभु सब सुख क्रीडत ब्रजजन अंग लगावै ॥४॥१६॥卐॥ बसंत पंचमी मदन

प्रगट भयों सब तन मन आनंद ॥ ठौर ठौर फूल्यौं पलास द्रुम, और मोरे मकरंद ॥ १ ॥ बिबिधि भांति फूल्यौं ब्रिंदाबन कुसुम समूह सुगंध ॥ कोकिल मधुप करत ऊंकारव गावत गीत प्रबंध ॥ २ ॥ सारस हंस सरोवर के तट बोलत सरस अमंद ॥ नाना पहुप परागनके भरि आवत समीर सुगंध ॥ ३ ॥ बैनु बजाई करी मोहित मन गोपिन कौं नँद नंद ॥ मिलि धाँई व्रपभांनु सुता पें परी प्रेंमके फंद ॥ ४ ॥ गोबरधन गिरि कुंज सदनमें करत विहार सुछंद ॥ 'दास' निरखि बलि बलि शोभा पै स्यामा गोकुल चंद ॥ ५ ॥ १५ ॥ 卐 ॥

मन मोहन सँग ललना विहरति बसंत सरस ऋतु आई ॥ लै लै छरी कुँवरि राधिका, कमल नैन पैं धाई ॥ १ ॥ द्वादस बन रतनारे दिखियतु चहुँ-दिस केसू फूले ॥ मोरे अंब, ओरु द्रुम बेली मधु-

कर परिमल भूले ॥ २ ॥ सिसिर ऋतुमें अति गयो सीत सब रबि उत्तर दिसि आयौं ॥ प्रेम उमगि कोकिला बोली, बिरहनि बिरह जगायौं ॥ ३ ॥ ताल, मृदंग बाँसुरी बीना ढफ, गावत मधुरी बानी ॥ देति परस्पर गारि मुदित व्है, तरुनी, बाल, सयानी ॥४॥ सुरपुर, नरपुर, नाग-लोक जल, थल, क्रीडा रस पावै ॥ प्रथम बसंत पंचमी लीला 'सूरदास' गुन गावै ॥ ५ ॥ १८ ॥卐॥

यह देखि पंचमी ऋतु बसंत ॥ जहँ द्रुम अरु वेली सब फलंत ॥ १ ॥ तहँ पठई ललिता करि बिचार ॥ नव कुंजन मैं करि हैं बिहार ॥ २ ॥ लै आई सब सिंगार साज ॥ हँसि दौरि मिले मनौं मदन राज ॥ ३ ॥ नव केसरि चोवा अंगराग ॥ खेलति गुपाल बढ्यो अनुराग ॥४॥ कुल कोकिल कलरवि मुख समाज ॥ आलि गुंजन पुंजन कुंज

गाज ॥५॥ रति कुंभ लई ठाडी निहारि ॥ मधि राजति सरस सब बेस बारि ॥६॥ सखी ताल मृदंग बजाइ गाइ ॥ तहँ 'द्वारिकेस' बलिहारी जाइ ॥ ७ ॥ १९ ॥ 卐 ॥ बधाई के पद ॥ ताल धमार ॥ आजु बसंत बधायों है श्रीवल्लभ राज दुआर ॥ विठ्ठलनाथ कियो है रचि रुचि, नव बसंत कौं सिंगार ॥ १ ॥ बल्लभी सृष्टि समाज संग सब, बोलति जय जयकार ॥ पुष्टिभाव सों पूजत है मिलि बाढयौं रंग अपार ॥ २ ॥ प्रेम भक्ति कों दान करत श्रीवल्लभ परम उदार ॥ कृपा दृष्टि अवलोकि दास कौं देति हैं पान उगार ॥ ३ ॥ श्रीवल्लभराज कुमार लाल ब्रजराज कुंवर अनुहार ॥ ऐसो अद्-भुत रुप अनुपम 'रसिक' जात बलिहार ॥४॥१॥ 卐॥ ताल ध्रुपद ॥ केसरी उपरना ओढैं केसर की धौती ॥ केसर को तिलक सोहे श्रीविठ्ठल छबि

जौती ॥ १ ॥ खट मुद्रा सोभित माला उर आभू-
पन भूपित सब अंग ॥ नख सिख निरखति
श्रीवल्लभ सुत लजित भयों अनंग ॥ २ ॥ आयों
ऋतुराज परम रमनीक अति सुखकारी फागुन
मास ॥ अति सुखदाइक कृष्ण सप्तमी व्रजपति
पूरी आस ॥ ३ ॥ आजु बडो दिन महा महो-
च्छव करत श्रीविठ्ठलनाथ ॥ गिरधर आदि प्रभृति
सप्त सुत निजजन कीए सनाथ ॥ ४ ॥ कीए
सुगंध फुलेल उबटनो कीए जु केसरि स्नान ॥
कीए सिंगार मनोहर सब अँग पीत बसन परि-
धान ॥ ५ ॥ नख सिख विविधि भाँति आभूपन
सोभित गिरिधर लाल ॥ कुलह केसरी सीस
विराजीति मृगमद तिलक सुभाल ॥ ६ ॥ खट
रस विंजन विविधि भाँति के कीए पकवान रसाल ॥
आदर सौं जिमावति भावति गोकुल के प्रतिपाल

॥ ७ ॥ दे बीरा छिरकति चोवा चंदन कुँमकुम अबीर गुलाल ॥ ज्यों गुलाब कुसुम अति सोभित. सोभित सुंदर भाल ॥ ८ ॥ गावति गुन गंधर्व गलित मन बाजति सरस मृदंग ॥ ताल रबाब झांझि ढफ महुवरि राजत सरस सुधंग ॥९॥ अति आदर सौं करि न्योछावर आनंद उर न समाइ ॥ आरति वारत श्रीमुख उपर 'गोविंद' बलि बलि जाइ ॥१०॥२॥卐॥ ताल धमार ॥ खेलति बसंत वर विट्ठलेश ॥ आनंदकंद गोकुल सुदेस ॥ ध्रु० ॥ श्रीगिरिधर गोविंद संग ॥ श्री बालकृष्ण लजित अनंग ॥ श्री गोकुलनाथ अनाथनाथ ॥ रघुनाथ नवल जदुनाथ साथ ॥ १ ॥ श्री घनस्याम अभि-राम धाम ॥ श्री कल्यानराइ परिपूरन काम ॥ मुरलीधर आदि समस्त बाल ॥ सेवक विचित्र सेवा रसाल ॥ २ ॥ जहाँ उडति गुलाल अबीर

रंग तहँ बाजति ताल मृदंग चंग ॥ जहँ गिरिवरधारी खेलति आइ ॥ तहँ 'लघु गुपाल' बलिहारी जाइ ॥ ३ ॥ ३ ॥ 卐 ॥ खेलति बसंत बर विट्ठलेश ॥ मिलि रसिक राइ गोवरधनेस ॥ ध्रु० ॥ मृगमद कपूर केसरि सुरंग ॥ अति सौंधे सांने कुसुम रंग ॥ दोउ भरि पिचकाई अति उमंग ॥ तकि भरति परस्पर सुभग अंग ॥ १ ॥ भरि नव अबीर नौतन गुलाल ॥ अरगजा लगावत ललित गाल ॥ दोउ हँसति लसति आनंद ख्याल ॥ पहेरावति सुवन सुगंध माल ॥ २ ॥ चमेली फुलेल सु राइवेलि ॥ मच्यौं खेलि अति रंग रेलि ॥ सब गोकुल सौरभ रह्यो फैलि ॥ मधु मत्त मधुप रस रह्यो झेलि ॥ ३ ॥ तहँ बाजत चंग मृदंग ताल ॥ सुर मिलत मुरली गावै गुपाल ॥ व्रज जन रीझै जिय अति रसाल ॥ सुख देति सबन गिरिधरनलाल ॥ ४ ॥ ४ ॥ 卐 ॥

खेलति बसंत वल्लभकुमार ॥ सोभा समुद्र बाढे अति अपार ॥ १ ॥ श्री गिरिधर गिरिधरन नाथ ॥ भरि रंग कनक पिचकाई हाथ ॥ २ ॥ श्री गोबिंद बालकृष्णजी संग ॥ छिरकति डारति बहु भांति रंग ॥ ३ ॥ रस खेलति खेल गोकुल के नाथ ॥ केसरि रंग सोहत पाग माथ ॥ ४ ॥ श्री रघुपति जदुपति अति सुदेस ॥ घनस्याम सुभग सुंदर सुवेस ॥५॥ श्री कल्यानराइ लीला रसाल ॥ मुरलीधर दामोदर कृपाल ॥ ६ ॥ गोपीनाथ बालक विनोद ॥ सेवक जन निरखति मन प्रमोद ॥ ७ ॥ श्री गोकुल परम सुदेस धाम ॥ मिलि गावति गीत विचित्र बाम ॥ ८ ॥ बाजत मृदंग मुख चंग रँग ॥ बीना कठताल पिनाक रंग ऊपंग ॥९॥ केसरि चोवा म्रगमद फुलेल ॥ ब्रज भामिनि छिरकति रेल पेल ॥ १० ॥ झोरी भरि भरि उडवति गुलाल ॥ मुख

बोलति हो हो होरी ग्वाल ॥ ११ ॥ यह सुख सोभा कही न जाय ॥ 'जन दास' निरखि बलिहारी जाय ॥ १२ ॥ ५ ॥ 卐 ॥ वंदौं पद पंकज नंदलाल ॥ जे भवतारन पूरन कृपाल ॥ ध्रु० ॥ चित चिंतत हो बुधि विसाल ॥ कृपा करन और दीनदयाल ॥ सदाँ बसो मेरे हिये माय ॥ कुँवरि माधुरी चितहि धाय ॥१॥ तिमिर हरन सुखकर आनंद ॥ मुनि वंदन आनंदकंद ॥ स्याम मुकट मनि कमल नैन ॥ छबि समूह पै लजित मैन ॥ २ ॥ गोकुल पति गुन नाहिन पार ॥ श्री नंद सुवन सुमिरौ उदार ॥ निगमागम सब ओघ सार ॥ सोई व्रिंदावन प्रगट्यौं विहार ॥ ३ ॥ ऋतु बसंत पहिलो समाज ॥ तहँ मुदित जुवति जन सजि जु साज ॥ मुदित चले जहँ 'सूरस्याम' ॥ बसंत बधावन नंद धाम ॥ ४ ॥ ॥ ६ ॥ 卐 ॥ वंदौं पद पंकज विट्ठलेस ॥ श्री वल्लभ

कुल दीपक सुवेस ॥ १ ॥ जिनकी महिमा जे कहें उदार ॥ अति जस प्रगट कियौं संसार ॥ २ ॥ इन सरन नीच जे तजि विकार ॥ तिनें भवनिधि तरति न लगति बार ॥ ३ ॥ करि सार अरथ भागवत परमान ॥ कीए खंडन पाखंड आन ॥ ४ ॥ बाँधि मरजादा सब बेद मान ॥ जन दीन उद्धरन सुख निधान ॥ ५ ॥ जिहि बंस परम आनंद दैन ॥ 'पुरुपोत्तम' सब सुख के ऐन ॥ ६ ॥ ७ ॥ 卐 ॥

कुल्ह, भोजन के पद ॥ ताल धमार ॥ रिंगन करति कान्ह आँगन में कर लीये नवनीत ॥ सोभित नील जलद तन सुंदर पैहरै झगुली पीत ॥ १ ॥ रुनु झुनु, रुनु झुनु, ज्यौं नुपुर बाजे, त्यौं पगु ठुमकि धरैं ॥ कटि किंकिनि कलरव मनोहर सुनि किलकार करैं ॥ २ ॥ दुलरी कंठ कनिक द्रुम कानन दीयौ कपोल दिठौना ॥ भाल बिसाल तिलक गो-

रोचन अलिकावलि अलि छौना ॥ ३ ॥ लटकन लटकि रह्यौं भुव ऊपर, कुलह सुरंग बनी ॥ सिंघ-द्वार तैं उझकि उझकि छबि, निरखत हैं सजनी ॥ ४ ॥ नंद नँदन उन तन चितवतही प्रेम मगन मन आई ॥ कंचन थारु साजि घर घर तैं बहु विधि भोजन लाई ॥ ५ ॥ मनि मंदिर मुढा पै सुंदरि, अपने वसन बिछावैं ॥ बालकृष्ण कौं जो रुचि उपजै अपने हाथ जिमावैं ॥ ६ ॥ जल अच वाइ वदन पौंछत अरु बीरी देत सुधारी ॥ हियैं लगाइ वदन चुंबन करि सरवसु डारति वारी ॥७॥ नैननि अंजन दै लालन कैं म्रगमद खोरि करैं ॥ सुरँग गुलाल लगाइ कपोलन चिबुक अबीर भरैं ॥ ८ ॥ चोवा चंदन छिरकि अबीर गुलालन फेंट भराई ॥ तनक तनक सी मोहन कौं भरि देति कनक पिचकाई ॥ ९ ॥ आपुस माँऊ परस्पर

छिरकति लालन पै छिरकावैं ॥ न्हैंनी न्हैंनी मुठी भराइ रंगन सौं सैनन नैन भरावैं॥१०॥ निरखि निरखि फूलति नँदरानी तन मन मोद भरी ॥ नित प्रति तुम मेरे घर आवो मानौं सुफल घरी ॥ ११ ॥ देत असीस सकल ब्रजबनिता, जसुमति भागि तिहारो ॥ कोटि बरस चिरुजीयो यह ब्रज जीवन प्रान हमारो ॥ १२ ॥ १ ॥ 卐 ॥ टीपारेके पद ॥ ताल धमार ॥ खेलति बसंत गिरिधरन चंद ॥ आनंद कंद बर मनके फंद ॥ ध्रु० ॥ सोहति सँग सुंदरि बैनु बीन ॥ वृषभानु कुँवरि अतिसै प्रबीन ॥ दोऊ छबि के सिंधु तहँ रहति लीन ॥ ललितादि सखीन के नैन मीन ॥ १ ॥ बनी मंजु कुंज जमुनाके कूल ॥ भीने नव केसरि दुकुल ॥ रँग भरति हँसति दोऊ सुखके मूल ॥ तिनें देखि मिटै सब तन की सूल ॥ २ ॥ धिधि धृकुटी धृंग

बाजति मृदंग डि डि डिमक डमक ढफ मिलै है संग ॥ ठठठनन ठनन करै ताल रंग ॥ गग गनन गनन बाजै उपंग ॥ ३ ॥ गावति अलापित तनननन निंदित कोकिल सुर समननन ॥ रँग भरति बलहि करि झिनि ननननन ॥ इन भेर री नेंन इन इनन इन ॥ ४ ॥ रँग भरति परसपरि करति हास ॥ नहिं बरनि जात रसना बिलास ॥ सब बंधी हैं जुगल हित प्रेम पास ॥ बलिहारि गए जहँ 'कृष्णदास' ॥ ५ ॥ १ ॥ 卐 ॥ गोपी जन वल्लभ जै मुकुंद ॥ मुख मुरली नाद आनंद कंद ॥ ध्रु० ॥ जै रास रसिक रवनी सुवेस ॥ सिखिन सिखंड बिराजै केस ॥ गुंजा बन धातु बिचित्र देह ॥ दरसन मन हरन बढावैं नेह ॥ १ ॥ जै सुंदर मंदिर धरनि धीर ॥ ब्रिंदावन विहरति गोप बीर ॥ वनिता सत जूथ जु परम धाम ॥ लावनि कलेवर

कोटि काम ॥ २ ॥ जै वैजंती गर रुरत माल ॥ कमल अरुन लोचन बिसाल ॥ कुंडल मंडित भुज दंड मूल ॥ हरि निरत करति कालिंदी कूल ॥३॥ जै पुलकित खग मृगतर मराल ॥ मधुरि धुनि सुनि मुनि ध्यान टाल ॥ सुरपतिके मूर्छित तान गान ॥ सुनि थकित भए सुर मुनि विमान ॥४॥ जै जै श्री कृष्ण कला निधानु ॥ करुनामै जदुकुल जलज भानु ॥ भगवंत अनंत चरित तोरि ॥ कहैं 'माधो दास' मन मगन मोर ॥ ५ ॥ २ ॥ 卐 ॥ ताल ध्रुपद ॥ निरतति गावति बजावति मधुर मृदंग सप्त सुरन मिल राग हिंडोल ॥ पंचम सुर लै अला-पत उघटत है सप्त तान मान थेई ता थेई ता थेई थेई कहति बोल ॥ १ ॥ कनक बरन टिपारों सिर कमल बरन काछनीं कटि छिरकति राधा करत कलोल ॥ 'कृष्णदास' त्रिंदाबन नटवत

गिरिधर पिय सुर बनिता बारत अमोल॥२॥३॥卐॥

निरतके पद ॥ ताल चरचरी ॥ उडत बंदन नव अबीर बहु कुमकुमा खेलति बसंत बनै लाल गिरिवर धरन॥ मंडित सु अंग सोभा स्याम सोभित ललन मनौं मनमथ बान साजि आए लरन॥१॥ तरनि तनया तीर ठौर रमनीक बन द्रुम लता कुसुम मुकलित सु नाना बरन॥ मधुर सुर मधुप गुंजार करै पीक शब्द रस लुब्ध लागे दुहुं दिस कुलाहल करन ॥२॥ आइ बनि बनि सकल घोख की सुंदरी, पहरि तन कनक नब चीर पट आभरन ॥ मधुर सुर गीत गावैं सुघर नागरी चारु निरतति मुदित कुनित नूपुर चरन ॥३॥ बदन पंकज अधर बिंब सोभित चारु झलकत कपोल अति चपल कुंडल किरन॥ 'दास कुंभन' निनाद हरिदास वर्य धर नंद नँदन कुँवर जुवति

जन मन हरन ॥ ४ ॥ १ ॥ 卐 ॥ ताल ध्रुपद ॥
ऋतु बसंत तरु लसंत मन हसंत कामिनी भामि-
नी सब अंग अंग रमित फागुरी ॥ चरचरी अति
बिकट ताल गावति संगीत रसाल उरप तिरप
लासि तांडव लेत लागुरी ॥ १ ॥ वंदन बूका गु-
लाल छिरकति ताकि नैन भाल लाल गाल मृगज
लेप अधर दागुरी ॥ गिरिवर धारि रसिकराइ मेचक
मुँदरी लगाइ कंचुकी पर छाप दीए चकित नागरी
॥ २ ॥ बाजति रसना मंजीर कूजति पिक मोर
कीर पवन भीर जमुना तीर महल वागुरी ॥
'विस्नुदास' प्रभु प्यारी भेटत हासि देत तारी काम
कला निपट निपुन प्रेम आगरी ॥ ३ ॥ २ ॥ 卐 ॥
ताल धमार ॥ ऐसें नवल लाल खेलति बसंत
जहँ मोहि रहे सब जीव जंत ॥ फूले कुसुम
अनेक रंग उतसै डोलै अनंग ॥ सीतल सुवास

लगे पवन अंग ॥ बोलति पिक चातक मोर संग ॥ १ ॥ ढफ दुंदुभि औ संख भेरि ॥ बिच गावति किंन्नरि टेरि टेरी ॥ नाचति ब्रज गोपी फेरि फेरि ॥ सूर बरखति कुसमन हेरि हेरि ॥ २ ॥ घसि चोवा चंदन अगर घोरि ॥ केसरि कपूर रंग बसन बोरि ॥ ब्रज जुवतिन के चित चोरि चोरि कीने कौतुहल सब पोरि पोरि ॥३॥ जै जै जै बानी प्रकास ॥ सब ब्रज जनके मन भयो हुलास ॥ तहां बडभागी है सूरदास ॥ वह निमष न छांडै हरि कौं पास ॥ ४ ॥ ३ ॥ 卐 ॥ जुबति वृंद सँग स्याम मनोहर खेलति बसंत और ही भाँति ॥ अरुन हरित मुकलित द्रुम मंडल मधुप हलावत अंकुर पांति ॥१॥ तरनि तनया तट पुलिन रम्यमें जहँ तहँ बन कोकिल किलकाँति ॥ पूरन कला रोहिनी बल्लभ उदित मदन कुसुमाकरि राति ॥ २ ॥ बाजति

ताल मृदंग अघोटी बीना बेनु मिलत सुर जाति ॥ उरप तिरप गति अभिनव ललना पग नूपुर मंचित किलकाँति ॥ ३ ॥ बिबिधि सुगंध कुँमकुमा छिर-कति पिय बनिता बनिता पिय गात॥ बिबिध बिहार बिबिध पट भूपन किरनि लजावत उडगन काँति ॥ ४ ॥ मोहनलाल गोबरधन धरि कौं रुप, नैन पीवत न अघात ॥ 'कृष्णदास' प्रभु बानिक नि-रखति व्योम जान ललना ललचात ॥ ५ ॥ ४ ॥ 卐

ताल धमार॥ नवकुंज कुंज कूंजत विहंग ॥ मानौं बाजे बाजति नृप अनंग ॥ द्रुम फुलि रहै सब फ-लनि संग ॥ मधि अति सूबास और बिबिध रंग ॥ १ ॥ जहँ बाजति झालरि ताल संग॥ अघवट आवज बीना उपंग ॥ अरु श्री मंडल महुवरि मृदंग ॥ कहि लाग डाट लै मोरि अंग ॥ २ ॥ धूम धिधि कटि ता धिम ता धिलांग ॥ दोऊ गान लेत निरतत

सुधंग ॥ बूका गुलाल डारति उतंग ॥ बलि 'द्वार केस' छबि जुग त्रिभंग ॥ ३ ॥ ५ ॥ 卐 ॥ ताल चरचरी ॥ नंद नंदन नवल सुभग जमुना पुलिन नवल नागरि मिलि बसंत खेलै ॥ सुखद त्रिंदा विपुन तरु कुसुम झूमका चलति मलय पवन वस करति पेलै ॥१॥ घोष सब सुंदरी सकल सिंगार साजि आई ग्रेह ग्रेह तैं निकस करति केलैं ॥ भई रतिपति विवस मत्त गज गामिनी काम अभिरा-मनी रंग रेलै ॥ २ ॥ ईते बालक तरुन सबै एकत भए करन पिचकाई लिये भुजन ठेलै ॥ लाज ग्रेह कान, तज लाज गुरु जननकी, गारी गावै जुवति वृंद भेलैं ॥ ३ ॥ मदन मोहन रसिक तिने सिखवत बचन जुथ पर जुथ कर पलक पेलैं ॥ देखि विथ-कित भई अमर पुर नायका गिरिधरन मदन रस सिंधु झेलैं ॥ ४ ॥ ६ ॥ 卐 ॥ नंद नँदन बृपभानु नंदनी संग सरस ऋतुराज विहरति बसंते ॥ इत सखा संग

सोभित श्रीगिरिवरधरन उत जुवति जन मधि गथा लसंते॥१॥ सूरजा तट सुभग परम रमनीय वन सुखद मारुत मलय मृदुल बहंते॥ प्रफुल्लित मल्लिका माल्ती माधवी कुहुँ कुहुँ सब्द कोकिल हसंते ॥२॥ विविध सुर ग्राम तीन ग्राम गावत सुघर नागरी ताल कठ-ताल बाजति मृदंगे ॥ बैनु बीना अमृत कुंडली किन्नरी झांझि बहु भांति चंग उपंगे॥ ३ ॥ चंदन सु वंदन अबीर नव अरगजा मेद गोरा साख बहु घसंते॥ छिरकति परसपरि सु दंपति रस भरे करतिं बहु केलि मुसकनि हसंते ॥४॥ देखि सोभा सुभग मोहे सिव विधि तहाँ थकित अमरेस लजित अनंगे॥ 'गोविंद' प्रभु हरिदास वर्य धरि घोप पति जुवति जन मान भंगे॥५॥ ६॥ 卐 ताल ध्रुपद॥ नवल वसंत फूल फूलें॥ गिरिधरि पिय प्रमुदित प्यारी संग विहरति तरनि सुता कुलै॥१॥ कलि कलिका कलि

कोकिल कूजति मिथुन, मधूप अंकूर रस भूलै ॥ 'कृष्ण दास' प्रभू कौतिक सागर सरजति सुर पादप कै मूलै ॥ २ ॥ ६ ॥卐॥ ताल धमार ॥ नवल बसंत कुसमित ब्रिंदाबन मुकलित बन कली ॥ कल कल कोकिल कीर सनादित गुंजत अली ॥ १ ॥ नव जुबती नव रँग पिय सँग करत रंग रली ॥ नबल तमाल मनौ नव बेली बरन वर प्रेम फल सुविधि फली ॥ २ ॥ तांडव, लासि बिहार चलति सप्त सुरन सहित तान चली ॥ सुनि 'कृष्ण दास' विबिध सुगंधन विलसत ऋतु सुख रास भली ॥ ३ ॥ ७ ॥卐॥ नवल वसंत नवल ब्रिंदाबन खेलति नबल गोबरधन धारी ॥ हलधर नवल नवल ब्रज बालक नबल नबल बनी गोकुल नारी ॥ १ ॥ नबल जमुना तट नबल विमल जल नूतन मंद सुगंध समीर ॥ नबल कुसुम नव पल्लव साखा गुंजति नबल मधूप पिक कीर

॥२॥ नव म्रगमद नव अरगजा चंदन नऊतन अंग-सु, नवलअबीर॥ नव वंदन नव अरगजा, कुँमकुमा छिरकति नवल परसपर नीर॥ ३ ॥ नवल वेनु महु-वरि बाजै अनूपम नौतन भूपण नौतन चीर॥ नवल रुपनव 'कृष्ण दास' प्रभुकौं नौतन जस गावति मुनि धीर ॥ ४ ॥ ६ ॥ 卐 ॥ नवल वसंत नवल बिंदावन नवलें फूलें फूल ॥ नवल हे कान्ह नवल सब गोपी निरतत एकें कूल ॥ १ ॥ नवल गुलाल उडे नव बुका नवल बसंत अमूल ॥ नवलें छींट बनी केसरिकी मेंटत मनमथ सूल ॥२॥ नवल ही ताल पखावज बीना नवल पवन कैं फूल ॥ नवलें वाजे बाजत 'सीभट' कालिंदी के कूल॥ ३ ॥ ७॥ ताल धमार ॥ 卐 ॥ बन फूले द्रुम कोकिला बोली मधूप ऊँकारन लागे ॥ सुन भयों सोर रोर बंदी-जन मदन महीपति जागे॥ १ ॥ तिनहु दिनें अंकुर

पल्लव जे द्रुम पैलैं लागे ॥ मानौ रति पति रिझ जाचकन बरन बरन दिये बागे ॥२॥ नए पात नई लता पोहुप नए नए रस पागे ॥ नवल केलि बिलसति मोहन सँग 'सूर' रंग नए अनुरागे॥३॥८॥卐॥ ताल ध्रुपद ॥ त्रिंदावन खेलति हरि जुवति जूथ संग लियै हो हो हो हो होरी सुहाई ॥ दुंदुभी, मृदंग, चंग, आवज, बीना, उपंग, ताल, झांझ, मदन भेरि, मुरली, मुख चंग, ढोल महूबरि गोमुख, सहनाई ॥ १ ॥ म्रगमद चोवा गुलाल केसू केसर रसाल, छिरकति किलकारि देति, गावति गारी सुहाई ॥ निरखति सोभा अपार भूले सुधि बुधि सँभार सिव विरंचि सनकादिक बरखति गुन 'कृष्ण दास' वसंत ऋतु सुहाई ॥ २ ॥ ९ ॥卐॥ त्रिंदा बिपिन नवल वसंत खेलति तरुन नबल बलवीर ॥ व्रज वधू संग मुदित नाचति तरनि तनया तीर ॥१॥ अरुन

तरु मुकलित मनोहर बिबिध द्रुम गंभीर ॥ मधुप बिहंग करत कुलाहल, मलय बहै समीर ॥ २ ॥ अगर कुँमकुम बहुत सौरभ, लसत भुपन चीर ॥ 'कृष्ण दास' बिलास सुखनिधि गिरिधरन गुन गंभीर ॥३॥१४॥卐॥ ताल धमार ॥ मदन गुपाल लाल सब सुखनिधि खेलति बसंत निकुंज देस ॥ जुवतीजन सोभित समूह तहँ पहिरैं भूपन नाना वेष ॥१॥ मुकलित नव द्रुम सघन मंजुरि कोकिल कल कूंजतिबिसेप ॥ फूली नव मालती मनोहर मधुप गुँजारति ता मधेस ॥ २ ॥ बाजति ताल, मृदंग, झांझ, ढफ, आवज, बीना, किन्नरेस ॥ निरतत गुनी अनेक गुन भेर गावत जीय व्हे व्हे आवेस ॥३॥ कुँकुम रँग सौं भरि पिचकाई तकति नैन औ सीस केस ॥ रँग रँग सोभा अंग अंग प्रति निरखि बिरह भाज्यौं बिदेस ॥ ४ ॥ जानति

नहीं जाम घरी बीतति, अति आनंद हिय प्रवेस ॥ 'दास चत्रभुज' प्रभु सब सुख निधि गिरिवरधर व्रज जुबती नरेस ॥ ५॥१०॥卐॥ मधु ऋतु त्रिंदाबन आनंद न थोर ॥ राजति नागरि नब किसोर ॥ जूथिका जुथ रुप मंजरी रसाल ॥ बिथकित अलि मधु लाल गुलाल ॥१॥ चंपक, बकुल, कुल, बिधि सरोज ॥ केतकी मेदनी मुदित मनोज ॥२॥ रोचक रुचिर बहै त्रिबिधि समीर ॥ पुलकित निरतत आनंदित कीर ॥ ३ ॥ पावन पुलिन घन मंजल निकुंज ॥ किसलय सैंन रचित सुख पुंज ॥४॥ मंजीर मुरज ढफ मुरली मृदंग ॥ बाजति मधुर बीना मुख चंग ॥ ५ ॥ मृगमद मलयज कुँकुम अबीर ॥ चंदन अगर सौं चरचित चीर ॥ ६ ॥ गावति सुंदरि हरि सरस धमारि ॥ पुलकित खग मृद बहत न बार ॥७॥ छिन 'हरिवंस' हंस हंसिनी समाज ॥ ऐसें ही करौ

मिलि जुग जुग राज ॥ ८ ॥ १६ ॥卐॥ पाग के पद ॥ तिताल ॥ केसरि सौं भीज्यौं वागौं भर्यौं है गुलाल॥ कहूँ कहूँ कृष्ण अगर सोंहत तन मांहे मन अति ही सुंदर वर बनें नंदलाल ॥१॥ सग्म फूलेल अरगजा, भीने कच ढरकि रही जु पाग अरध भाल॥ 'जगतराइ' के प्रभु मुखहि तंबोल छवि उरस बनी सोहें सुवन माल ॥ २ ॥ १ ॥ 卐 ॥ ताल धमार ॥ खेलति बसंत आए मोहन अपने रंग ॥ करतल ताल कुनित बल अबलि जुवति मंडलि संग॥१॥ मुरज, मंजरी, चंग, महुवरि, बैन, विपान, म्रदंग॥ झालरी, जंत्र, उपंग, यंत्र, धुनि उपजत तान तरंग ॥ २॥ उडति अबीर गुलाल कुँमकुमा केसरि छिरके अंग ॥ गलित कुसुम सिर पागु लट पटी नाँचति ललित त्रिभंग ॥ ३ ॥ कोउ किन्नरि सरस गति मिलवत कोउ चंग॥ 'जन त्रिलोक' प्रभु बिपिन

बिहारी चितवत उदित अनंग ॥ ४ ॥ २ ॥卐॥
खेलति बसंत गिरिधरन लाल॥ जहँ लाग्यो अबीर, गुलाल, भाल॥ १ ॥ केसरि छिरकति नवल बाल॥ लपटावत चोवा अति रसाल॥ २ ॥रही पाग ढरकि अरध भाल ॥ देखति मनमथ अति भयो विहाल ॥ ३ ॥ चंदन लाग्यौ दुहुं गाल ॥ तब मुरलीधर रिझवत गुपाल ॥ ४ ॥ श्री गोबरधन धरि रसिक राइ ॥ 'चत्रभुजदास' बलिहारी जाइ॥ ५ ॥३॥卐॥
पाग चंद्रिका के पद॥ मोहन वदन बिलोकति अखियन उपजत है अनुराग॥ तरनि तपत तलफत चकोर ससि पीवत सुधा पराग ॥ १ ॥ लोचन नलिन नए राजति रति पूरे मधुकर भाग॥ मनौं अलि आनंद मिलैं मकरंद पिवत रस फाग ॥ २ ॥ भँवरि भाग भृकुटी पै चंदन वंदन बिंदु बिभाग॥ ता ताकि सोम मँक्यो घनघन में निरखति ज्यौं बैराग॥३॥कुंचित

केस मयूर चंद्रिका मंडित कुसुम सुपाग ॥ मनौं मदन धनुप सर लीनैं वरखत है बन बाग ॥ ४ ॥ अधर बिंब ते अरुन मनोहर, मोहन मुरली राग ॥ मनौं सुधा पयोध घोर वर ब्रज पै बरखन लाग ॥ ५ ॥ कुंडल मकर, कपोलन झलकत, स्रम सीकर के दाग ॥ मनौं मीन कमल दल लोचन, सोभित सरद-तडाग ॥ ६ ॥ नासा तिलक प्रसून पद्वीतर, चिबुक चारु चित खाग ॥ दारयौं दसन मंद मुसिकावनि मोहत सुर नर नाग ॥ ७ ॥ श्री गुपाल रस रूप भरी है 'सूर' सनेह सुहाग ॥ मनौं सोभा सिंधु बढयौ अति इन सखियन के भाग ॥८॥१॥卐॥ फूल के सिंगार ॥ ताल धमार ॥ फूलन की सारी पैहरै तन ॥ फूलन की कंचुकी फूलन की ओढनी, अंग अंग फूले ललना कैं मन ॥ १ ॥ फूलन के नवकेसरि फूलन की माला फूलन के

आभरन केस गूँथे फूलन घन॥ फूलन के हावभाव फूलन के चोज चाउ बिबिधि बरन फूल्यौं त्रिंदा-वन ॥२॥ श्रीगिरिधरि पिय के फूल नाहीं कोऊ समतूल गावति बसंत राग मिलि जुवति जन ॥ 'कृष्णदास' बलिहारी छिनु छिनु रखवारी अखिल लोक जुवति राधिका प्रान पतिन ॥ ३ ॥ १ ॥卐॥

मुकुट के पद ॥ ताल धमार ॥ देखो त्रिंदावनकी भूमि कौं भागु ॥ जहँ राधा माधव खेलति फागु ॥ ध्रु० ॥ जाको सेस सहस्र-मुप लहै न अंत ॥ गुन गावै नारद से अनंत ॥ जाकौ अगम निगम कहै तेज पुंज ॥ सो तौं हो हो करत फिरैं कुंज कुंज ॥ १ ॥ जाके कोटिक ब्रह्मा कोटिक इंद्र ॥ जाके कोटिक सूरज कोटिक चंद्र ॥ जाकौं ध्यान धरति मुनि रहैं हारि ॥ ताकौं सकल गोपी मिलि देति गारि ॥ २ ॥ सोहै मोर मुकुट सिर तिलक

भाल ॥ ऐसे ललित लोल लोचन विसाल ॥ जाकि चितवनि मुसकनि हंस चाल ॥ लखी मोहि रही सब व्रजकी बाल ॥ ३ ॥ जहँ बाजे बाजति नृति ताल ॥ सुर मंडल महुवरि धुनि रसाल ॥ वीना उपंग मुरली मृदंग ॥ बाजैं राइ गिरगिरी अरु चंग ॥ ४ ॥ जहँ करति कुतुहल गोपी ग्वाल ॥ तहँ उडति अबीर कुँमकुमा गुलाल ॥ ऐसे छांटति छिरकति फिरैं गुपाल ॥ ताते हर हर हरि हँसि भए खुसाल ॥५॥ जाकौं बेद कहेत है नेति नेति॥ जासौं हँसि हँसि ग्वालिनि फगुवा लेति ॥ अद्-भुत लीला अपरंपार ॥ जाकौं सुर नर मुनि करै जय जयकार ॥ राधा जीवन उरकौ हार ॥ ऐसें "मुरली दास" प्रभु करै बिहार ॥ ६ ॥ १ ॥卐॥

रासके पद ॥ ताल धमार ॥ नवल बसंत बीच व्रिंदा-वन मोहन रास रचायौं ॥ सुर बिमान चढि देखन

आए निरखि निरखि सुख पायौं ॥ १ ॥ नाँचति लाल पग नूपुर बाजैं मुरली सब्द सुहायौं ॥ ताल मृदंग, झांझ, ढफ बाजति सब इक तार मिलायौं ॥ २ ॥ साँवल, स्याम, गौर हैं प्यारी मिलि रस-सिंधु बढायौं ॥ गोपी ग्वाल परसपर नाँचति अदभुत रंग जमायौं ॥ ३ ॥ कहा कहौं लीला राधा बरकी किनहुं अंत न पायौं ॥ या लीला पै वार वारनैं "रामदास" जस गायौ ॥४॥१॥卐॥ सहेराके पद ॥ ताल धमार ॥ खेलति बसंत बलभद्र देव ॥ लीला अनंत कोउ लहै न भेव ॥ ध्रु० ॥ सनकादि आदि सुख रचे ग्वार ॥ प्रगट करन ब्रज रज विहार ॥ सुख निधि गिरिधरि धर न धीर ॥ लियो बांटि बांटि ओलिन अबीर ॥१॥ मधु मंगल और सुबल सीदाम ॥ सखा सिरोमनि करत काम ॥ मधु मंगल आदि सकल ग्वाल ॥ बने सब के सिरोमनि नंद-

लाल ॥२॥ रचि पचि लै बहु अंबर बनाइ ॥ बागो बहु केसरि रँगाइ ॥ रही पाग लसि सिर सुरंग ॥ कुँवर रसिक मनि श्री त्रिभंग ॥३॥ सुनति चपल सब उठी हैं बाल ॥ भरि भाजन लीनें गुलाल ॥ हुलसि उठी तजि लोक लाज ॥ लई बोलि सब सखी समाज ॥४॥ काहू की को कोऊ न वदत कानि॥ भरति हितून कौं जानि जानि ॥ ब्रजराज कुँवर वर निकट आइ ॥ नैननि सिराई निरखे अघाइ ॥५॥ चतुर सखी इक हास कीन ॥ दुरि मुरि बचाइ दृग गाँठि दीन ॥ पाछे तैं तारी बजाइ ॥ ब्याह गीत सब उठी हैं गाइ ॥६॥ तब बोले स्याम घन अपने मेल ॥ खिच्यौं चीर तब लख्यौं खेल ॥ लगी लाज चितवैं न और ॥ सखा कहैं आबो गाँठि तोर ॥७॥ सुनति बाल तब चली हैं धाइ ॥ बलभद्र वीर कौं गह्यो जाइ ॥ कटि पटुका पट पीत लीन ॥ भली भाँति

रँग समर दीन ॥८॥ परम पुरुष कोउ लहै न पार ॥ ब्रजवासिन हित सहत गार ॥ 'सूर' स्याम हँसि कहति बैन ॥ भरति नैंन सुख बहुत दैंन ॥९॥ १ ॥卐॥

देखौ राधा माधौ सरस जोरि॥ खेलति बसंत पिय नवल किसोरि ॥ध्रु०॥ इत हलधर संग सब ग्वाल बाल ॥ मधि नायक सोहैं नंदलाल ॥ उत जुवति जूथ अदभुत स्वरुप ॥ माधव नायक सोहैं स्याम अति अनूप॥ १॥ बोहोरि निकसि चले जमुना तीर॥ मानौं रति नायक जीयकौं धीर॥ देखन रति नायक पीय हें जाइ ॥ सँग ऋतु बसंत लै परत पाय ॥२॥ बाजति ताल, म्रदंग, तूरि॥ पुनि भेरि, निसान, रबाब, धुरि ॥ ढफ, सहनाई, झांझ, ढोल॥ हँसत परसपर करत कलोल॥३॥ चोवा, चंदन, मधि कपूर ॥ साख, अगर, अरगजा, चूर॥ जाई, जुही, चंपक, राइ बेलि ॥ रसिकमघनमैं करत केलि ॥४॥ ब्रज बाढ्यो कौतिक

अनंत ॥ सुंदरि सब मिलि कियौ मंत ॥ तुम नंद नंदन कौं पकरि लेऊ ॥ सखी संकरपन कौं मारि देऊ ॥५॥ नवल वधू कीनौं उपाइ ॥ चऊं दिस तें सब चली धाइ ॥ श्रीराधा पकरि स्याम कौं लाइ ॥ सखी संकरपन जिन भाजि जाइ ॥६॥ अहो संकर-पन जू सुनौ बात ॥ नंदलाल छांडि तुम कहँ जात ॥ दे गारी बऊ विधि अनेक ॥ तब हलधर पकरे सखी इक ॥७॥ अंजन हलधर नैंन दीन ॥ केसरि कुँमकुम मुख मंजन कीन ॥ हलधर जू फगुवा आनि देऊ ॥ तुम कमल नैन कौं छुडाइ लेऊ ॥ ८ ॥ जो मांग्यौ सो फगुवा दीन ॥ नवल लाल संग केलि कीन ॥ हँसति खेलति फिरि चले धाम ॥ ब्रज जुवती भई परि पूरन काम ॥९॥ नंदरानी ठाडी पोरि दुआरि ॥ नोछावरि बहु देत वारि ॥ व्रपभान सुता संग रसिकराइ ॥ जन 'मानिकचंद' बलिहारी

जाइ ॥ १० ॥ २ ॥卐॥ केसरि बस्त्र के पद ॥ ताल धमार ॥ बिबिधि बसंत बनाऐं चलौं सब देखन कुँवर कन्हाई ॥ गिरिघटीयां द्रुमलता सुगंध अलि ठाडे साजि सुखदाई ॥ १ ॥ बागों केसरी चोवा सोहै सुरँग गुलाल उडाई ॥ ब्रजबालक गावति कोलाहल धुनि 'ब्रजाधीस' मन भाई ॥२॥१॥卐॥ पीत, लाल बस्त्र के पद ॥ चलरी नवल निकुंज मंदिर मैं बन बसंत बैठे पिय प्यारी ॥ बागो पीत रँग बन्यौं भूपन लाल रँग छबि न्यारी ॥ १ ॥ सारी सुरंग, सोहै छबि नीकी कँचुकी पीत प्रिति अति भारी ॥ करि दरसन सुख केलि "सरस रँग" कुमल विचित्र रँजीत सुखकारी ॥२॥१॥卐॥ दो, तीन तुकके पद ॥ ताल चोताल ॥ अबकैं बसंत न्यारोहि खेलैं मेरीसों न मिलि खेलैं नारी तेरीसौं ॥ दुचित होति कछुं न सुख पइयतु काहु

सौं न मिलि मेरीसौं ॥१॥ देखैंगी जो रंग उपजेंगो परसपर राग रंग नीकें करि फेरीसौं ॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी रंगहीमें रंग उपजै केरीसौं ॥२॥१॥ 卐 ॥ आई ऋतु चहूं दिस फूले द्रुम कानन कोकिला समूह मिलि गावत बसंत ही ॥ मधुप गुंजारत मिलति सप्त सुर भयो है हुलास तनमन सब जंतही ॥ १ ॥ मुदित रसिक जन उमगि भरे हैं नहि पावत मनमथ सुख अंत ही ॥ 'कुंभनदास' स्वामिनी बेगि चलि यह समे मिलि गिरिधर नव कंत ही ॥२॥२॥卐॥ कबकी हों खेलति मोहि सौं अरत हो सबन छांडि मेरी आंखिन भरति हो ॥ रहो हो रहो हो हरि हो हूं न और त्रिय नेकु न टरत हो ॥ १ ॥ नैन मीडि फिरि फिरि मुसिकात जात हों हुं जानति तेसी मोसौं करति हो ॥ 'कल्यान' के प्रभु गिरिधरि रति

पति विबस व्है न डरति हो ॥२॥३॥卐॥ जोबन मोर रोमावली सुफल कला कँचुकी बसंत ढाँपि लै चली बसंत पूजन ॥ बरन बरन कुसुम प्रफुलित अँब मोर ठौर ठौर लागे री कोकिला कूजन ॥ १ ॥ त्रिबिधि सुगंध संभारि अरगजा, गावति ऋतुराज राग सहित ब्रज वधू न॥ 'सूरदास' मदनमोहन प्यारी और पिय सहित चाहत कुसल सदा दुहुं जन ॥ २ ॥ ४ ॥ 卐 ॥ बसंत ऋतु आई अंग अंग सरसाई खेलति रसिक गिरिधरि पिय माई ॥ बन बन फूल रही बनराई मंद पवन लागति सुखदाई ॥ १ ॥ बिहरति लाडिली लाल मनोहर महुवरि म्रदंग धुनि गतियन भाई ॥ यह ऋतुराज केलि रम रह्यौ ब्रज पैं 'सरस रँग' अदभुत छबि छाई ॥ ॥ २ ॥ ५ ॥ 卐 ॥ रँगरँगीलो नंदकौ लाल रँगीली प्यारी ब्रजकी बीथनि मैं खेलति फागु ॥ रँग-

रँगीले सँग सखा गन रँगीली नव वधु तेसोंई जम्यौं रँगीलौ बसंत रागु ॥१॥ रंग रंगकी ओऊट छिरकति हरखि हरखि बरखि अनुराग ॥ 'नंद-दास' प्रभु कांहालौं बरनू बेद हु आपुन मुख कह्यौं यह माननि बडभाग ॥२॥६॥ 卐 ॥ बसंत ऋतु आई आयो पिय घर फूलैं बन उपबन हों फूली सब तन॥ बिरहबिथी गई व्है गई पतऊर भई नई उलही कोमल आनंद घन ॥१॥ मत्त मधुप कुंजन गुंजत मधुर शब्द कोकिल धुनि अलाप गावति सब व्रजजन ॥ 'हरिवल्लभ' प्रभुकी बलि बलि जै कैसे कैं रिझएरी उनकौं मन ॥२॥ ७ ॥卐॥ ताल धमार ॥ अब जिनि मोहि भरो नंदनंदन हों व्याकुल भई भारी ॥ कहत ही कहत कह्यौ नहीं मानत देखे न ए खिलारी ॥ १ ॥ कालही गुलाल पर्‌यौं आंखिनमैं अज हू भरी नई सारी ॥

'परमानंद' नंदके आंगन खेलति ब्रजकी नारी ॥ २ ॥ १ ॥ 卐 ॥ केसरि छींट रुचिर बंदन रज स्याम सुभग तन सोहें ॥ बीच बीच चोवा लप-टानौं ऊपमा कौं याह को हैं ॥१॥ यह सुख ऋतु बसंतके औसर राधा नागरी जो हैं ॥ 'चतुरभुज' प्रभु गिरिधरिनलाल छवि कोटिक मनमथ मोहैं ॥२॥२॥卐॥ खेलति जुगल किसोर किसोरी ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा अबीर गुलाल लिये भरि झोरी ॥ १ ॥ ताल म्रदंग झांझि ढफ बाजति मुरलीकी थोरी ॥ राग बसंत दोहुं मिलि गावत यह सांवल यह गोरी ॥ रिझवत मोहन रँग परसपर सब निरखति मुख मोरी ॥ दास 'गोविंद' कलिंद सुता तट विहरति अदभुत जोरी ॥ ३ ॥ ३ ॥卐॥ गिरिधरिलाल रसभरें खेलति बिमल बसंत राधिका संग ॥ उडति गुलाल अबीर अरगजा छिरकति

भरति परसपर रंग ॥ १ ॥ बाजति ताल म्रदंग अधोटी बीना मुरली तान तरंग ॥ 'कुंभनदास' प्रभु यह बिधि क्रीडति जमुना पुलिन लजावति अनंग ॥ २ ॥ ४ ॥ 卐 ॥ चलनि धरक बन देखि सखि॰ द्विज प्रमुदित पिक बानी ॥ जमुना तीर सघन कुंजन बनि ठाढौ छैल गुमानी ॥ १ ॥ फूले बहु रँग कुसुम परागिन त्रिबिधि पवन सुख सांनी ॥ 'व्रजाधीस' प्रभू सब सुख सागर दृगन सोभा रंग आनी ॥२॥५॥卐॥ चटकीली चोली तन पहैरे बिच चोवा लपटानौ ॥ परम पिये लागति प्यारी कौं अपने प्रीतमकौ बानौ ॥ १ ॥ देखति सोभा अंग अंगकी मनसिज मनही लजानौ 'सुघरराइ' प्रभू प्यारीकी छबि निरखति मोह्यौ गोबरधन रानौ ॥ ॥ २ ॥ ६ ॥ 卐 ॥ छींट छबीली तन सुख सारी प्यारी पहैरे सोहै ॥ नवल लाल रस रूप छबीलौ

निरखति मनमथ मोहै ॥ १ ॥ केलि कला रस कुंज भुवनमैं क्रीडति अति सुख सोहै ॥ 'हरिदास' कै स्वामी स्यामा कुंज बिहारी उपमाकौं कहिए कोहै ॥२॥१॥卐॥ नवल बसंत नवल ब्रिंदाबन नवल लाल खेलति रँग भीनें हो ॥ नई राधिका नई सखीयन सँग नव सिंगार तन कीनें हो ॥ १ ॥ नई नई तान अलापति भामिनि नव केसरि छबि छीनै हो ॥ 'कृष्ण दास' गिरिधारिलाल अब होय रहे आधीनै हो ॥ २ ॥ ८ ॥ 卐 ॥ पटभूपन सजि चली भाँवती चंपक तन मुख चंद ॥ सुबन विविधि फूलै द्रुम वेली मधुप पियत मकरंद ॥ १ ॥ अँग अँगकी छबि कहति न आवै मनसिज मन हि लजानौं ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु रसिक मुकुटमनि राज्यों गोवरधन रानौं ॥ २ ॥ ९ ॥ 卐 ॥ प्यारी कें मुखपर चोवाकौं राजति रुचिर डिठौना ॥

मनौ कमल मकरँद पियनकौं उडि बैठयौं अलि छौंना ॥ १ ॥ तेसेई चपल नैन अनियारे खंजन होत लजौंनां ॥ 'जगन्नाथ कविराइके' प्रभु मुख यह छबि निरखति प्रमुदित नंद ढीठौनां ॥ ॥ २ ॥ १० ॥ 卐 ॥ बन उपबन ऋतुराज देखि मनमोहन खेलति बसंत आई ॥ केसरि सुरँग गुलाल परसपर मुख अंग लपटावति सुखदाई ॥१॥ त्रिबिधि समीर पराग उडावति कोकिल गावति मृदु सरसाई॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु बलि मन मोह्यौं बाजति ताल मृदंग सुघराई ॥ २ ॥ ११ ॥ 卐 ॥ बन्यौ छबिलौ स्याम सखि चलि बंसीबट बसंत सुख-दाई ॥ करि सिंगार आईं, नंदनंदन जल छोरति पिचकाई ॥ १ ॥ कोउ कुसम माल लै आई सुरँग गुलाल कपोल लगाई ॥ 'ब्रजाधीस' प्रभु मृदु बीन बजावति गावति कोकिल सुर सरसाई ॥

२ ॥ १२ ॥ 卐 ॥ स्याम सुभग तन सोभित छींटैं नीकी लागी चंदनकी ॥ मंडित सुरँग अबीर कुँमकुमा और सुदेस रज बंदनकी ॥१॥ 'कुंभनदास' मदन तन धन बलिहार कीयौ नंदनंदनकी ॥ गिरिधरिलाल रची बिधि मनौं जुवतीजन मन फंदनकी ॥२॥१३॥卐॥ श्री राधा प्यारी नवल बिहारी नव निकुजमैं डोलै ॥ सकल सुगंधन मेलै परसपर हो हो होरी बोलै ॥१॥ गावति राग रँग सँगीतन उपजति तांन अतोलै॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुँज बिहारी अति सुख करति कलोलै ॥ २ ॥ १४ ॥ 卐 ॥ हो हो हरि खेलति बसंत ॥ मुकिलित बन कोकिल कल कुजति प्रमुदित मन राधिका कँत ॥ १ ॥ बिबिधि सुगंध छींट नीकी सोभित सुरति केलि लीला लसंत 'कृष्ण दास' प्रभु गिरिधरि नागर ब्रज भामिनि हिलमिल हँसंत

॥२॥१५॥卐॥ निरतके पद ॥ चलि चलिगी बिंदावन बसंत आयौ ॥ फूलि रहे फूलनकैं झौंग मनु मकरंद उडायौ ॥१॥ केकी कीर कपोत अरु खग कुलाहल उपजायौ ॥ नाचति स्यांम नचावति स्यांमा राधा जू राग जमायौ ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुँम-कुमा अबीर गुलाल उडायौ ॥ 'व्यास स्वामिनीकी' छवि निरखति रोम रोम सुख पायौ ॥ ३ ॥ १७ ॥ ॥卐॥ लाल रँग भीने बागे खेलति है री लालन लाहकौ सिर पैच बाँधे ॥ केसरि आड अगर चंद-नकी पिचकाई भरि भरि साँधे ॥१॥ इक गावति इक ताल देति इक रबाब बजावति काँधे ॥ 'सुघ-रराई' कौं प्रभु रस बस करि लीनौं धा धिलंग धूंधे धांधे ॥२॥१८॥卐॥ सरस बसंत सखा मिल खेले अदभुत गति नंद नंदनकी ॥ केसरि म्रगमद और अरगजा बनी कीच सुभ वंदनकी ॥ १ ॥

निरतति मुदित मंडलि कैं मधि कोटि मैंन दुख खंडनकी ॥ 'सूर' स्याम छबि कहाँलौं बरनौ नंद लीला जग वंदनकी ॥२॥१९॥卐॥ परिसिष्ट ॥ ताल धमार ॥ श्री गिरिधरिलालकी बानिक उपर आज सखी तृन टूटै री ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा पिचकाईन रंग छूटै री ॥ १ ॥ लालकै नैना रगमगे दिखियत अंग अनंगन लूटै री ॥ 'कृष्ण दास' धनि धनि राधिका अधर सुधारस घुटै री ॥२॥१६॥卐॥ अरून अबीर जिन डारौ हो लालन दुखति आंखि हमारी ॥ कालहि गुलाल पर्यौ आंखिनमैं अजहू न भई पिय सारी ॥१॥ सब सखियन मिलि, मतो मत्यौ है अबकी बेर पिय देहुं गारी ॥ हाहा खाति तेरै पैयां परति हू अब हों चेरी तिहारी ॥ २ ॥ हिलिमिलि खेलैं हो पिय हमसों, मानौं सीख हमारी ॥ 'धोंधीकै' प्रभु तुम

बऊ नायक निस-दिन रहति हँकारी ॥३॥१७॥卐॥
मान आयौ आयौ पीय यह ऋतु बसंत ॥ दंपति मन
सुख बिरहि नैन अंत ॥ फागु खिलावौ सँग कंत॥ हा
हा करि तृन गहति दंत॥१॥ तुरत गए हरि लै मनाइ॥
हरखि मिलै हरि कँठ लाइ ॥ दुख डार्यौ तुरत हि
भुलाइ ॥ सो सुख दुहूनकै ऊर न समाइ ॥२॥ ऋतु
बसंत आगमन जानि ॥ नारि न राखौ मान
बानि ॥ 'सुरदास' प्रभु मिलै आनि ॥ रस राख्यौ रति
रँग ठानि ॥३॥१८॥卐॥ आयौ जान्यौ हरि जू ऋतु
बसंत ॥ ललना सुख दीनौ तुरंत ॥ध्रु०॥ फूलै बरन
बरन कुसुम पलास ॥ रति नाइक सुख सौं बिलास॥
सँग नारि चहुँ आसपास ॥ मुरली अमृत करति
भास ॥ १ ॥ स्यामा स्याम बिलास इक ॥ सुख-
दाइक गोपी अनैक ॥ तजति नहीं कौउ छिनैक ॥
अलख निरँजन बिबिधि भेख ॥२॥ फागु रँग रस

करति स्याम ॥ जुवती पूरनि करति काम ॥ वासर हू सुख दैति जाम ॥ 'सूरदास' प्रभु कंत काम ॥३॥१९॥卐॥ ऋतु बसंत मुकलित बन सजनी सुवन जुथिका फूली ॥ गुनन गुनन गुंजति दुहुं दिस मधुप मंडली झुली॥१॥ श्रीगोबरधन तट कोकिल कुजति वचनन कर रस मूली ॥ देखि वदन गिरिधरनलाल कौं भई उडुपति गति लुली ॥२॥ ऋतु कुसुमाकर राका रजनी विरहनि नित प्रति-कूली ॥ 'कृष्नदास' हरिदास वर्य धरि केलि कला अनुकुली ॥३॥२०॥卐॥ कुंज विहारी प्यारी के संग खेलति वसंत श्री ब्रिंदावनमैं ॥ गौर स्याम सोभा रस सागर मोद विनोद समात न मनमैं ॥१॥ तन सुखकी चोली कुँमकुम रँग, भीजि लगी न दिखियत तनमैं ॥ उरज उघारेसे अनियारे गडि गये नागर कें लौचनमैं ॥ २ ॥ धाय धरी कामिनी

पिय मोहन हियै लसति ज्यौं दामिनी घनमैं ॥ 'व्यास स्वामिनी' जुवती जुथ मधि प्रतिबिंबति मोहन आनन मैं ॥३॥२१॥卐॥ कुसुमित वन देखन चलौ आज ॥ तहँ प्रगट भयौ रति रंग राज ॥ अति गुंजति कोकिल कल समेत॥ जुवतीजन मन आनंद दैत ॥१॥ राधिका सहित राजति निकुंज ॥ तहँ मदनमोहन सुंदरता पुंज॥ दंपति रति रस गावै हुलास ॥ यह सदा बसौ मन 'सूरदास' ॥२॥२२॥ ॥卐॥ निरतके पद ॥ खेलति मदन गुपाल बसंत ॥ नागरि नवल रसिक चूरामनि सब बिधि राधिका कँत ॥ १ ॥ नैन नैन प्रति चारू बिलोकनि वदन वदन प्रति सुंदर हास ॥ अंग अंग प्रति प्रीति निरंतर रति आगम निस जा हि बिलास ॥ २ ॥ बाजति ताल म्रदंग अधोटी ढफ बांसुरी कुलाहल केलि ॥ 'परमानंद' स्वामी कै संगम नाचति गावति

रंग रेलि ॥३॥२०॥卐॥ खेलि खेलि हो लडेंती राधे हरि कै संग बसंत ॥ मदन गुपाल मनोहर मूरति मिल्यौ है भावतो कंत ॥ १ ॥ कौन पून्य तपकौ फल भामिनि चरन कमल अनुराग ॥ कमल नैन कमलाकौ वल्लभ तुमकौं मिल्यौ सुहाग ॥२॥ यह कालिंदी यह ब्रिंदावन यह तरु वरकी पांति ॥ 'परमानँद' स्वामी संग क्रीडति द्योस न जानि राति ॥३॥ २३ ॥卐॥ घन बन द्रुम फूलै सुमुख निहारै ॥ अंकुर मधि मदमत्त कुमति सखी मिथुन मधुप कुल डारहि डारै ॥१॥ कुहु-कुहु पिक बोलै मदन सिंधु कलोलै बऊ विहँग गावति अति सारै ॥ जुवती जूथ प्रति बिंबति पिय उर मनिगन खचित बिमल बर हारै ॥ २ ॥ गिरिधरि नवरँग सुनि सखी तुव सँग चाहति बसंत विहारै ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु माधव मन हरि

जीति लैहुं रति मंत्र विचारें ॥ ३ ॥ २४ ॥卐॥ चलौ बिपिन देखिए गुपाल संग सोहत नव व्रजकी बाल ॥ ध्रु० ॥ लपटति ललित लता अति गजति तरु तरवर ज्यौं तमाल ॥ जाहि जुही कदंब केतुकी चंपक बकुल गुलाब ॥ १ ॥ कोमल कुल केलि किजे पिय तरनि तानिया के तीर ॥ सितल सुगंध मंद मलयानल बहेतु है त्रिविध समीर ॥ २ ॥ प्रफुलित बकुल विविधि कुसुमावली तुमही गुंथौ पिय माल ॥ 'आसकरन' प्रभु मोहन नागर सुंदर नैन विसाल ॥ ३ ॥ २५ ॥卐॥ छिरकति छींट छबीली राधे चंदन भरि भरि वोरि रे ॥ अबीर गुलाल विविधि रँग सोंधो लोचन परि गई रोरी रे ॥ १ ॥ सरवसव वस कियौ रसिक कुमारी प्रेम फँद हिंडोरी रे ॥ 'सूर' प्रभु गिरिधरन लाल कौं दे रही प्रान अँकोरी रे ॥ २ ॥ २६ ॥卐॥ पीय देखो बन छवि

निहारि बारबार यह कहति नारि ॥ध्रु०॥ नव पल्लव बऊ सुबन रँग ॥ द्रुम वेली तनु भयौ अनंग ॥ भँवरा भँवरी भ्रमत सँग ॥ जमुना करति नाना तरँग बिच पंकज ता माधि भृँग ॥१॥ त्रिबिधि पवन महा हरख दैन ॥ सदा बहति तहँ रहति चैन ॥ 'सूर दास' प्रभु करि तुरत गैन ॥ चलै नारि मन सुखदु मैन ॥२॥२७॥卐॥

फूल फूलैरी चलि दैखन जैए नव बसंत द्रुम वेली ॥ नवरंग मदन गुपाल मनोहर नवल राधिका केली ॥ ऋतु कुसुमाकर राका रजनी मधुप वृंद सब हेली ॥ मनौ मुदित जुवती मंडलमाधि खरजादिक तानन मेली ॥ २ ॥ विविधि विहार विविधि पट भुपन विविधि भांति खेला खैली ॥ मुनि 'कृष्ण दास' सुरति रस सागर गिरिधरि पिय विरहे व्रज पैली ॥ ३ ॥ २८ ॥ 卐 ॥

फूली द्रुम वेलि भांति भांति ॥ मनौ नव बसंत सौभा कही न

जाति ॥ अंग अंग सुख विलसति सघन कुंज ॥ छिनु छिनु उपजति आनंद पुंज ॥ १ ॥ देखि रंग रँगै हरखै नैन ॥ स्रवनन पोखति पिक मधुप बैन ॥ सुख दायक नासा नव अमोद ॥ रसना बउ. स्वादन बहोत विनोद ॥ २ ॥ कुसुमन कुसुमाकर सुहाइ ॥ त्रिविधि समीर हियो सिराइ 'दास चतुरभुज' प्रभु गुपाल ॥ बन बिहरति गिरि-धरनलाल ॥ ३ ॥ २९ ॥ 卐 ॥ त्रिंदावन फूल्यौं नव हुलास गोबरधन गिरि कैं आस-पास ॥ ध्रु० ॥ चलि सजल कदली पुंज झोपि ॥ तरु तरल तरुनता अरुन कोपि ॥ जुवती जन बिह-रति मदन चौंपि ॥ तन मन धन जोवन हरि हैं सौंपि ॥ १ ॥ सित असित कुसुम मंडपन छांह ॥ कल कमोद कुंद मंदार तहाँ ॥ खेलति बसंत गिरि-धरन जहाँ ॥ ब्रपभान सुता कैं कंठ बाँह ॥ २ ॥

भयौ अनंग अंग बिन सिवकैं ताप ॥ सोई फैरि अब स्थिर रही थाप ॥ भइ मगन मिट्यौ अब सब संताप ॥ श्रीवल्लभ सुत पद रज प्रताप ॥३॥ ॥ ३० ॥ 卐 ॥ विहरति वन सरस वसंत स्याम॥ जुवतीजूथ गावै लीला अभिराम ॥ ध्रु० ॥ मुकिलित नूतन सघन तमाल ॥ जाई जुही चंपक गुलाल ॥ पारजात मंदार माल ॥ लपटाति मत्त मधुकरन जाल ॥ १ ॥ कूटज, कदंब, सुदेस ताल ॥ देखि वन रीझै मोहनलाल॥ अति कोमल नुतन प्रवाल ॥ कोकिल कल कूजति अति रसाल ॥ २ ॥ ललित लवंग लता सुवास ॥ केतुकी तरुनी मनौ करति हास ॥ इह भांति लालन करौ विलास ॥ बारनै जाइ जन 'गोविंद दास' ॥३॥३१॥卐॥ सुख मुसकानि मन बसी नवल वर, चितवनि चित हरि लीनौ ॥ कुंजनि केलि रहसि रस बरखति और

अरगजा भीनौ ॥ १ ॥ अवीर अगर मन वग्न विराजति राग वसंते कीनौ ॥ 'हरिदास' के स्वामि स्यामा कुंजविहारी देखौ मैंन मन हीनौ ॥ २ ॥ ॥३२॥卐॥ रतनजटित पिचकाई कर लिए भरति लालकौं भावै ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा विविधि बुंद वरखावै ॥ १ ॥ कवहुंक कटि पटि बाँधि निसंक लौं लै नवला सीधावै ॥ मनौ सरद चंद्रमा प्रगट्यौ ब्रजमंडल तिमिर नसावै ॥ २ ॥ उडति गुलाल परसपर आँधी रह्यौ गगन लौं छाई ॥ 'चतुरभुज' प्रभु गिरिधरन लाल छवि मोपै वरनी न जाई ॥ ३ ॥ ३३ ॥卐॥ ऋतु वसंत स्याम घर आए तन मन धन सब वारौं ॥ लै गुलाल और अँगन छिरकौं पलकन सौं मग झारौं ॥ १ ॥ चोवा चंदन और अरगजा सब सखियन पै डारौं ॥ उडति गुलाल लाल भए

बादर भरि पिचकारी मारौं ॥ २ ॥ खेलौंगी मैं चतुर पियासौं आय बसंत सँवारौ ॥ 'सूरदास' अनहीतन के मुख सब भूपन भरि डारौं ॥ ३ ॥ ॥३४॥卐॥ लाल गुपाल गुलाल हमारी आँखिन मैं जिन डारौ जू ॥ वदन चँद्रमा नैन चकोरी इन अंतर जिन पारौ जू ॥ १ ॥ गावौ राग बसंत परसपर अटपटे खेल निवारौ जू ॥ कुँकुम रँगसौं भरि पिचकारी तकि नैनन जिन मारौं जू ॥२॥ बंक विलोचन दुखकै मोचन भरिकै दृष्टि निहारौ जू ॥ नागरी नायक सब सुखदायक 'कृष्ण दास' कौं तारौ जू ॥ ३ ॥ ३५ ॥卐॥ सुनि प्यारी कै लाल बिहारी खेलनि चलौ खेलैं ॥ चंदन वंदन अरु अग्गजा कुँकुम रस लै पेलै ॥ १ ॥ लिए अबीर अरगजा कुंज कुंज मैं केलैं ॥ तुम हमकौं हम तुमकौं लिरकैं रँग परसपर झेलै ॥ २ ॥

मलय समीर रसति अलि दंपति लूमन पाद पद्मजा याती ॥ ब्रिंदा बिपिन तरनि तनया तट सुखद चँदकी राती ॥ २ ॥ बिहरति सखी जूथ लै पिय सँग बाँधी प्रेमकी गाती ॥ सुरति बिलास गुन रासि राधिका 'रसिक' कँठ लपटाती ॥३॥ ॥ २ ॥卐॥ नवल बसंत फूली जाती ॥ पिक कुहु कुहु स्याम गुपालह भावै अँब डार मधु-माती ॥ १ ॥ इहि औसर मिलि लाल गिरिधरि सौं बाँधी प्रेम गुन गाती ॥ "कृष्ण दास" स्वामिनी राधिका सुरति केलि रँग राती ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥卐॥ रहो रहो बिहारी जू मेरी आँखिनमैं बूका जिन मेलौ ॥ अंतर व्है मुख अवलोकनकौ ॥ और भाँमती तिहारी भिल्यौ चाहै मिस करि पैंया लागौं पलपलकौं ॥ १ ॥ गावति खेलति जो सुख उपजति सो न कोटि बल है जुवतीनकौं ॥ हरि-

दासके स्वामी कौं हँसति खेलति मुख कहँ पाइ-
यत है यह सुख मनकौं ॥ २ ॥ ४ ॥卐॥ सब अंग
छींटै लागी नीको बन्यौं बान ॥ गोरा अगर अर-
गजा छिरकति खेलति गोपी कान्ह ॥१॥ हाथन
भरै कनक पिचकाई भरि भरि दैति सुजान ॥
सुर नर मुनि जन कौतिक भूलि जय जय जदु कुल
भान ॥२॥ ताल पखावज बेनु बांसुरी राग रागिनी
तान ॥ विमला "नंददास" वलि वंदित नहि उप-
माकौं आन॥३॥५॥卐॥ ताल चोताल॥ आई बसंत
ऋतु अनूप नूत कंत मोरै ॥ बोलति बन कोकिला
मनों कुहु कुहु रस ढोरै ॥१॥ फूली बनराइ जाइ
कुंद कुसम घोरै ॥ मद रस कै मातै मधुप फिरति
दौरे दौरै ॥२॥ हम-तुम मिलि खेलैं लाल कुंज
भवन चौरे ॥ 'गोविंद' प्रभु नंद सुवन खेलति
ईक ठौरे ॥ ३ ॥ १ ॥ 卐 ॥ इत हि कुँवर कान्ह

कमल नैंन, उतहि जुवती जहँ सकल ब्रजबासी ॥ खेलति वर बसंत बांनिक सौं, बरनौं कहा छबि प्रगट भई मनौं काम कलासी ॥ १ ॥ भरि भरि गोद अबीर उडावति निविड तिमिर मैं यौं राजति ठौर ठौर ससी प्रभा कलासी ॥ 'कल्यान' के प्रभु गिरिधरन रसीक वर तरु तमाल सँग लपटानि हैं कनक लतासी ॥२॥२॥ 卐 ॥ उमँगी ब्रिंदाबन देखौं नवल-वधु आवै ॥ आज सखी ब्रजराज कौं बसंत लै वधावै ॥१॥ चारु चंदन चरचित अरचित तिलक दै सिर नावै ॥ देखति सुख लागति नीकौं बृँद बृँद गावै ॥ २ ॥ कुंज भवन ठाढे हरि सुनि सुनि सचु पावै ॥ "छीत स्वामि" गिरिधरन श्रीविट्ठल ब्रजजन मन भावैं ॥ ३ ॥ ३ ॥ 卐 ॥ निरत ॥ ऋतु बसंत ब्रिंदाबन फूलै द्रुम भाँति भाँति, सोभा कछु कही न जात, बोलत पिक मोर कीर ॥ माधुरी

गुलाब कमल, बौलसरी कुंद अमल, राइबेलि मौंन जुही भँवर पुंज, करति गुंज, सघन कुंज, जमुना तीर ॥ १ ॥ खेलति गिरिधरनलाल, संग राधिका रसाल, छिरकति केसरि गुलाल, चोवा मृगमद अबीर॥ 'कृष्ण दास' हित विलास, निरखति मन अति हुलास, बाजति थेई थेई मृदंग बाँसुरी उपंग चंग झांझ झालरी मंजीर ।२।२१।१५०।卐। ऋतु बसंत ब्रिंदाबन बिहरति ब्रजराज काज साजै द्रुम नव पल्लव प्रफुल्लित पोहोपन सुवास ॥ कलापी, कपोत, कीर, कोकिल, कमनीय कंठ कूजति स्रव-नन सुनति होत है हो हिय हुलास ॥ १ ॥ तेसौंई त्रिबिधि पबन बहति तेसौंई सीतल सुगंध मंद रँग उपजति है हो अति उलास ॥ प्रभु 'कल्यान' गिरिधर, उत जुवति जूथ माधि राधा, केसरि छिर-कति अबीर गुलाल उडावति आवति है हो करैं

रंग रास ॥ २ ॥ ५ ॥卐॥ एतो ऊक ऊोरति सोंधे ब्रोरति हे गोरी सुखकारी ॥ हा हा बिहारी बलाई लैंहु तुम खेलौ क्यों न सम्हारी ॥१॥ केसरि कनक कमोरी भरि भरि लै लै देति पिय पर ढोरी ॥ सकल कोमल गात रसिक तुम देखौ जियन विचारी ॥२॥ सखी वृंद मनमोहन गहि घेरैं, भरि लीनें अँक-वारी ॥ प्यारी बोहोत अरगजा भिजयै 'रिपिकेस' बलिहारी ॥ ३ ॥ ६ ॥卐॥ कुच गडुवा जोवन मोर कंचुकि बसन ढाँपि राख्यौ है बसंत ॥ गुन मंदिर अरु रूप बगीचा तामधि बेठी है मुख लसंत ॥१॥ कोटि काम लावन्य बिहारी जू जाहि देखैं ते सब दुख नसंत ॥ ऐसे रसिक 'हरिदास के स्वामी' ताहि भरनि आई प्रभु हसंत ॥ २ ॥ ७ ॥卐॥ खेलै खेलिरी कान्हर त्रियन फुलवारी मैं छिरकी छिरकि रंग भरति यों सुख करै ॥ अति उत्तम

चंदन बंदन लीनैं और अरगजा करी कैं एेमे अनुराग छिरकि छिरकि तरुनी विहरै ॥ १ ॥ एक कर पोहोप माल गरे मेलति दूजे मोर धग-वति कोऊ धूप अधर लै सुवास करै ॥ हरिदास कैं स्वामी स्यामा कुंज बिहारी तीन लोक जाकैं बस सो राधा के मुख पै अबीर डरप कैं धरैं॥ २ ॥ ॥ ८ ॥卐॥ नवल बसंत उनए मेघ मोरकि कुह-कनी ॥ पिक बानी सरस बनी कुहु कुहुकु होकनी ॥ १ ॥ दंपति मधुपनकी पाँति अंकुर महूकनी ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु गिरिधर मदन जिति कोकिला टहुकनी॥२॥९॥१५५॥卐॥बनि बनि खेलनि चली कमल कली विकास लस ब्रजनारी ॥ अपने अपने ग्रेह तैं निकसी एक ठौर भई सकल फूलि मनौं वारी फूलवारी ॥ १ ॥ तरु तमाल लाल ढिग ठाढे राजत चहुं दिस तैं कनक बेलि गोपी भरति

भाजति मनौं पवन डुलाए आगै पाछैं होत जोबन वारि ॥ 'सूरदास' मदनमोहन अँग संग बसंत सोभित अनंग अदभुत वारि सँवारि ॥ २ ॥

॥ १० ॥卐॥ ब्रिंदाबन बिहरति ब्रज जुवती जुथ संग फागु ब्रजपति ब्रजराज कुँवर परम मुदित ऋतु बसंत ॥ चोवा मृगमद अबीर, छिरकति भरि कुसुम नीर, उडवति वंदन गुलाल निरखि निरखि मुख हसंत ॥ १ ॥ फूलै बन उपबन लखि वृक्ष बेलि पुहुप पुंज गावति पिक, मोर, कीर उपजति अति सुख लसंत ॥ करति केलि ऋतु बिलास "छीत स्वामी" गिरिवरधारि श्रीविट्ठलेस पद प्रताप सुमरति दुख नसंत ॥ २ ॥ ११ ॥ 卐 ॥

हो हो बोलै हरि धुनि बन गाजी ॥ नूपुरु किंकिनी सुरसौं मिलवत सुनि सखी मधुर मुरली दुहुं दिस बाजी ॥ १ ॥ कुहुकुहु पिक बोलै मधुप

ही हिये कलोलैं बिबिधि भाँति मुकुलित द्रुम राजी ॥ उडति कपूर धूरि रही है गगन पूरि गोकुल सुंदरी सँग रास केलि साजी ॥ २ ॥ गिरिधरि पिय प्रमुदित क्रीडा बस मरकत मनि पीक लीक राजी ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु प्रान प्यारी कैं बिनोद हित मदन दूत केलिकैं जीति रति बाजी ॥ ३ ॥ १२ ॥ 卐 ॥ ताल सुरफाग ॥ प्यारे कान्हर हो जो तुम आंखिन भरो जू ॥ ऐसे वदि खेलौ खेलि अब कैं बसंत मोसौं सोंह जू करो जू ॥१॥ हौं कहि लैत बात भूलि जिन जाओ औरकैं खिलायवैकों हरि जिन हरो जू ॥ 'कल्यान के प्रभु' गिरिधर निधरक काहू धाय जिन धरो जू ॥ २ ॥ १ ॥ 卐 ॥ ताल आडचोताल ॥ देखौं नवल बनें नवरंग ॥ नवल गिरिधरलाल सुंदर नवल भांमिनि सँग ॥ १ ॥ नवल बसंत नवल ब्रिंदावन

नवल है प्रथम प्रसँग ॥ नवल विटप तमाल कैं बीच नवल सुरत तरँग ॥२॥ नवल केसु फूलै प्रफुलित नवल स्यामा अंग ॥ नवल ताल पखावज बाँसुरी नवल बाजति चँग ॥ ३ ॥ नवल मुक्ताहार उर पै निरखि लजति अनंग ॥ 'सूर' नवल गुपाल हि निरखति भई मनसा पंग ॥४॥१॥卐॥

। ताल चौताल या ध्रुपद । ऋतु बसंत कुसुमित नव बकुल मालती ॥ कुरव मल्लिका जुथ गुंजति बहु अलि पांति ॥ १ ॥ कुजत कलकल हँस केकि मिथुन कीरा ॥ बहत मलय पवन विमल सुरभि जमुना तीरा ॥ २ ॥ गावति कल गीत जुवती बोलति हो हो होरी ॥ केसरि मृगमद कपूर छिरकति नवगोरी ॥ ३ ॥ मनि नूपुर कर किंकिनि कंकन धुनि सोहै॥'हरिजीवन' प्रभु गिरिवरधर त्रिभुवन मन मोहै ॥ ४ ॥ १ ॥卐॥ क्रिडति ब्रिंदाबन चंद

ब्रज जुवतिन संगे ॥ भाव पूरि भरित नैंन सुचित भुव भंगे ॥ १ ॥ इक रूप सुधा सिंधु नेन खची पीवे ॥ इक अंग रस भरि भुजा लाइ रही ग्रींवे ॥ २ ॥ इक लेति तँबोल अधर छुवावैं ॥ इक अँक भरति इक आप अँक आवैं ॥ ३ ॥ इक बेन सुर समान उघटि तान गावै ॥ इक कुचन मँडलमें चरन कमल जावैं ॥ ४ ॥ चुंबति इक वदनकमल चिबुक गहे बाला ॥ इक उरज कुँम-कुमतैं चरचत बन माला ॥ ५ ॥ इक नीवी मोचन भए सचिकित भए नैंना ॥ इक नैंन देति पैलैं इक कहति बेना ॥ ६ ॥ इक चलित पवन ललित अँचरन सह्मारै इक ॥ सिथल बसन केस लाज तजि निहारै ॥ ७ ॥ स्याम द्रुम रसाल बाला कोकिल श्रम कुंजे ॥ 'रसिक' मनोरथ राधे राधे सम पूजे ॥ ८ ॥ २ ॥ 卐 ॥ राधे जू आज बन्यौ

है बसंत मनौ मदन बसंत विहरत, नागरी नव कंत ॥ १ ॥ मिलत सनमुख पाटलीपट, मत्त मान जुही ॥ बेली प्रथम समागम कारन, मेदनी कच गुही ॥ २ ॥ केतुकी कुच कलस कंचन, गैरे कंचुकि कसी ॥ मालती मद बिसद लोचन निरखि मृदु मुख हँसी ॥ ३ ॥ बिरह व्याकुल कमलनी कुल, भई वदन विकास ॥ पवन परिमल सहचरी पिक गान हृदय बिलास ॥ ४ ॥ उत सखी चंपक चतुर कदम नुतन माल ॥ मधुप मनि माला मनो-हर 'सुर' श्री गुपाल ॥५॥३॥卐॥ तिताल ॥ मधु ऋतु त्रिंदावन माधवी फूली ॥ विटप पाँति सुहाई सोभा बरनी न जाई गंध लुब्ध अलि मंडली भूली ॥१॥ कोकिल कपोत कीर मधुप बिहँग बीर गावति बसंत राग अनुकुली ॥ नाचति केकी सुठान छटी जत लेति मान सुभग वंदि निस सारस मूली ॥२॥

तरनि तनया तट निकट बंसीबट जोरी एकसी नहीं कहूं समतूली ॥ मलय पवन सेव नाम लीन कुंज देव सुरत सँगम सुख हिंडोरे झूली ॥३॥ मृगमद अबीर गुलाल कुँमकुमा चंदन बनी कपुर धूली ॥ बाजति ताल मृदंग आवज बैन उपंग बोलति हो हो होरी लाज कंचुकी खूली ॥ ४ ॥ खेलति राधिका नाथ अनंत जुवतीन साथ विविध भूपन बऊ रँग दुकूली ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु हरि गोवरधनधरलाल निरखि मन उडपति गति भई लूली ॥ ५ ॥ १ ॥ 卐 ॥ मोह्यौ मन आजु सखी मोहन बल वीर ॥ मधुर-मुरली सुर गावति सकल जमुना तीर ॥ १ ॥ कनक कपिस अति सोभित कटि तट वर चीर ॥ मानिकि हूति ओढनी साँवल सरीर ॥२॥ सखि सिखंड सिर सिंधु मुदित भेप अभीर ॥ मुकलित नव त्रिंदावन कूजति

पिक कीर ॥३॥ "कृष्ण दास" प्रभु कै हित त्रिगुन वहै समीर ॥ गिरिवरधर जुवतीन सँग बिहरति रति रनधीर ॥४॥२॥१६५॥卐॥ ताल धमार॥ श्रीत्रिंदाबन खेलति गुपाल बनि बनि आई ब्रज की बाल ॥१॥ नवल सुंदरि नव तमाल ॥ फूलै नवल कमल माधि नव रसाल ॥२॥ अपने कर सुंदर रचित माल ॥ अवलंबित नागर नंदलाल ॥३॥ नव गोप वधू राजति हैं सँग ॥ गज मोतिन सुंदर लसति मंग ॥४॥ नव केसरि मेद अरगजा घोरि ॥ छिरकति नागरि कौं नव किसोर ॥५॥ तहँ गोपी ग्वाल सुंदर सुदेस ॥ राजति माला विविधि केस ॥६॥ नंदनंदन कौ भुव बिलास ॥ सदा रहौ मन 'सूरदास' ॥७॥१॥卐॥ अदभुत सोभा त्रिंदावनकी देखो नंद कुमार ॥ कंत वसंत आवत जानि बन बेलीन कीये हैं सिंगार ॥१॥

पल्लव बरन बरन तन पहरै बरन बरन फल फूल॥ ऐतो अधिक सुहाए लागति मन अभरन सम-तूल ॥ २॥ बालक बिहँग अनंग रँग भरि बाजति मनौं बधाई ॥ मंगल गीत गाइवेकौ जानो कोकिल बधु बुलाई ॥ ३ ॥ बहति मलय मरुत परिचारक सबकै मन संतोपे ॥ द्विज भोजन सौं होति अलीनकै मधु मकरँद परोसे ॥ ४॥ सुनि सखी बचन 'गदाधर' प्रभुकै चलौ पीतमपै जइए ॥ नव निकुंज महल मंडप मैं हिलिमिलि पंचम गैए ॥५॥२॥卐॥ आजु सांवरो घोप गलि-नमैं खेलति मोहन होरी ॥ संग सखी लीए राधिका बनी है अनुपम जोरी ॥ १ ॥ बाजति ताल मृदंग छंदसौं बीच मुरलीकी थोरी॥ अरस परस छिरकति छिरकावति मोहन राधा गोरी ॥२॥ अबीर गुलाल उडाति बूका रँग जोरी भरै

भरि कोरी ॥ केसरि रँग सौं भरि पिचकारी मारति हैं मुख मोरी ॥ ३ ॥ छल बल सौं करि आंखि अंजावति लोक लाज सब तोरी ॥ लूटति सुखकी सीवां सब मिल 'परमानँद' कहति निहोरी ॥ ४ ॥ ३ ॥ 卐 ॥ आयौ आयौरी यह ऋतु बसंत ॥ मधुकरन मधु बन वसंत ॥ दे दे तारी तिय-मन हँसत ॥ मलय मृगज केसरि घसंत ॥ १ ॥ खेल मच्यो ब्रजपुरकैं मांऊ ॥ कोउ गिनति न भोर मध्यान्ह साँऊ ॥ बाजे मुरज ढफ बीन ऊांऊ ॥ उडति गुलाल अबीर तांऊ ॥ २ ॥ गिरिधर पिय जलजंत्र हाथ ॥ वल्लव वल्लवी भोर साथ ॥ गावति गुन मधु माधो गाथ ॥ निरखि मुरझि परयौ रतिकौं नाथ ॥ ३ ॥ नित उठि घोस बिनोद बात ॥ पसु पंछी फूलै न मात ॥ प्रतिबिंबति रवि ससि पात पात 'विष्णुदास' चरन बलि जात जात ॥४॥४॥卐

कुसुमित कुंज बिपिन ब्रिंदाबन चलीए नंदके लाला ॥ पाडर जाई जुही केतुकी चंपक बकुल गुलाला ॥ १ ॥ अँब दाख दाडिम नारँग फल जांबू परम रसाला ॥ अरु बहुत फूल द्रुम दिखि-यतु कहति मुदित ब्रजबाला ॥ २ ॥ कोकिल कीर चकोर मोर खग जमुनातट निकट मराला ॥ तिगुन समीर बहति अलि गुंजति नीकी ठौर गुपाला ॥ ३ ॥ सुनि मृदु बचन चलै गिरिवरधर कटि तटि किंकिनि जाला ॥ नाना केलि करति सखी-यन सँग चंचल नैन बिसाला ॥ ४ ॥ तहँ बीनत कुसम राधिका भामिनी ग्रथित मनोहर माला ॥ 'कृष्ण दास' प्रभुके उर मेलति भेटति स्याम तमाला ॥५॥५॥१७०॥卐॥ खेलति गिरिधर रगमगे रंग ॥ गोप सखा बनि बनि आए हैं हरि हलधर के सँग ॥ १ ॥ बाजति ताल मृदंग झांज ढफ मुरली

मुरज उपंग ॥ अपनी अपनी फैंटन भारि भारि लिए गुलाल सुरँग ॥ २॥ पिचकाई नीकै करि छिरकति गावति तान तरँग ॥ उत आई ब्रज वनिता बनि बनि मुक्ता फल भारि मँग ॥ ३ ॥ अचरा उरसि फैंट कँचुकी कसि राजति उरज उतंग॥ चोवा चंदन वंदन लै मिलि भरति भामते अंग ॥ ४ ॥ किसोर किसोरी दुहूं मिलि विहरति इत रति उतही अनँग ॥ 'परमानंद' दौऊ मिलि विलसति केलि कलाजू निसँग ॥ ५ ॥ ६ ॥ 卐॥

खेलति गुपाल सखीन सँग ॥ नवनव अँबर रँग रँग ॥ ध्रु० ॥ मुरली वेन ढफ नए चँग ॥ मधि नई कुहूक बाजे उपंग ॥ सुर समूह नई नई तरँग ॥ जहँ नई नई गति उपजति मृदंग ॥ १ ॥ मृगमद लपटै चंदन सुगंध॥ केसरि कुँमकुम मलय मकरँद ॥ हुलसि जुवति वर वृंद वृंद ॥ लीनै

लपेटि आनंद कंद ॥ २ ॥ उडी परसपर अरुन रूँदि ॥ दुरत भरति मुख नैंन मूंदि ॥ घूंघटमैं मुख लसति मंद ॥ मनौं अरुन जलधिमैं दुरे चँद ॥ ३ ॥ सखी इक तब कियौ वंद ॥ चतुर बोलि सिखयौ सुछंद ॥ पिय नाम टेरि कह्यौ नँद नँद ॥ रहो रहो भरौ जू नागर नँद ॥ ४ ॥ हाथ झारि हरि कौं दिखाइ ॥ चोलीमैं सोंधो दुराइ ॥ तियन अँक हँसिकैं बताइ ॥ गहे तब हि सब परी हैं धाइ ॥ ५ ॥ कोउ निरखति लोचन अघाइ ॥ कोउ आन दृग आँजति सिराइ ॥ कोउ मुख पकरि रोरी फिराइ ॥ कोउ कहति भले हो स्यामराइ ॥ ६ ॥ विवस प्रेमवस स्यामलाल ॥ मन भायौ सब करति बाल ॥ भरति अँक भरि भरि गुपाल ॥ 'सूरदास' तहँ कामपाल ॥ ७ ॥ ७ ॥ 卐 ॥

खेलति पिय प्यारी सौंधें भरि भरि लीए कनक

पिचकारी ॥ छल करि छिरकति भरति परसपर देति दिवावति गारी ॥ १ ॥ छीनि लई मुरली प्रीतमकी रंग बढावति भारी ॥ चोवा चंदन बुका वंदन कुँवरि कुँवर पै डारी ॥ २ ॥ केसरि आदि जवादि कुँमकुमा भींजि रही रँग सारी ॥ देति नही डहकावति सुंदरि हँसति करति किलकारी ॥ ३ ॥ फगुवा देहुं लेहु पिय मुरली कैं कहो कुँवर हाहारी ॥ बरनौं कहा कहति नहि आवै बढयौ सुख सिंधु अपारी ॥ ४ ॥ इत मोहन हलधर दोऊ भैया उत ललिता राधा री ॥ हित 'हरि बंस' लेहु किन मुरली तुम जीते हम हारी ॥ ५ ॥ ८ ॥ 卐 ॥ खेलति फागु नंदके नंदन सखा सँग सब लीनै ॥ अबीर गुलाल अरगजा चौवा केसरि कैं रँग भीनै ॥ १ ॥ उत आई वृषभान नँदनी सखी

सँग सब लाई ॥ मनौं सुक्ल कृष्ण पक्ष एक
व्है प्रगट ही देति दिखाई ॥ २ ॥ हाटक रत्न
जटित पिचकाई लै धाए सब ग्वाल ॥ छिर-
कति जाए जुबति वृंदन पै ताकि ताकि नैंन
बिसाल ॥ ३ ॥ ठाडी सकल नवल ब्रज सुंदरि
करति कुलाहल सोर ॥ मनौं सुभट मदन कैं
रनमैं रहे अपने जोर ॥४॥ चंपक वकुल केतकी
जाती कुंद मल्लिका फूली ॥ गुनुनु करति द्वि-
रेफ मंडली सबहिन के अनुकूली ॥ ५ ॥ बीन
रबाब बाँसुरी आवज झांझ ताल मुख चंग ॥
भेरी पटह अघोटी महुवरि बाजति सरस
मृदंग ॥ ६ ॥ खेल परसपर बढ्यौ अति भारी
हरखे सुर नर देव ॥ अदभुत ऋतु अदभुत
यह सोभा कोउ न जानै भेव ॥ ७ ॥ कोक
कला अभिज्ञ कौस्तुभधारि निरखि लजति सत-

मार ॥ ' गोकुल चंद ' सुखद रस जीवन गोपीन के उरहार ॥ ८ ॥ ९ ॥ 卐 ॥ खेलति बन सरस बसंत लाल ॥ कोकिल कल कूजति अति रसाल ॥ जमुना तट फूलै नव तमाल ॥ केतकी कुंद नुतन प्रवाल ॥ १ ॥ तहँ बाजति बीन मृदंग ताल ॥ बिच बीच मुरली अति रसाल ॥ नव सत सजि आईं ब्रजकी बाल ॥ साजै भूपन बसन तिलक भाल ॥२॥ चोवा चंदन अरु गुलाल ॥ छिरकति प्यारी तकि तकि गुपाल ॥ आलिंगन चुंबन देति गाल ॥ पहरावति उर फूलनकी माल ॥ ३ ॥ यह बिधि क्रीडति ब्रज नृप कुमार ॥ सुमन वृष्टि करि सुर अपार ॥ श्रीगिरिवरधारि मन हरत मार ॥ "कुंभन दास" बलि बलि बिहार ॥ ४ ॥ १० ॥ १७५ ॥ 卐 ॥ खेलति बसंत श्रीनंदलाल ॥ भरै रँग सब ग्वाल

बाल ॥ ध्रु० ॥ जूथ जूथ सब नवल बाल ॥ सजि समाज उडति गुलाल ॥ गावति पंचम सरस राग ॥ रुप सील भरी सब सुहाग ॥१॥ नव केसरि भाजन भराइ ॥ चंदन सौं म्रगमद मिलाइ ॥ बहु गुलाल छिरकैं फुलेल ॥ कुंवर कुंवरि रँग बढी केलि ॥ २ ॥ लाल हि ललना भरैं धाइ ॥ मुख गोरी मांडैं बनाइ ॥ भलें जू कहै तारी बजाइ ॥ भले तियन बस परैं हो आइ ॥ ३ ॥ अंग अंग रँग सब सुहाइ ॥ पिय लोचन निरखैं अघाई ॥ विलसति सुख वडभाग वाम ॥ सुखी भए तहँ 'सूर' स्याम ॥ ४ ॥ ११ ॥ 卐 ॥ खेलति बसंत श्रीत्रिंदावन मैं मोहन कैं सँग प्यारी ॥ गौर स्याम सोभा सुख सागर प्रीति बढी अति भारी ॥ १ ॥ चोवा चंदन बूका वंदन अबीर गुलाल उडावति न्यारी ॥ कंचन

कलस लियैं जुवती, कर मारति भरि पिच-
कारी ॥ २ ॥ ताल मृदंग झांझ ढफ बाजति
बीना धुनि रस सारी ॥ खेलति फागु भाग भरि
गोपी रसिकराइ गिरिधारी ॥ ३ ॥ स्यांम सुभग
तन नील सरोवर कमल फूली सब व्रजकी नारी ॥
'कृष्ण दास' प्रभु या छबि उपर त्रिभुवन कौं सुख
बलिहारी ॥ ४ ॥ १२ ॥卐॥ खेलति बसंत गोकुल
कैं नायक जुवतीजन कैं मंडल बीच ॥ सुरँग
गुलाल उडाइ अरगजा कुँमकुमकी जहँ कीच ॥१॥
हाथन लिए कनक पिचकाई छिरकति आपुस
मांझ ॥ तेसौंई सुरँग रँग केसरि कौं मनौं फूली सांझ
॥ २ ॥ श्रीमंडल आवज ढफ बीना झांझ
झालरी ताल ॥ पटह मृदंग अधोटी महुवरी
बाजति बेनु रसाल ॥ ३ ॥ रविकल कुल कोकिल
अति कूजति चहुं ओर द्रुम फूलै ॥ तेसौंई

सुभग तीर कालिंदी देखति सुर नर भूलै ॥ ४ ॥ यह विधि सब मिलि होरी खेलै मन मैं अति आनँद ॥ गोबरधनधर रूप उपर जन वलि वलि 'गोकुल चँद' ॥५॥१३॥卐॥ निरत ॥ खेलति बसंत राधा प्यारी ॥ नाँचति गावति बेन वजावति अंस भुजा धरें कुँज बिहारी ॥ १ ॥ साखि जवादि कुँमकुमा केसरि छिरकति मोहन झूमक सारी ॥ उडति अबीर पराग गुलाल ही गगनन दिस, दीन भयौ अधिकारी ॥ २ ॥ मधूर कोकिल कूंजित गुंजित मनौं देति परस्पर गारी ॥ नख सिख अंग बनी सब गोपी गावति, देखति चढीं अटारी ॥ ३ ॥ ताल रबाब झांझ ढफ बाजति मुदित सबे ब्रिंदाबन नारी ॥ यह सुख देखति नैंन सिरानैं व्यास ही रोम रोम सुखकारी ॥ ४ ॥ १४ ॥卐॥ खेलि खेलि हो लडैंती श्रीराधे

तोही कौं फब्यौ हैं बसंत ॥ सुनि भामिनि दामिनि सी हो तुम पायौ स्याम घन कँत ॥१॥ जमुना के तट श्री ब्रिंदाबन परम अनुपम ठाऊँ ॥ कुंजन कुंजन केलि करौ मिलि सुबस बसौं बलि जाऊं ॥२॥ मदन गुपाललाल रसिया कौं रस तेंई लै जान्यौं ॥ अपनौ मन अरु वा मोहन कौ एकमेक करि सान्यौं ॥३॥ उडति गुलाल धूंधरि माधि राजति राधा अंग लपटानी ॥ कहि 'भगवान' हित रामराइ प्रभु यह छबि हिये समानी ॥४॥ १५ ॥ १८० ॥ 卐 ॥ खेलति वसंत गिरिधरनलाल ॥ मनमोहन हग बिसाल ॥ध्रु०॥ सँग सोहति सुंदर अनंग ग्वाल ॥ भीने रँग केसरि करति ख्याल ॥ उडति अबीर पचरँग गुलाल ॥ बाजति मृदंग ढफ झांझ ताल ॥१॥ आई बनि बनि मिलि ब्रजकी वाम ॥ श्रीराधा ललितादिक

सु नाम ॥ गावति पंचम बंधी प्रेम दाम ॥ सोभा पावत भयौ नंद धाम ॥ २ ॥ रँग भरति भरावति करति रँग ॥ रँग भरे बसन राजति सु अंग ॥ लुब्धे सुगंध भए मत्त भृंग ॥ म्रदु बोलति डोलति संग ॥ ३ ॥ भरि लियौ अबीर मुठी सु हेत ॥ दौऊ तज्यौ चाहति पुनि राखि लेति ॥ दृग मूंदन चमकनि व्है सुचेत ॥ बाढति छबि सौं गुनी सुख निकेत ॥४॥ लै बरन बरन रँग अमोल ॥ छिरकति हितु व पिय हित कलोल ॥ फबि रही बूंद सोहति दुकूल ॥ मनौं फूलि रहे बहु बरन फूल ॥ ५ ॥ भरे नवल वाम गिरिधर हि धाइ ॥ रहे बिबिधि भेद रँग अंग छाइ ॥ जहँ निरखति सोभा कही न आइ ॥ तहँ स्याम रँग जान्यौं न जाइ ॥ ६ ॥ भई मोहित सुर वनिता विमान ॥ मोहे गंधर्व सुनि मधुर गान ॥ रँग भरौ पिय अति सु जान ॥ यह राखि

हिये 'कृष्ण दास' ध्यान ॥ ७ ॥ १६ ॥ 卐 ॥ खेलैं फागु जमुना तट नंदकुमार ॥ द्रुम मोरे बिपिन अठार भार ॥ ध्रु० ॥ हलधरि गिरिधारि ग्वाल सँग ॥ मिलि भरति परसपर करति रँग ॥ बाजै मृदंग उपंग चँग ॥ राजै सुंदर बिचित्र अँग ॥ १ ॥ ताल मुरज उपंग ढोल ॥ बहु वंदन उडति गुलाल रौल ॥ बास लुब्ध आऐ मधुप टौल ॥ तेऊ अरुन भए अलि वर निचौल ॥ २ ॥ बहुरि मधुप गऐ अपने ठाँइ ॥ भरि तान पर भमरी नहिं पत्याइ ॥ तुम राते भए पति कौन भाय ॥ कोऊ कपट रूप मति वेठौ आय ॥ ३ ॥ खटपद कहै तुम भूली बाल ॥ जहँ धरा गिरि अंबर भयौ गुलाल ॥ तहँ ऋतु बसंत बिहरति गुपाल ॥ 'जाडा कृष्ण' कौ प्रभु मोहनलाल ॥४॥१७॥卐॥ बिरी ॥ गुरुजनमैं ठाडै दौऊ पीतम

सेनन खेलति होरी ॥ नैनन वेनन कह्यौ जू पग्म-पर परम रसिकनी जोरी ॥ १ ॥ पिचकाई द्दग छुटति कटाच्छन ढोरैं अरुन रँग रोरी ॥ छिरकति रस सौं छेल छबीलौ कुंवरि छबीली गोरी ॥ २ ॥ लसति दसन तँबोल रस भीनै हँसि निरखति पिय ओरी ॥ मनौ सुरंग गुलाल उडावति सुंदर नवल किसोरी ॥ ३ ॥ छुटी अलक वदन छबि लागति बरनि सकै कवि को री ॥ मनौं कनक कुपी चोवा की, कुंवरि सीस पै ढोरी ॥ ४ ॥ कठिन उरोज गाढी जू कँचुकी अरु अँचल ओट अगोरी ॥ सँकेत कुँजन जानि रसिक पिय नैन निमेष न मोरी ॥ ५ ॥ ललितादिक सखी पिय प्यारी अरु गिरि-धारीकी चोरी ॥ 'गोकुल बिहारी' कौ मुख निरखति प्रेम समुद्र झकौरी ॥६॥१८॥卐॥ चलि देखनि जैए नंदलाल ॥ ध्रु० ॥ बनि ठनि आई सब

व्रजकी बाल ॥ आज ऋतु बसंत गावहु रसाल ॥ १ ॥ चली राधे कुँवरि सहचरिन संग ॥ लीऐ ढफ आवज किन्नरी मृदंग ॥ बिच महुवरि मधुर बाजै उपंग ॥ लै मिली स्यामा जू कौं राग रँग ॥ २ ॥ रँग रँगी भूमि भवन पच रँग अबीर ॥ आऐ करति कुलाहल जमुना तीर ॥ ठाडै मधू-सूदन रसन गोपी नीर ॥ नव केसरि कैं रँग रँगे है चीर ॥ ३ ॥ जिह कुंज मधुप गुनी बास ॥ बोलै अंब डार कोकिल प्रकास ॥ जहँ स्याम सुंदर करैं बिलास ॥ श्रीजगन्नाथ भजि 'माधौ दास' ॥ ४ ॥ १९ ॥ 卐 ॥ चली है भरन गिरिधरन-लाल कौं बनि बनि अनगन गोपी ॥ उबटी हैं उबटन नवल चपल तन मनौं दामिनी ओपी ॥१॥ पहरै बसन बिबिधि रँग भूषन करन कनक पिचकाई ॥ चंचल चपल बडेरी अखियाँ मनौं

अरग लगाई ॥ २ ॥ छिरकति चली गली गोकुलकी कही न परत छबि भारी ॥ उडि उडि केसरि बूका बंदन अटि गए अटा अटारी ॥ ३ ॥ सखन सहित सजि साँवरे सुंदर सुनति हि सनमुख आए ॥ मनौं अंबुज बनबास बिबस व्हैं अलि लंपट उठि धाए ॥४॥ हरि कर पिचकाई निरखि तिय कैं नैंना छबिसौं हि ठहिराई ॥ खँजनसें मनौं उडि नव चले हैं ढरकि मीन हैं जाई ॥५॥ पहिलैं कान्ह कुँवर पिचकाई भरि भरि तियनकौं मेली ॥ मनौं सोम सुधा कर सींचति नवल प्रेम की बेली ॥ ६ ॥ पिय कैं अँग तियन कै लोचन लपटैं छबिकी ओभा ॥ मनौं हरि कमलन कर पूजै बनी हैं अनूपम सोभा ॥ ७ ॥ दुरि मुरि भरन बचावनि छबि सौं आवनि उलटनि सोहै ॥ घुमरयौ अबीर गुलाल गगन मैं जो देखै सौ मोहै ॥ ८ ॥ बिच

बिच छुटति कटाच्छ कुटिल सर उचटि हूल कौं लागी ॥ मुरझि परयों लखि मैन महा भट रति भूज भरि लै भागी ॥ ९ ॥ कहँलौं कहौं कहति नहिं आवै छबि बाढी तिहिं काला ॥ 'नंददास' कैं प्रभु चिर जीऔ ब्रज बाला नंद के लाला ॥ १० ॥ २० ॥ १८५ ॥ 卐 ॥ जुवतिन सँग खेलति फागु हरि ॥ बालक बृंद करति कुलाहल सुनति न कान परी ॥ १ ॥ बाजति ताल मृदंग बाँसुरी किन्नर सुर कोमल री ॥ तिनहूं मिलै रसिक नंद-नंदन मुरली अधर धरी ॥ २ ॥ कुँमकुम वारि अरगजा बिबिधि सुगंध मिलाई करी ॥ पिचका-ईन परसपर छिरकति अति आमोद भरी ॥ ३ ॥ टूटत हार चीर फाटति गिरि जहँ तहँ धरन धरी ॥ काहू नहिं संभार क्रीडा रस सब तन सुधि बिसरी ॥ ४ ॥ अति आनंद मगन नहि जानति बीतति

जाम घरी॥ 'कुंभन दास' प्रभु गोवरधनधरि मरव-सव दै निवरी ॥५॥२१॥卐॥ मान॥ तेरी नवल तरु-नता नव बसंत॥ नव नव बिलास उपजति अनँत ॥ध्रु०॥नव अरुन अधर पल्लव रसाल॥ फूलै विमल कमल लोचन बिसाल॥ चलि भृकुटी भृंग भृंग-नकी पांति॥ मृदु हँसन लसन्न कुसमनकी भांति ॥ १ ॥ भई प्रगट अलप रोमावलि मोर॥ स्वास सौरभ मलय पवन झकोर॥ चल फल उरोज सुंदर सुठान॥ बोलै मधुर मधुर कोकिला गान ॥ २ ॥ देखति मोहै ब्रजकुंवर राइ॥ बाढ्यौ मन-मथ मन चोगुनो चाइ॥ तोहि मिलि बिलस्यौं चाहत हैं स्याम॥ जाहि देखति लज्जित कोटि काम॥ ३ ॥ तब चली चरन मंथर बिहार॥ बाजै रुनुनु झुनुनु नूपुर झंकार॥ सुनि पुलकित गोकुलपति कुमार॥ मिलि भयौ 'गदा धर' सुख

अपार ॥ ४ ॥ २२ ॥ 卐 ॥ देखति बन ब्रजनाथ आज अति उपजत है अनुराग ॥ मानौं मदन बसंत मिलि दौऊ खेलत डोलत फाग ॥१॥ द्रुम गन मध्य पलास मंजुरी उठत अगिन की नाईं ॥ अपने अपने मेलि मनौं हरि होरी हरखि लगाईं ॥ २ ॥ केकी कीर कपोत औरु खग करति कुला-हल भारी ॥ जन जन खेलति ग्वाल परसपर देति दिवावति गारी ॥ ३ ॥ झिल्ली झांझ निर्झर निसान ढफ भेरि भँमर गुंजार ॥ मानौं मदन मंडली रचि पुर बीथिनि बिपुन बिहार ॥ ४ ॥ नव दल सुवन अनेक बरन बर बिटपन भेख धरें ॥ जनु राजति ऋतुराज सभामैं हसि बहु रंगनि भरें ॥५॥ कुंज कुंज कोकिल कल कूजत बानिक बिमल बढी ॥ जनु कुल वधू निलज्ज भई हैं गावत अटन चढी ॥ ६ ॥ कुसुमित लता जहाँ

देखति अलि तहीं तहीं चलि जात ॥ मनों षिटप सबन अवलोकति परसत गनिका गात ॥७॥ लींने पुहुप पराग पवन खग फिरति चहूं दिस धाए ॥ तिहीं ओरि संजोगिनि बिरहीनि छांडति भरि करि मन भाऐ॥८॥ औरु कहाँलौं कहौं कृपानिधि ब्रिंदा बिपिन समाज ॥ 'सूर दास' प्रभु सब सुख क्रीडति कृष्ण तुह्मारे राज ॥९॥२३॥卐॥

देखि सखी अति आजु बन्यौं ब्रिंदाबन बिपुन समाज ॥ आनंदित ब्रजलोक भोग सुख सदा स्यामके राज ॥ १ ॥ राधारवन बसंत मचायौ पंचम धुनि सुनि कान ॥ धरनि गिरति सुर किन्नर कन्या बिथकित गगन बिमान ॥ २ ॥ कलकल कोकिल कूजत उपर गुंजति मधुकर पुंज ॥ बाजति महुवरि बेनु झांझ ढफ ताल पखावज रुंज ॥ ३ ॥ केसरि भरि भरि ले पिचकाई छिर-

कति स्यामैं धाई॥ डारति कुंवरि बूका चौआ लैं रहसि कँठ लपटाइ ॥४॥ मुकुलित बिबिधि विटप कुल बरखति पावन पवन पराग ॥ तन मन धन नौछावरि कीनो निरखि 'व्यास' बड भाग ॥५॥२४॥卐॥ देखौ प्यारी कुंज बिहारी मूरति मंत बसंत॥ मोरी तरुन तरुनता तनमैं मनसिज रस बरषंत॥१॥ चलि चितयन कुंतल अलि माला मुरली कोकिला नाद ॥ देखति गोपीजन बनराई मदन मुदित उनमाद ॥ २ ॥ अरुन अधर नव पल्लव सोभा विहसनि कुसुम बिकास॥ फूलै बिमल कमलसे लोचन सूचित मन हुलास ॥ ३ ॥ सहज सुवास स्वास मलयानिल लागति परम सुहाए ॥ श्रीराधा माधवि 'गदाधर' परसत सब सुख पाए ॥ ४ ॥ २५ ॥ १९० ॥ 卐 ॥ देखो ब्रिंदाबन श्री कमल नैंन॥आयौ आयौ है मदन गुन गुदर दैंन

॥ ध्रु० ॥ द्रुम नव दल सुवन अनेक रँग ॥ प्रति ललित लता संकुलिते सँग ॥ कर धँरे धनुप कटि कसि निपँग ॥ मनौं बने सुभट सज्जि कवच अँग ॥ १ ॥ कोकिल कुंजर हय हंस मोर ॥ रथ सैल सिला पद्चर चकोर ॥ वर ध्वज पताक तरु तारकेरि ॥ निर्ऊर निसान वाजै वाजैं भँमर भेरि ॥ २ ॥ जँह नेम सुमति अति मलय बात ॥ मनौं तेज वसन वाने उडात ॥ रुचि राजति विपिन बिलोल पाति ॥ धपि धाय धरति छबि सुरंग गात ॥ ३ ॥ "सूरदास" इम वदत बाल ॥ आयौ काम कृपन सिव क्रोध काल ॥ फिरि चितयो चपल लोचन बिसाल ॥ अब अपनौं करि थापिए गुपाल ॥४॥२६॥卐॥निरत देखौ ब्रिंदाबनकौ जस वितान॥ छायौ सब पर बरनत पुरान ॥ ध्रु० ॥ जाकौं बरनि बेद रहै मौन धारि ॥ करैं ध्यान मान अभिमान

टारि ॥ ताकौ गहति सकल मिलि ब्रजकी नारि ॥ मुख मांडि देति होरी की गारि ॥ १ ॥ जाकौं रिझवति है सब नाचि गाइ ॥ करै बेद युक्ति नाना उपाइ ॥ ताके आँजति लोचन दृगन माइ ॥ छाँडे नचाय हाहा खवाइ ॥ २ ॥ जाके भजति नाम तजि काम केत ॥ भवसागर कौं बर जानि सेत ॥ दुख नास करति सुख कौं निकेत ॥ ताकौं हँसि हँसि ग्वालिन गुलचा देति ॥ ३ ॥ जाकै बस करैं सुनि सब प्रमान ॥ डरैं लोकपाल सब देति मान ॥ सो तो राधा बस करे मुरली गान ॥ 'सूर दास' प्रभु कँत कान्ह ॥ ४ ॥ २७ ॥ 卐 ॥ फागु सँग बडभागि ग्वालनि हरि सँग खेलति होरी ॥ कुँमकुम केसरि अगर अरगजा माट भरैं रँग गेरी ॥ १ ॥ आगे कृष्ण पाछैं व्हैं भाँमनि कर पिचकाई लीनै ॥ त्रिंदाबनमैं मोहन पकरें मन

भायौ सौं कीनैं ॥ २ ॥ अरस परसपर सब मिल खेलति स्याम अकेलैं आए ॥ अंक भरे आलिंगन चुंबन नाना भांति बनाऐ ॥ ३ ॥ पकरि ग्वाल परसपर दुहूं दिसि सूर सुता तट भेटे ॥ अबीर गुलाल अरगजा लेके स्यामा स्याम लपेटे ॥ ४ ॥ जाने को अंग लगे मोहन भेद न पावै कोहे ॥ जुगल जोरि खेलौं गोकुल मैं नित ब्रिंदावन मोहे ॥ ५ ॥ २८ ॥ 卐 ॥ फूल्यौं बन ऋतु राज आजु चलि देखिए ब्रजराज ॥ ध्रु० ॥ निरखति सोभा कही न आवै मनौं उनयौं अनुराग ॥ उत राधिका सखी सब सँग लै खेलनि निकसी फाग ॥ १ ॥ बहु सुगंध बहु अबीर कुँमकुमा लिए है सखन समाज ॥ झांझ मृदंग झालरि ढफ बीना किन्नरि महुवरि साज ॥ २ ॥ जुरे टोल जहँ दौऊ जाय कैं भयौ परम हुलास ॥ खेलति प्यारी परम रस उप-

जति बहु विधि करति बिलास ॥३॥ सिव विरंचि नारद सब गावैं लीला अमृत सार ॥ श्रीविट्ठलनाथ प्रताप सिंधु कौ किन हू न पायौ पार ॥४॥२९॥卐॥

बनसपति फूली बसंत मास ॥ रसिक जनन मन भयौ हुलास ॥ध्रु०॥ श्रीगोकुल फूल्यौ अति रसाल ॥ बाजे चँग मृदंग ताल ॥ सोहै सुंदर तिलक बनायौ भाल ॥ गोपी छिरकति केसरि भरि गुलाल ॥ १ ॥ व्रज जन फूलै अंग अंग ॥ फागु खेलति हलधर कृष्ण सँग ॥ फूलै गोपी ग्वाल मिल जुवति जुथ ॥ मानौं प्रगट भयौ है कामदुत ॥ २ ॥ व्रिंदावन फूल्यौं कुंज कुंज ॥ जमुना जल फूलै करति गुंज ॥ फूलै कमल कली लीऐ भँवर वास ॥ फूलै खग बोलति आस पास ॥ ३ ॥ गोबरधन फूलै ठौर ठौर ॥ फूलै पाँडर केसू अंब मौर ॥ ऐसी सोभा विलसै बारै मास ॥ फूलै जन गावै 'माधौ दास'

॥४॥३०॥१९५ ॥卐॥ निरत ॥ ब्रिंदाबन क्रीडति नँद नंदन सँग ब्रषभान दुलारी ॥ प्रफुल्लित कुसम कुंज द्रुम वेली कोकिल कूंजति मधुप गुँजारी ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा मृगमद केसरि सुगँध सँवारी ॥ अति आनंद परसपर छिरकति हाथन लै कनक पिचकारी ॥ २ ॥ बाजति ताल मृदंग झांऊ ढफ बीन रबाब मुरली धुनि प्यारी ॥ अबीर गुलाल उडावति गावति नाँचति हँसति दै दै कर तारी ॥ ३ ॥ चिरजीयौं सकल सुखदाइक लाल गोबरधनधारी ॥ श्रीवल्लभ पदरज प्रताप तैं 'हरि दास' बलिहारी ॥ ४ ॥३१॥ 卐 ॥ बिराजति स्याम सिरोमनि प्यारो ॥ प्रभु तिहूं लोक उजियारौ ॥ ध्रु० ॥ सरस बसंत सजै बन सोभा श्रीव्रजराज बिराजैं ॥ सुर नर मुनि सब कौतिक भूलै देखि मदन कुल लाजैं ॥ १ ॥ रँग सुरँग

कुसुम नाना बिधि सोभा कहति न आवैं ॥ नवल किसोर अरु नवल किसोरी राग रागिनि गावैं ॥२॥ चोवा चँदन अगर कुँमकुमा उडति गुलाल अबीर ॥ छिरकति केसरि रंग परसपर कालिंदी कैं तीर ॥ ३ ॥ ताल मृदंग उपंग मुरज ढफ ढोल भेरि सहनाई ॥ अदभुत चरित रच्यौ ब्रज भूपन सोभा बरनी न जाई ॥४॥ दुरि मुरि ब्रज जुवती सब निरखति निरखि हरखि सचु पावैं ॥ तृन तोरति बलि जाई वदन पर तनकौ ताप नसावैं ॥ ५ ॥ देति असिस चली सब ग्रह ग्रह चित आनंद बढावै ॥ या ब्रजकुल प्रभु हरिकी लीला 'जन गोविंद' बलि जावै ॥ ६ ॥ ३२ ॥ 卐 ॥ पिय प्यारी खेलैं जमुना तीर ॥ भरि केसरि कुँम-कुम नव अबीर ॥ध्रु०॥ घसि मृगमद चंदन अरु गुलाल ॥ रंग भीनें अरगजा पास पाल ॥ जहाँ

कुल कल केकी नव मराल ॥ बन बिहरति दोऊ रसिक लाल ॥ १ ॥ बृंदादिक मोंहन लई जोरि ॥ बाजे ताल मृदंग रवाब घोर ॥ हँसि कैं गेंदुक दई चलाइ ॥ मुख पट दै राधे गई बचाइ ॥२॥ ललिता पट मोहन गह्यौं धाइ ॥ पीतांबर मुरली लई छिनाइ ॥ हौं तो सपत करौं छांडौ न तोइ ॥ स्यांमा जू आज्ञा दई मोय ॥३॥ निज सहचरी आई बसीठ ॥ सुनिरी ललिता तुम सुनी ढीठ ॥ हठ छांडि जानि देऊ तुम नव किसोर ॥ सुनि रीझि "सूर" तृन दीयौ तोर ॥ ४ ॥ ३३ ॥ 卐 ॥

राजा अनंग मंत्री गुपाल ॥ किऔ मुजरा करि छाइ भाल ॥ ध्रु० ॥ प्रथम पढाई नीति जाई ॥ पुनि सिंघासन बैठे आई ॥ कर जोरे रहै सीस नाई ॥ बिनति करि मांगत राजा राइ ॥ १ ॥ फूलै चहूं दिस तरवर अनैक ॥ बोलति कपोत खग हँस

भेक ॥ अति आमोद भरे छांडे न टेक ॥ तहँ लैति रस हि अलि करि विवेक ॥ २ ॥ तब कियौ तिलक रतिराज आनि ॥ तव लावति भेट जिय डर हि मानि ॥ मनौ हरित बिछौना न रहयौ ठांनि ॥ तरवर दलांकित ताल जानि ॥३॥ नाइक मन भायौ काम राज ॥ छांडी सब तन तैं दुहूं लाज ॥ अपनें अपनें मिलै समाज ॥ डोलति रस सागर चढि जिहाज ॥ ४ ॥ अति चतुर राज मंत्री है देखि ॥ तव दिऔ राज अपनौं विसेख ॥ तव 'गुपाल दास' अपनौ जिय लेखि ॥ छांडौ कवहू जिन पल निमेख ॥ ६ ॥ ३४ ॥ 卐 ॥ भोग समय मुकुट के पद ॥ हरि जू की आवनकी बलिहारी ॥ वासर गति देखति हैं ठाडी प्रेम मुदित व्रज नारी ॥ १ ॥ ऋतु बसंत कुसुमित बन राजति मधुप वृंद जसु गावैं ॥ जे मुनि आइ

रहे ब्रिंदाबन स्यांम मनोहर भावैं ॥ २ ॥ नीको भेष बन्यौं है मोहन गुंजा मनि उर हार ॥ मोर पच्छ सिर मुकुट बिराजति नँद कुमार उदार ॥३॥ घोष प्रवेस कियौ हैं सँग मिलि गौरज मंडित देह ॥ 'परमानँद' स्वामी हित कारन जसुमति नँद सनेह ॥४॥३५॥卐॥ मान आडचोताल ॥ चलि बन निरखि राज समाज ऋतु कौं, सकल तरु मोरे ॥ यह बसंत हि जानि रति कैं कंत दल जोरे ॥ १ ॥ विरहनी मति विकल करिवे मृगगन दौरे ॥ कोकिला कल कंठरव मिलि, काम सर छोरै ॥ २ ॥ तरनि तनया तीर मलयज पवन झक झोरैं ॥ गहरू तजि ब्रज भामिनि मिलि नँद किसोरैं ॥३॥१॥卐॥ पीरे बस्त्र ॥ चलि बन बहति मंद सुगंध सीतल, मलय समीरैं ॥ तुव पंथ बेठि निहारति सखी हरि, सूरजा तीरैं ॥ १ ॥ चहूं दिस फूलै

लता द्रुम हरखित सरीरै ॥ तुव बरन तन स्याम सुंदर धरति पट पीरै ॥२॥ विविधि सुर अलि पुंज गुंजति मत्त पिक कीरै ॥ तुव मिलन हित नंद नंदन हैं अति अधीरै ॥ ३ ॥ 'दास कुंभन' प्रभु करति बन बहु जतन सीरै ॥ तुव विरह व्याकुल गोवरधन उद्धरन धीरै ॥ ४ ॥ २ ॥ 卐 ॥ प्यारी नवल नव बन केलि ॥ नवल विटप तमाल अरुजी मालती नव बेलि ॥ १ ॥ नव बसंत, हँसति, द्रुम गन जरा जारे पेलि ॥ नवल मिथुन विहँग कूजति मची ठेला ठेलि ॥ २ ॥ तरनि तनया तट मनोहर मलय पवन्न सहेलि ॥ बकुल कुल मकरँद रहै अलि गन झेलि ॥३॥ यह समै मिलि लाल गिरिधर मान दुख अब हेलि ॥ 'कृष्ण दास' निनाथ नवरँग, तूं कुँवारि नव वेलि ॥४॥३॥卐॥ रतिपति दे दुख कारि रतिपति सौं ॥ तूं तौ मेरी

प्यारी और प्यारे हु की प्यारी उठि चलि गज गति सौं ॥ १ ॥ दुती कैं बचन सुनि कैं, मुसिक्यानि, भूषन बसन सोंधो लियौ बहु भांतिसौं ॥ 'कल्यान' के प्रभु गिरिधर नागर धाइ लई उर अतिसौं ॥२॥४॥卐॥ राधे देखि बनकैं चैन ॥ भृंग कोकिल सब्द सुनि सुनि प्रकट प्रमुदित मैन ॥१॥ जहँ बहति मंद सुगंध सीतल भाँमिनी सुख सैन ॥ कौन पुन्य अगाध कौं फल तूं जो बिलसति ऐंन ॥ २ ॥ लाल गिरिधर मिल्यौ चाहति, मोहन मधुर बैन ॥ 'दास परमानँद' प्रभु हरि चारु पंकज नैन ॥ ३ ॥ ५ ॥ २०५ ॥ 卐 ॥ मान ताल तिताल ॥ फिरि पछिताइगी हो राधा ॥ कित तू कित हरि कित यह औसर न करत प्रेमरस बाधा ॥१॥ बहोरि गुपाल भेख कब धरि हैं कब इन कूंजन बसि है ॥ यह जडता तेरे जिय उपजी

चतुर नारि सब हँसि है ॥ २ ॥ रसिक गुपाल सुनति सुख उपजै आगम निगम पुकारैं ॥ 'परमानँद' स्वामी पै आवति कौ यह नीति विचारै ॥३॥१॥卐॥ चोताल ॥ ऋतु बसंत प्रफुलित बन बकुल मालती कुंद, जाति नवकरन कारन केतुकी कुरबक गुलाल ॥ चलि राधे चटमट करि तजि हठ सठ जिय कौं, हौं पठई लेन तोहि आतुर है अति नँदलाल ॥ १ ॥ तेसोई तरनि तनया तीर तेसोई बहति सुख समीर तेसोई चहूं दिस तैं उडति हैं सोंधौं गुलाल ॥ यह औसर कँठ लाइ रिझये 'रघुबीर' राइ तो तू एसी लागति है कनकलता कैं ढिग तरु तमाल ॥ २ ॥ १ ॥ 卐 ॥ कहा आई री तरकि अब ही जू खेलत ही प्रीतम सँग एक हाथ अबीर दूजै फैंटा कर ॥ जब उन भुजन जोरि मुसिकाय वदन मोरयौं ते जान्यौं

औरन तन चितए ऐसो यह होय जिन परइ इन नैनन मैं यही डर ॥ १ ॥ जब ही तू उठि चली तबही लालन उझकि रहै औरन सो बूझन लागे बेऊ झुकि गई कौन बात परि ॥ उठि चलि हिलि मिलि तूव रंग-राख और सब लागति चुनी समान तूव माधि नाइक सँग सोहति लाल गुपाल गिरिधारि ॥२॥२॥卐॥ मान तजौ भजौ कंत ऋतु बसंत आयौ ॥ वन सोभा निरखि निरखि पाथिकन सुख पायौ ॥१॥ फूल बनराई जाइ मधुकर लपटायौ ॥ अँब मोर ठोर ठोर ब्रिंदाबन छायौं ॥ २ ॥ अति सुगंध बहति वायु बस पराग उडायौ ॥ उनमद झंकार करति विरही जन डरायौ ॥ ३ ॥ तिहारे हित कारन मैं यह सब्द सुनायौ ॥ 'रसिक पीतम जाइ मिलौ जुवती न मन भायौ ॥४॥३॥卐॥ लाल ललित ललितादिक सँग लिए बिहरत री बर बसंत ऋतु कला सुजान ॥ फूलन की कर गेंदुक लिए

पटकति पट उरज छिए हँसति लसति हिलि मिलि सब सकल गुन निधान ॥ १ ॥ खेलति अति रस जो रह्यौ रसना नहीं जात कह्यौ निरखि परखि थकित भए सघन गगन जान ॥ 'छीत स्वामी' गिरिवरधर श्री विठ्ठल पद पद्मरेनु वर प्रताप महिमा तैं कियौ कीरति गान ॥२॥४॥२१०॥卐॥ धमार ॥ ऋतु पलटी री मोपै रह्यौं न जाइ ॥ मधुकर ! माधों सौं कहियो जाइ ॥ ध्रु० ॥ बहू बास सुवास फूली है बेलि ॥ अरु बने कोकिला करति केलि ॥ मधुप ताप तन सह्यौं न जाइ ॥ पिय प्रान गऐं कहा करि हौं आइ ॥ १ ॥ पिय प्रान रहति हैं अवध आस ॥ पिय तुम बिनु गोपी रही उदास ॥ 'सूर दास' इह बदति बाल ॥ पिय तुम बिनु मथुरां कोन हाल ॥ २ ॥ १ ॥卐॥ ऋतु बसंत के आगम

आली प्रचुर मदन कौं जोर ॥ कैसैं धरैं कुल वधू धीरज खेलति नँदकिशोर ॥ १ ॥ तेसी ए गिरि गोवरधन उपर नूत मंजुरी मोरी ॥ सुनि सुनि चली लाल गिरिधर पै बनि बनि नवल किसोरी ॥ २ ॥ जाइ मिली अनुरागु भरी रस फाग स्याम सौं खेली ॥ 'ब्रजपति' स्याम तमाल हि लपटी मानौं कंचन बेली ॥ ३ ॥ २ ॥ 卐 ॥ ऐसो पत्र लिखि पठयौ नृप बसंत ॥ तुम तजो मान मानिनी तुरंत ॥ ध्रु० ॥ कागद नव दल अँब पाँति ॥ द्वात कमल मसि भँवर गाति ॥ लेखन काम के बान चाँप ॥ लिखि अनँग सासि दई छाप ॥ मलयानिल पठयौ करि बिचार ॥ बाँचे सुक, पिक, तुम सुनौं नारि ॥ 'सूर दास' यौं बदति बानि ॥ तू हरि भजि गोपी तजि सयान ॥ २ ॥ ३ ॥ 卐 ॥ चलि राधे तोहि स्याम बुलावैं ॥ वह सुनि देखि बेन मधुरे

सुर तेरो नाम ले लै गावैं ॥१॥ देखौ ब्रिंदाबनकी सोभा ठौर ठौर द्रुम फूलै ॥ कोकिल नाद सुनति मन आनँद मिथुन बिहँगम फुलै ॥ २ ॥ उनमद जोबन मदन कुलाहल यह औसर है नीकौ ॥ 'परमानँद' प्रभु प्रथम समागम मिल्यौ भाँवतो जीकौ ॥ ३ ॥ ४ ॥ 卐 ॥ देखि वसंत समैं ब्रज सुंदरी तजि अभिमान चली ब्रिंदाबन ॥ सुंदर-ताकी रासि किसोरी नव सत साजि सिंगार सुभग तन ॥ १ ॥ गई तिहि ठौर देखि ऊंचै द्रुम लता प्रकासित गुँजत अलि गन ॥ 'कुंभन दास' लाल गिरिधरि कौं मिली है कुँवरि राधा हुलसत मन ॥ २ ॥ ५ ॥ २१५ ॥ 卐 ॥ नव बसंत आगम नीको लागति नवल फूल पल्लव नए ॥ नाना बरन सकल ब्रिंदाबन जहँ तहँ द्रुम प्रफुलित भए ॥ १ ॥ प्रगट्यौ रतिपति बसंत सुखद ऋतु हेम काल

कलह जू गए॥ गुंजत मधुप कीर पिक कूजति ठौर ठौर आनंद ठए॥२॥ जमुना तट रमनीक परम रुचि कुंज बितान ललित छए॥ तहँ साजि नटवर नँद नँदन बैठि रहे नेरें जू लए ॥ ३॥ जानि सु समय 'चतुरभुज' प्रभु पिय आतुर सँदेस तोकौ जु दए ॥ बेगि चलि हिल मिलि गिरिधरि पिय सँग सब सुख करि बिलसौ जू नए ॥४॥६॥卐॥

नवल बसंत कुसुमित ब्रिंदाबन अधिक मिठानौं कालिंदी जल॥ कलकल कोकिल कीर सनादित गुंजति मधुप मिथुन तोलति बल॥ १ ॥ रतिपति उदित मुदित मन भाँमिनी मानिनी तज, छीजति तिल तिल पल ॥ वर निकुंज खेलति नंद नंदन बोलति तोहि छेल राधा चलि॥ २॥ मोहनलाल गोवरधनधारी रसिक सिरोमनि रहासे हिल मिल॥ 'कृष्ण दास' प्रभु सुरति वारि निधि, कँठ बाहु

धरि छोडि बिरहानल ॥३॥७॥卐॥ प्यारी देखि बनकी बात ॥ नव वसंत अनंत मुकुलित कुसुम और द्रुम पाँति ॥ १ ॥ बेनु धुनि नँदलाल बोली तुव कित अलसात ॥ करति कित हि विलंब भामिनी वृथा औसर जाति ॥ २ ॥ लाल मरकत मनि छबीलौ, तू जो कँचन गात ॥ बनी 'हित हरिवंस' जोरी उभै कुल कल गाति ॥३॥८॥卐॥ प्यारी राधा कुंज कुसुम संकेलैं ॥ गुही कुसुम मनोहर माला पीतम कै उर मेल॥१॥ पियके बैंन, नैन अनियारें मैन हि झरी झेले ॥ गोरज स्थल स्यांम उर स्थल मनौं जुगल गढ घेरैं ॥ २ ॥ नंद नंदन सौं अति रस बाढयौ मदन मोहन सौं खेलै ॥ कहे 'कल्यान' गिरिधर की प्यारी रस हि मैं रस मेलैं ॥ ३ ॥ ९ ॥ 卐 ॥ फूलि झूमि आई बसंत ऋतु ॥ जमुना तट नव कान्हर बिहरति नँद कुमार

घोख जुवतिन बितु ॥ १ ॥ गिरिधरि नागर तोहि बुलावति वऊ बिधान सखी कहा कहूं हितु ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु कौतिक सागर तुम उपरि चलि घरैं चपल चितु ॥ २ ॥ १० ॥ २२० ॥ 卐 ॥ बेगि चलो बन कुंवरि सयानी ॥ समय बसंत, बिपिन मधि हय गज मदन सुभट नृप फोज पलानी ॥ १ ॥ चहूं दिस चाँदनी चमू चय कुसुम धूरि धूंधरी उडानी ॥ सोरह कला छिपांकर की छबि सोहति छत्र सीस कर तानी ॥ २ ॥ बोले हंस चपल बंदी जन मनौं प्रसंसित पिक बर बानी ॥ धीर समीर रटत बन अलि गन मनौं काम कर मुरली सु ठानी ॥३॥ कुसम सरासन बनि हि बिराजति मनौं मानगढ आन आन भानी ॥ 'सूर दास' प्रभु की वेई गति करौ सहाइ राधिका रानी ॥ ४ ॥ ११ ॥ 卐 ॥ भाँमिनी चंपेकी कली ॥ वदन पराग मधुर रस

लंपट नव रँग लाल अली ॥ १ ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा करि जू सिंगार चली ॥ खेलति सरस बसंत परसपर रविकी कांति मली ॥ २ ॥ ताल मृदंग झांझ ढफ बीना बीच बीच मुरली ॥ 'कृष्ण दास' प्रभु नव रँग गिरिधर हिलि मिलि रँग रली ॥३॥१२॥卐॥ मानिनी मान छुडावन कारन मदन सहाइ बसंत लै आयों ॥ चतुरंगनि सैना सजि सुलभ पराग अटपटों छायौं ॥ १ ॥ नील कमल दल सहस्त्र मानौं गज कदली कुसुम रथ बेगि बनायौ ॥ चंपक जुही गुलाल और कुंज बहु रँग तुरी सेन सजि धायौं ॥२॥ कुँद, कनेर, मालती जाती पाइक दल आगें जू सुहायौं ॥ नाग केत धुजा, अरुन चंबर इव सेत छत्र मोरि कुसुम धरायौं ॥ ३ ॥ अँकुस किंसुक सीखंड केतुकी कुरबक निसान बजायों ॥ त्रिगुन समीर

सुजान छूट घर जस बंदी अलि कुल मिलि गायौं ॥ ४ ॥ कटक सँवारि कामिनी अँग अँग मोहन सौं सर चाँप चढायौं ॥ 'कृष्ण दास' गिरिधरि सौं मिलि रति करि रति पति हार मनायौ ॥ ५ ॥ १३ ॥ 卐 ॥ लाल करति मनुहार री प्यारी मान मनायौ मेरो ॥ मदन मोहन पिय कुंजभवनमैं नाम रटति हैं तेरौं ॥ १ ॥ नव नागर गुनको जू आगर ऋतुराज आयौ है नेरौ ॥ रसिक पीतम सौं हिलि मिलि भाँमिनि जैसैं चित्र चितैरो ॥२॥१४॥卐॥ पौढायवे के ॥ खेलति खेलति पोढी स्यामा नवल लाल गिरिधर पिय सँग ॥ चोवा चंदन अगर कुँमकुमा ऊारति फिरति सकल अँग अँग ॥१॥ बाजति ताल मृदंग अघौंटी बीना मुरली तान तरँग ॥ 'कुंभन दास' प्रभु यह बिधि क्रीडति जमुना पुलिन लजावति अनँग ॥२॥१॥॥२२५卐॥

खेलि फागु अनुराग भरे दौऊ चले धाम पौढन पिय प्यारी ॥ नवल लाल गिरिधरन नव बाला नवल सेज सुखकारी ॥ १ ॥ नवल बसंत नवल व्रिंदाबन नव चातक पिक भँवर गुंजा री ॥ नव नव केलि करति 'व्रजपति' सँग नवल भानु सु कुमारी ॥ २ ॥ २ ॥ २२६ ॥ 卐 ॥ खेलि फागु मुसिकात चले दौऊ पौढे सुखद सेज मिलि दंपति ॥ हँसि हँसि बात करति सुनि सजनी निरखति कृपन मिली मनौं संपति ॥ १ ॥ करति सिंगार परसपर हुलसति सोभा देखि मदन तन कांपति ॥ 'व्रज-पति' पिय प्यारी मिलि बिलसति सखी ललिता-दिक चरनन चाँपति ॥ २ ॥ ३ ॥ २२७ ॥ 卐 ॥ खेलि बसंत जाम चारयौ निसि हँसति चले पौढन पिय प्यारी ॥ नवल कुंज नव धाम मनो-हर नवल बाल नव केलि बिहारी ॥ १ ॥ नवल

सहचरी गान करति नव नवल ताल बीना कर-
धारी ॥ पौढे नवल सेज नव 'व्रजपति' चाँपति
चरन नव, भानु कुमारी ॥ २ ॥ ४ ॥ २२८ ॥卐॥
खेलि बसंत पिय सँग पौढी आलस युत रँग
भींनी ॥ नवल लाडिली प्रान पिय दोऊ नवल
अंस भुज दींनीं ॥ १ ॥ नौतम सेज रची सखियन
मिलि, अति सुगंध सरसींनीं ॥ नवल बीन कर
लीयैं माधुरी निरखति नेह नवींनीं ।२।५।२२९।卐
प्यारी पिय खेलति बर बसंत ॥ उपजति दुहुँ
दिस सुख अनंत ॥ ध्रु० ॥ अदभुत सोभा गौर
स्याम ॥ लाल पिया उर ललित दाम ॥ उमँगि
उमँगि अँग भरति वाम ॥ सहचरी सँग कला
काम ॥ १ ॥ सेज सुहाइ अमल खेत ॥ चलति
कटाच्छ पिचकि भरि हेत ॥ सनमुख भरि छवि
छींट लेति ॥ रोम रोम आनँद देति ॥ २ ॥ नख

प्रहार छबि कनि गुलाल ॥ राजति बिच उर टुटी माल ॥ जावक रँग रँग्यौ लाल भाल ॥ पीक पलक रँगी ललित माल ॥ ३ ॥ बाजैं ढफ भूषन सुभाइ ॥ बाढयौ सुख कछु कहयौ न जाइ ॥ सुरति रँग अँग छाइ ॥ 'दामोदर' हित सुरस गाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥ २३० ॥ 卐 ॥ बसंत बनाई चली व्रज सुंदरि रसिक राए गिरिधर पिय पास ॥ अँग अँग बेलि फूलि मृग नैंनी कुच उतंग मनौं कमल विकास ॥ १ ॥ कोक कला बिध कुँज सदन मैं गिरिवरधर सँग किये बिलास ॥ कुसम पर्यंक अँक भरि पौढे निरखति बलि 'परमानँद' दास ॥ २ ॥ ७ ॥ २३१ ॥ 卐 ॥ आश्रयके पद ॥ श्री वल्लभ प्रभु करुना सागर जगत उजागर गाइए ॥ श्री वल्लभ कै चरन कमलकी बलि बलि जाइए ॥ १ ॥ वल्लभी सृष्टि समाज संग मिली जीवनकौं

फल पाइए ॥ श्री वल्लभ गुन गाइए याहि तैं 'रसिक' कहाइए ॥ २ ॥ १ ॥ २३२ ॥ 卐 ॥

असीस ॥ खेलि फागु अनुरागु मुदित जुबती जन देति असीस ॥ रसिकन की रस रासि श्रीवल्लभ जीयौ कौटि बरीष ॥ १ ॥ फिरि आईं खेलन कैं कारन अबला जुरि दस बीस ॥ 'हरिदास' के स्वामी स्यामा खेलौ बसंत जय जय गोकुल कै इस॥२॥१॥२३३॥+९४ अ, १०३ अ=२३५॥卐॥

यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहिनं तु यद्भवेत ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसिद्ध परमेश्वर ॥

अंग सहित अष्टसखा.

(कीर्तनीआ नारानदासजी कौं संग्रह)

१	२	३	४
कृष्ण दास.	**कुंभनदास.**	**गोविंदस्वामी.**	**चतुरभुजदास.**
१ गुपालदास	किसोरीदास	कल्यानके प्रभु	कल्यानके प्रभु
(भाईला कोठारीके जमाई)	प्रभु मुकुंद	काका वल्लभजी	दामोदर हित
२ चतुर बीहारी	माधुरीदास	कृष्णदासी	प्रेम प्रभु
३ जगजीवन	रसखान	श्रीद्वारकेसजी	विचित्र विहारी
४ जनत्रिलोक	लघु गुपाल	व्रजपति	विहारीदास
५ दासमाधो	विष्णुदास	श्रीव्रजाधीसजी	मानदास
६ नागरीदास	हरिदासके (स्वामी स्यामा)	श्री हरिरायजी	व्यासदास (स्वामिनि)
७ रामराय	हित हरिवंस	रसिक की छाप वाले	श्रीभट
८ रूप माधुरी		श्री विठ्ठल गिरिधरनकी छापवाली 'गंगाबाई'	

५	६	७	८
छीतस्वामि.	**नंददासजी.**	**परमानँददास.**	**सूरदास.**
अग्रस्वामि (दास)	कटहरिआ प्रभु	आसकरनजी	अलीखान पठान
केसो किसोर	कहे भगवान हित रामराय प्रभु	गदाधरदास	कृष्णजीवन लछीराम
जन गिरिधर	जन हरिआ	गोपालदास	जगन्नाथ कविराय
भगवानदास	नाजबीबी बादसाहकी-हुरम	पद्मनाभदास	जन भगवानदास
माधुरीदास	धोंधी	मानेकचंद	तानसेनजी
कृपाकेस	रामदासजी	रसिक बीहारी	मुकुंददास
स्यामदास	रघुनाथदास	सगुनदास	मुरारीदास
मुकनराई	हरिदासजी	हरिजीवनदास	हरिनारायन प्रभु